S. No:	Date	Title	Page No.	Teacher's Sign / Remarks
		unit - I		
(1)		आदिकालीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ साहित्य की अंतधाराएँ		
(2)		भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ काव्य की प्रमुख अंतधाराएँ		
		unit - II		
(1)		ढोला मारू रा दूहा - कवि कल्लोल		
(2)		विद्यापति - वंशी माधुरी		
(3)		नरपति नाल्ह - बीसलदेव रासो		
		unit - III		
(1)		कबीरदास - साखी, सबद, रमैनी		
(2)		मलिक मोहम्मद जायसी		
(3)		तुलसीदास - (i) विनय पत्रिका (ii) श्री रामचरितमानस		
		unit - IV		
(1)		सूरदास - (i) भ्रमरगीत सार (ii) उद्धौ- गोपियों के संदेश		
(2)		मीरा - मीरा पदावली		
(3)		रसखान - रसखान रचनावली		

अनुक्रम

भूमिका : हिन्दी साहित्य का इतिहास–आदिकाल और भक्तिकाल

1. ढोला मारू रा दूहा 4
   - ढोला मारू रा दूहा

2. विद्यापति 4
   - वंशी माधुरी

3. नरपति नाल्ह 5
   - बीसलदेव रास

4. कबीरदास 5
   - साखी
   - पद

5. मलिक मुहम्मद 'जायसी' – पद्मावत 6
   - सिंहलद्वीप वर्णन खंड
   - नागमती – वियोग खंड

6. गोस्वामी तुलसीदास 7
   - विनय पत्रिका
   - रामचरितमानस (बालकाण्ड)

7. महाकवि सूरदास 76
   - भ्रमरगीत

8. मीराँबाई 80
   - मीराँ पदावली

9. रसखान 85
   - सुजान-रसखान

शब्दार्थ 88

भूमिका

हिन्दी साहित्य का इतिहास आदिकाल और भक्तिकाल

हिन्दी साहित्य की परम्परा कब से प्रारम्भ हुई, इस सम्बन्ध में सर्वमान्य मत यही है कि जब से अपभ्रंश भाषा साहित्यिक रचनाओं का माध्यम बनी तभी से हिन्दी भाषा शनैः-शनैः साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश करने लगी थी। यह निश्चित है कि जिस काल में अपभ्रंश साहित्यिक भाषा थी, उस काल में हिन्दी जनभांषा थी। इसीलिए हिन्दी साहित्य के इतिहासवेत्ताओं ने अपभ्रंश-साहित्य को हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया है। मिश्रबन्धुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' में अनेक रचनाओं को स्थान दिया है जबकि चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' नाम से अभिहित करते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने वीरगाथाकाल का विवेचन करते समय अपभ्रंश रचनाओं को पूर्वपीठिका के रूप में स्थान दिया है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि हेमचन्द्राचार्य ने दो प्रकार की अपभ्रंश भाषाओं की चर्चा की है—(1) परिनिष्ठित अपभ्रंश जिसका व्याकरण उन्होंने स्वयं लिखा, (2) ग्राम्य अपभ्रंश जिसका स्वरूप व्याकरण के नियमों से मुक्त सतत विकासमान और एक जनभाषा का था। अपभ्रंश के इसी स्वरूप में बौद्धों के पद, दोहा और प्राकृत-पैंगलम थे। पद तथा संदेशरासक आदि रचनाएँ लिखी गयीं। वस्तुतः अपभ्रंश के इसी स्वरूप से जनभाषा हिन्दी का विकास हुआ, जो आगे चलकर साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

हिन्दी साहित्य का आरम्भ—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा बाबू श्यामसुन्दर दास हिन्दी साहित्य का आरम्भ ग्यारहवीं शती से मानते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार हिन्दी का साहित्यिक भाषा में प्रतिष्ठित होना अथवा हिन्दी साहित्य का बनना राजा भोज के समय (संवत् 1050 के लगभग) से प्रारम्भ हुआ जब अपभ्रंश भाषा काव्य के लिए रूढ़ हो चली थी। डॉ. रामकुमार वर्मा तथा राहुल सांकृत्यायन हिन्दी साहित्य का आरम्भ क्रमशः आठवीं शताब्दी तथा सातवीं शताब्दी से मानते हैं। इन लोगों ने अपभ्रंश की रचनाओं में हिन्दी का आरम्भिक रूप स्वीकार किया है। किन्तु बाबू गुलाबराय, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र आदि विद्वान स्वीकार करते हैं कि हिन्दी साहित्य की परम्परा का आरम्भ ग्यारहवीं शताब्दी में ही हुआ, यह जरूर है कि परवर्ती अपभ्रंश रचनाओं में

हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट रूप से मिल जाता है, जिनका काल सातवीं-आठवीं शताब्दी तक जाता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन पर विचार करते समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, "प्रत्येक काल का एक निर्दिष्ट सामान्य लक्षण बताया जा सकता है। किसी एक ढंग की रचना की प्रचुरता से अभिप्राय यह है कि शेष दूसरे ढंग की रचनाओं में से चाहे किसी एक ढंग की रचना को लें, वह परिमाण प्रथम के बराबर न होगी। दूसरी बात है, ग्रन्थों की प्रसिद्धि। किसी काल के भीतर एक ही ढंग के बहुत अधिक ग्रन्थ चले आते हैं, उस ढंग की रचना उस काल के लक्षण के अन्तर्गत मानी जायेगी। .... प्रसिद्धि भी किसी काल की लोक-प्रवृत्ति की प्रतिध्वनि है। इन दोनों बातों की ओर ध्यान रखकर काल विभाजन का नामकरण किया गया है।"

अपनी उपर्युक्त मान्यता के आलोक में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के लगभग 1000 वर्ष के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया है—

1. आदि काल (वीरगाथा काल—सं. 1050 से 1375)
2. पूर्वमध्य काल (भक्ति काल—सं. 1375 से 1700)
3. उत्तरमध्य काल (रीति काल—सं. 1700 से 1900)
4. आधुनिक काल (गद्य काल—सं. 1900 से ....)

आचार्य शुक्ल के परवर्ती साहित्येतिहासकारों ने शुक्लजी द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त मानदण्ड को स्वीकार करते हुए काल-विभाजन किया है। बाबू श्यामसुन्दर दास, राहुल सांकृत्यायन, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार वर्मा, पंडित कृष्णशंकर शुक्ल, आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र आदि ने शुक्लजी द्वारा किये गये काल-विभाजन को स्वीकार किया है। नामकरण तथा काल को लेकर कतिपय मतभेद अवश्य हैं जिनकी चर्चा आगे की जायेगी।

आदिकाल (सं. 1050 से 1375 तक)

इस काल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'वीरगाथा काल' के नाम से पुकारा है। शुक्लजी से पूर्व मिश्रबन्धु भी काल-विभाजन तथा नामकरण का प्रयास कर चुके थे, पर वे निर्णायक रूप से कुछ नहीं कह सके थे। पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बल देकर कहा कि इस काल में कविगण सामन्तों और राजाओं के आश्रय में रहकर उनके यशगान में काव्य-रचना किया करते थे। उस काल में जनरुचियाँ युद्धप्रियता की ओर उन्मुख थीं तथा राजा-सामंत शौर्य प्रदर्शन को जीवन का चरम लक्ष्य मानते थे। उस काल का वातावरण तलवार की धार की छाया में विकसित हो रहा था। स्वाभाविक रूप से उस काल के कवियों

ने भी वीररस में काव्य-रचना को प्रमुखता दी तथा कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं के शौर्य का अतिरंजनापूर्ण वर्णन किया। इस काल के प्रमुख ग्रन्थ—पृथ्वीराज रासो, परमालरासो, खुमानरासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, जयमयंक, जसचन्द्रिका आदि वीरगाथात्मक काव्य हैं। यद्यपि इस काल में धार्मिक रचनाएँ भी लिखी गयीं, पर शुक्लजी इन रचनाओं को विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं मानते तथा उक्त वीरगाथात्मक रचनाओं के प्राधान्य के आधार पर इस काल को 'वीरगाथा काल' के नाम से पुकारते हैं।

किन्तु परवर्ती साहित्येतिहासकारों ने आचार्य शुक्ल द्वारा प्रदत्त इस नाम को अनुपयुक्त ठहराते हुए उनका विरोध किया। डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल को 'चारणकाल' और 'संधिकाल' नाम दिया है। 'संधिकाल' के अन्तर्गत वे उन अपभ्रंश रचनाओं को लेते हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य की पीठिका तैयार की। इन रचनाओं का काल सातवीं शती से प्रारम्भ हो जाता है। जो वीरकाव्य इस काल में लिखे गये, उनके कवि चारण होते थे, अतः इस काल को चारणकाल कहना उपयुक्त होगा। किन्तु डॉ. वर्मा का यह मत मान्य नहीं है। एक काल के दो नाम अव्यावहारिक हैं। साथ ही इस काल के सभी कवि चारण नहीं थे।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन इस काल को 'सिद्ध-सामन्त-युग' के नाम से पुकारना पसन्द करते हैं। उनके मतानुसार इस काल में समाज पर सिद्धों का, तो राजनीति पर सामन्तों का अधिकार था। सिद्धों ने काव्य-रचना की, उधर सामन्तों ने अपने आश्रय में काव्य-रचना को प्रोत्साहन दिया। किन्तु इन दोनों ही नामों का तालमेल उपयुक्त नहीं है। दूसरे ये नाम व्यक्तिबोधक हैं, साहित्यिक प्रवृत्ति या जनरुचि के परिचायक नहीं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी वीरगाथा काल नाम का विरोध किया है तथा उन्होंने इस काल को 'आदिकाल' नाम से अभिहित किया है। उन्होंने यह माना है कि इस काल में ऐसी विकासोन्मुख प्रवृत्तियाँ सक्रिय थीं तथा धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक स्तरों पर भारी परिवर्तन इस काल में हो रहे थे। इस काल में धार्मिक सन्त और सिद्धों ने भी काव्य-रचना की, जिनके काव्य को साम्प्रदायिक या गैररचनात्मक कहकर उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस काल में भक्ति के अतिरिक्त शृंगारपरक तथा नीतिपरक काव्य भी लिखे गये। इस काल में जो विपुल साहित्य रचा गया, उसमें वीरगाथा काव्य तो एक प्रवृत्ति मात्र है। इस काल में अनेक साहित्यिक प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। ऐसे एक नाम के अभाव में, जो इन सारी प्रवृत्तियों का बोध करा सके, इस काल को 'आदिकाल' के नाम से पुकारना ही उपयुक्त होगा।

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने इस काल को अपभ्रंशकाल नाम दिया है, किन्तु यह नाम भी सर्वथा अनुपयुक्त है। डॉ. श्यामसुन्दरदास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा प्रदत्त नाम को स्वीकार करते थे।

किन्तु अधिसंख्य विद्वान् इस काल को आदिकाल के नाम से पुकारना ही ठीक समझते और इस काल के लिए आदिकाल नाम ही प्रचलित हो गया है।

आदिकाल की विभिन्न काव्य-प्रवृत्तियाँ

आदिकाल में हमें विभिन्न काव्य-धाराओं का प्रवाह मिलता है, जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है—

1. नाथ काव्य-धारा—नाथ शब्द का प्रयोग रक्षक या शरणदाता या स्वामी के लिए होता है, किन्तु जब योगपरक पाशुपत शैव मत का विकास नाथ सम्प्रदाय के रूप में हुआ तो नाथ शब्द शिव के अर्थ में प्रचलित हो गया। मत्स्येन्द्र नाथ (मछंदरनाथ) के शिष्य गोरखनाथ इस सम्प्रदाय के सबसे बड़े पुरस्कर्त्ता थे। इस सम्प्रदाय के साधक अपने नाम के आगे 'नाथ' लगाते हैं। गोरखनाथ का मत सारे भारतवर्ष में ही नहीं, नेपाल, अफगानिस्तान में भी फैला। आज भी लोग इस मत को मानते हैं। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही इस मत के अनुयायी हैं।

गोरखनाथ ने इस सम्प्रदाय को व्यवस्थित किया तथा एक ओर हठयोग साधना-पद्धति को अपनाया तो दूसरी ओर सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करते हुए कठोर ब्रह्मचर्य, शुद्ध और पवित्र सामाजिक जीवन तथा परमार्थ पर बल दिया।

गोरखनाथ की छोटी-मोटी 40 रचनाओं का संग्रह 'गोरखबानी' नाम से पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने किया। गोरखबानी के कुछ पदों ने लोकोक्ति का रूप धारण कर लिया है, कुछ ने जोगीड़ा का रूप ले लिया है, तो कुछ लोक में अनुभव सिद्ध ज्ञान के रूप में प्रचलित हो गये हैं। अपनी बानी में गोरखनाथ ने काम-क्रोध के परित्याग, सहज जीवन, दृढ़ ब्रह्मचर्य संयत आचरण और सहजशील का उपदेश दिया है। गोरखनाथ के बाद अजयपाल, गरीब, गोपीचन्द, चर्पटनाथ, भरथरी, मछंदरनाथ आदि नाथों ने काव्य-रचना की। इनके काव्य क विषय योग, ज्ञान, वैराग्य, आत्मज्ञान, शील, संतोष और सहज जीवन है। इनकी भाषा लोक-भाषा है जिस पर अपभ्रंश का स्पष्ट प्रभाव है। साहित्यिक दृष्टि से इस साहित्य का विशे महत्त्व नहीं है, पर भक्तिकाल की सन्त काव्य-धारा पर इस सम्प्रदाय का गहरा प्रभाव पड़ा।

2. सिद्ध काव्य-धारा—हिन्दी साहित्य में सिद्ध शब्द बौद्ध सिद्धाचार्यों के लि प्रयुक्त होने लगा है जो पूर्वी भारत में तान्त्रिक साधनाएँ करते थे और साधना के बल प अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करते थे। ये सिद्ध साधना में निष्णात, अलौकिक सिद्धियों सम्पन्न, चमत्कारपूर्ण तथा अतिप्राकृतिक शक्तियों से युक्त व्यक्ति होते थे। इनकी संख 84 बताई जाती है किन्तु यह संख्या प्रामाणिक नहीं है। सिद्धों का समय 800 ई. से 110 ई. के बीच माना जाता है। कुछ लोग लुईपा को तो कुछ लोग सरहपा को आदि सिद्ध मान हैं।

अपभ्रंश दोहों तथा चर्यापदों के रूप में उपलब्ध साहित्य को सिद्ध-साहित्य कहा जा है। इसमें बौद्ध तान्त्रिक साधना के सिद्धान्तों को मान्यता मिली है। सिद्धों की रचनाएँ काव्य रूपों में उपलब्ध हैं—(1) दोहाकोष, (2) चर्यापद। इनमें सिद्ध सम्प्रदाय के सिद्धा

को ही अभिव्यक्त किया गया है। सरहपा, लुईपा, कान्हपा, तिलोपा आदि सिद्ध काव्य-धारा के कवि थे। सिद्ध साहित्य का साहित्यिक दृष्टि से विशेष महत्त्व नहीं है, पर हिन्दी के भक्तिकालीन काव्य की पीठिका तैयार करने में इस साहित्य ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ लोग सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि मानते हैं।

3. जैन काव्य-धारा—हिन्दी के पूर्वी क्षेत्र में जैन साधुओं ने अपने मत का प्रचार हिन्दी कविता के माध्यम से किया। इन कवियों का काव्य आचार, रास, फागु, चरित आदि शैलियों में मिलता है। आचार शैली में लिखी गई रचनाओं में उपदेशात्मकता अधिक है। रास शैली में जैन कवियों ने जैन तीर्थंकरों के जीवन-चरित तथा वैष्णव अवतारों की कथाएँ लिखी हैं। यह अवश्य है कि इन काव्यों में जैन धर्म के आदर्शों की स्थापना की गयी है।

जैन कवियों ने अपभ्रंश भाषा में चरित काव्यों की रचना की और हिन्दी में प्रबन्ध काव्य परम्परा का सूत्रपात किया। देवसेन रचित 'श्रावकाचार', शालिभद्रसूरि रचित 'भरतेश्वर-बाहुबली रास', आसगु रचित 'चन्दनबाला रास', जिनधर्म सूरी कृत 'स्थूलिभद्र रास', विजयसेन सूरी कृत 'रेवंतगिरि रास', सुमतिगणि रचित 'नेमिनाथरास' आदि जैन काव्य-धारा के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

4. वीर काव्य-धारा—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल को वीरगाथा काल नाम दिया, इसका कारण यह है कि उन्होंने इस काल की अपभ्रंश और देशभाषा काव्य की इन बारह पुस्तकों को साहित्यिक इतिहास में विवेचन योग्य समझा—विजयपालरासो, हम्मीररासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, खुमानरासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, जयचन्द्र प्रकाश, जयमयंकजस चन्द्रिका, परमाल रासो, खुसरो की पहेलियाँ तथा विद्यापति पदावली। इनमें से अधिकांश वीर काव्य हैं। किन्तु वीर काव्य आदिकालीन काव्य की विभिन्न धाराओं में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रतिनिधि काव्य-धारा है। वीर काव्य-धारा की सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) इस काल में वीर काव्यों का प्रणयन दरबारी कवियों द्वारा अपने-अपने आश्रयदाताओं को अतिशयोक्तिपूर्ण कीर्ति-कथन के लिए हुआ। चारण कवियों ने अपने आश्रयदाता की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है तथा उनके लिए उनका आश्रयदाता संस्कृत काव्य-शास्त्र में वर्णित धीरोदात्त, धीरप्रशान्त तथा धीरललित नायकों के गुणों से मण्डित है।

(2) इन कवियों का ध्यान अपने समय की विषम परिस्थितियों तथा भविष्य की सम्भावनाओं की ओर नहीं गया। उनके लिए राष्ट्र का अर्थ आश्रयदाता का राज्य भर था, इसलिए उनके काव्य में वर्णित राष्ट्रीय भावना संकीर्ण है तथा यह संकीर्ण भावना भी प्रतिशोध भावना पर टिकी है।

(3) इन कवियों ने अपने काव्यों में युद्धों का सजीव वर्णन किया है। इनका युद्ध-वर्णन कर्कश कठोर पदावली से युक्त और वीर भावों से ओतप्रोत है। इनकी

वीर वचनावली में शस्त्रों की झन्कार स्पष्ट सुनाई देती है। इस काल के कवि कलम के साथ शस्त्र भी धारण करते थे और अपने आश्रयदाता के साथ स्वयं भी युद्ध में जाते थे। अपनी कविता द्वारा वे वीरों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते थे।

(4) इन काव्यों में वर्णित युद्धों के मूल में कोई-न-कोई नारी होती है। आश्रयदाता किसी दूसरे राजा की सुन्दर कन्या को प्राप्त करने के लिए उस पर आक्रमण करता है। कवि उस कन्या के रूप-सौन्दर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करता है। युद्ध में विजय के बाद राजा उस कन्या को पत्नी रूप में स्वीकार करता है। कवियों ने उनके संयोग का वर्णन भी किया है।

(5) इन काव्यों में ऐतिहासिकता का सर्वथा अभाव है और कल्पना का प्राचुर्य है। इन काव्यों के नायक यद्यपि इतिहास के व्यक्ति हैं, पर कवियों द्वारा उनका वर्णन काल्पनिक अधिक है अतः इन काव्यों की ऐतिहासिक प्रामाणिकता संदिग्ध है। इस काल के सर्वश्रेष्ठ काव्य 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता को लेकर विद्वानों में तीव्र मतभेद हैं।

(6) इन काव्यों में सामन्ती जीवन के वैभव और विलास का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन मिलता है, परिणामस्वरूप जन-जीवन की झलक इन काव्यों में नहीं मिलती।

(7) इन काव्यों का प्रधान रस वीर है किन्तु उसके साथ श्रृंगार रस का भी सुन्दर वर्णन हुआ है। युद्ध-वर्णनों में अद्‌भुत, वीभत्स, भयानक आदि रसों का भी सुन्दर परिपाक मिलता है।

(8) इस धारा के अन्तर्गत आने वाले काव्यों को 'रासो' काव्य कहा जाता है। प्रबन्ध काव्य या चरितकाव्य ही रासो ग्रन्थ कहलाये। यद्यपि इस काल में मुक्तक-काव्य भी रचे गये किन्तु पृथ्वीराज रासो तथा बीसलदेव रासो में प्रबन्ध-कौशल की छटा महत्त्वपूर्ण है।

(9) इन ग्रन्थों में दोहा, तोमर, ताटक, गाहा, पद्धरि, आर्या, रोला, उल्लाला, कुण्डलिया आदि छंदों का कलात्मक प्रयोग मिलता है। छंदों का प्रयोग भावानुकूल है।

(10) वीर काव्यों की भाषा 'डिंगल' है जो वीररस-वर्णन तथा युद्ध-वर्णन के लिए सर्वथा अनुकूल है।

नरपति नाल्ह, चन्दरबरदाई, दलपति विजय, जगनिक आदि इस धारा के प्रमुख कवि हैं।

5. विविध रचनाएँ—इस काल में कुछ ऐसी रचनाएँ भी रची गयीं जो उपर्युक्त काव्य-धाराओं में नहीं आतीं। अब्दुल रहमान का 'संदेश रासक' एक विरह-प्रधान काव्य

है जबकि जैन कवि धनपाल रचित 'भविष्यत् कथा' अपभ्रंश कथा-काव्य है, जिसमें शृंगार, वीर एवं शान्त रसों का मिश्रण मिलता है। 'ढोलमारू रा दूहा' विरह-प्रधान लोककाव्य है तो 'प्राकृत पैंगलम' भी अनेक कवियों की रचनाओं का संकलन है।

विद्यापति आदिकाल के एक श्रेष्ठ कवि हैं जिन्होंने संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली भाषाओं में काव्य-रचना की। वे महान् पंडित थे। वे प्रेम और शृंगार के कवि हैं। 'कीर्तिलता' एक चरितकाव्य है, जिसमें कीर्तिसिंह की वीरता का वर्णन किया गया है। वस्तुतः 'पदावली' विद्यापति की एक श्रेष्ठ रचना है जो मूलतः शृंगार-प्रेम-विरह प्रधान काव्य है। यद्यपि इसमें कतिपय विनय और भक्ति के पद भी मिलते हैं, पर इसका मूल स्वर शृंगार-प्रधान है। संगीत के स्वरों में गूँजती हुई, यह राधा-कृष्ण के प्रेम को समर्पित रचना है। इस रचना का प्रभाव भक्तिकालीन कृष्ण काव्य-धारा के कवियों पर पड़ा। पदावली में कोमलता, सुकुमारता तथा माधुर्य का अद्भुत समन्वय है।

अमीर खुसरो बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। वे अरबी, फारसी, तुर्की तथा संस्कृत के विद्वान् थे। कहते हैं उन्होंने 99 पुस्तकें लिखीं जिनमें उनके कई लाख अशआर हैं। इस समय उनकी 20–22 पुस्तकें ही उपलब्ध हैं। उनकी पहेलियाँ और मुकरियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। खुसरो की सबसे बड़ी देन उस काल में खड़ी बोली में काव्य-रचना करना है। खुसरो की कविता में मनोरंजन और रसिकता का विचित्र समुच्चय मिलता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आदिकालीन साहित्य विभिन्न काव्य-धाराओं का एक विशाल नद है।

भक्तिकाल

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग भी कहा जाता है क्योंकि इस काल में विभिन्न भक्तिधाराओं के कवियों ने जो साहित्य रचा वह गुणात्मक दृष्टि से और परिमाण की दृष्टि से उच्च कोटि का था। यदि सचमुच हिन्दी के स्वरूप को साहित्य के माध्यम से समझा जाए तो भक्तिकालीन साहित्य उसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। किन्तु भक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि का निर्माण दक्षिण से उद्भूत और पूरे भारत में फैले भक्ति आन्दोलन ने किया। यह आन्दोलन भी तत्कालीन परिस्थितियों की देन था इसलिए पहले हम संक्षेप में भक्तिकालीन परिस्थितियों पर विचार करेंगे।

भक्तिकालीन परिस्थितियाँ

राजनैतिक परिस्थितियाँ—भक्तिकालीन कालखण्ड को राजनैतिक दृष्टि से दो भागों में रखा जा सकता है—पहले कालखण्ड में इब्राहीम लोदी के समय बाबर ने हमला किया और 1526 ई. में बाबर ने पानीपत के युद्ध में उसे पराजित कर दिल्ली के तख्त पर मुगलवंश की सत्ता स्थापित की। 1398 ई. में मैसूर के आक्रमण से लेकर बाबर के आक्रमण तक

(1526 ई. तक) का कालखण्ड धर्मान्ध मुस्लिम स्वेच्छाचारी शासकों द्वारा भारतीय जनता पर किये गये अनवरत अत्याचारों से परिपूर्ण है। इसलिए यह राजनैतिक दृष्टि से अत्यधिक अस्थिरता का काल है। इसी दौर में केन्द्रीय सत्ता का ह्रास हुआ और देश छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित होता रहा। इस खण्ड की दो प्रमुख विशेषताएँ रहीं—राजनैतिक अस्थिरता और सत्ता का विघटन और शासकों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार।

भक्तिकाल का दूसरा कालखण्ड मुगल शासकों का है। पानीपत के बाद बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया। अकबर ने उदारता की नीति पर चलकर राजपूत शासकों को अपने साथ मिलाने का प्रयास किया जिसमें अकबर को सफलता भी मिली। अकबर ने देश में अपनी सत्ता का विस्तार किया किन्तु उसने ''सुलहकुल'' की नीति पर चलकर शान्ति व्यवस्था बनाए रखी। कला, साहित्य, संगीत आदि को भी उसने बढ़ावा दिया। अकबर के बाद जहाँगीर और शाहजहाँ ने अकबर की नीतियों पर ही चलने का प्रयास किया अन्तर केवल इतना आया कि अकबर ने मुगल साम्राज्य को जो सम्पन्नता प्रदान की थी उसमें विलासिता और जुड़ गयी। किन्तु औरंगजेब तक आते-आते कट्टरता का प्रभाव फिर विस्तार पाने लगा।

सामाजिक परिस्थितियाँ—इस कालखण्ड में भारतीय समाज राजसत्ता और धर्मसत्ता के अत्याचारों से पीड़ित था। तैमूर के आक्रमण से बाबर के आक्रमण तक भारत की जनता बार-बार लूटी जाती रही। धर्म के नाम पर मुसलमान शासकों ने भारतीय जनता को प्रताड़ित और आतंकित किया। हिन्दू स्त्रियाँ तथा बच्चे गुलाम बनाये जाते थे। इन अत्याचारों के बीच हिन्दू समाज में संकीर्णताएँ बढ़ती गयीं क्योंकि अपनी सुरक्षा के लिए वह जातिवाद जैसी संकीर्ण व्यवस्था और कर्मकाण्ड की व्यवस्थाओं में उलझता चला गया। हिन्दू समाज बराबर धार्मिक और जातिगत संकीर्णताओं में बँटता चला गया। अन्धविश्वास, कर्मकाण्ड, छुआछूत, जादू-टोने आदि का प्रभाव बढ़ता गया।

उधर मुस्लिम समाज की स्थिति भी कोई बहुत अच्छी नहीं थी। धर्मांतरित मुस्लिम समाज और विदेशी मुस्लिम समाज एक नहीं था। शिया-सुन्नी के बीच तब भी मतभेद थे। सैयद, शेख, पठान, तुर्क आदि अपने को श्रेष्ठ मानते थे। मुस्लिम समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत खराब थी। बहुविवाह प्रथा के कारण हरमों में नारियों को पशु की तरह इस्तेमाल किया जाता था। मुस्लिम समाज में अनेक अन्धविश्वास और कुप्रथाएँ प्रचलित थीं। हिन्दू और मुसलमान दोनों का प्रभाव परस्पर पड़ने लगा था पर दोनों के बीच कोई आत्मीय सम्बन्ध विकसित नहीं हो पाये थे।

धार्मिक परिस्थितियाँ—उस कालखण्ड में भारतीय समाज हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुस्लिम आदि अनेक सम्प्रदायों में विभाजित था। हिन्दुओं में भी शैव, शाक्त, स्मार्त, निर्गुण, सगुण जैसे मत, बौद्धों में मंत्रयान, तंत्रयान, सहजयान, ब्रजयान जैसे मत, नाथ सम्प्रदाय के 12 मत, मुस्लिम सम्प्रदाय में भी जरा, बूशरा, सूफी, चिश्ती, कादरी आदि मत विद्यमान थे।

हर सम्प्रदाय में उपसम्प्रदायों का बोलबाला था सभी सम्प्रदाय अपने मूल स्वरूप से भ्रष्ट हो चुके थे। गुह्य साधनाओं, तांत्रिक क्रियाओं, अलौकिक क्रियाओं से विभिन्न मतों के लोग सामान्य जनता को भ्रमित कर रहे थे। सभी मतों में कट्टरता का बोलबाला था। उपासना की कर्मकाण्डीय विधियाँ प्रचलित हो रही थीं। पशुबलि मद्यपान, माँस-भक्षण, कामुकता का चारों ओर साम्राज्य था। बाह्य आडम्बरों के बल पर विभिन्न मतों के ठेकेदार जनता को गुमराह कर रहे थे। कर्मकाण्ड धर्म का पर्याय बन गया था। धार्मिक दृष्टि से इस अंधकार में दक्षिण भारत से आलवार और नयनार संतों ने निष्काम भक्तिभावना का आन्दोलन आरम्भ किया जो बढ़ते-बढ़ते उत्तर भारत में भी आया जिसका प्रभाव समूचे भक्ति साहित्य पर पड़ा। वस्तुतः भक्तिकालीन साहित्य की धुरी यह आन्दोलन है। यह अलग बात है कि भक्तिकाल में अनेक प्रवृत्तियों ने जन्म दिया।

उत्तर भारत में भक्ति आन्दोल की जो लहर आयी उसने पूरे उत्तर भारत को अपने प्रभाव में ले लिया। इस कालखण्ड में भक्त कवियों ने उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया। यद्यपि इस काल में जो कवि हुए उनकी संवेदनाएँ कई प्रकार की हैं किन्तु एक तत्त्व सबमें सामान्य है—और वह है भक्ति। इसीलिए इस काल को भक्तिकाल के नाम से पुकारा जाता है। इस काल में भक्त कवियों को प्रमुख रूप से दो श्रेणियों में रखा जा सकता है—

1. निर्गुण संत काव्य धारा।
2. सगुण संत काव्य धारा।

निर्गुण संतों में वे कवि आते हैं जो ईश्वर के निराकार रूप में विश्वास करते हैं और ब्रह्म के इसी रूप की आराधना करते हैं। इस धारा के कवियों को भी दो वर्गों में रखा जा सकता है—1. संत काव्य धारा, 2. सूफी काव्य धारा अथवा प्रेमाश्रयी काव्य धारा।

इसी प्रकार सगुण भक्ति काव्यधारा के कवियों को भी दो श्रेणियों में रखा जाता है—

1. राम काव्य धारा।
2. कृष्ण काव्य धारा

भक्ति काल की ये सभी धाराएँ कुछ तत्त्वों को लेकर समान हैं—सभी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करती हैं, यह अलग बात है कि ईश्वर के रूप को लेकर सभी की दृष्टि अलग-अलग है। सभी विचारधाराएँ गुरु की महत्ता को स्वीकार करती हैं तथा सबका मानना है कि बिना गुरु के परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सभी धाराओं के भक्त कवि यह मानते हैं कि ईश्वर को प्राप्त करने का सबसे उपयुक्त साधन भक्ति अथवा परमात्मा के प्रति समर्पण है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिये बिना साधना के काम नहीं चल सकता। सभी धाराओं के भक्त कवि मानते हैं कि आत्मा और परमात्मा दोनों एक हैं पर संसार के संदर्भ में इनके विचार अलग-अलग हैं। सभी धाराओं के कवि यह मानते हैं कि भक्ति

के लिए मानव में पवित्र आचरण आवश्यक हैं। बिना अच्छे कर्मों के हम ईश्वर तक नहीं पहुँच सकते। इन कुछ सामान्य बातों के अतिरिक्त विभिन्न धाराओं के कवियों के विचार अलग-अलग हैं जिन पर संक्षेप में नीचे विचार किया जा रहा है।

संत काव्य धारा

निर्गुण काव्य धारा में सबसे पहले उन सन्तों की श्रेणी आती है जो दक्षिण के आलवार संतों से प्रभावित थे तथा जिन पर शैव-साधना का भी प्रभाव था क्योंकि नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव उत्तर भारत में भी दूर-दूर तक था। नाथ सम्प्रदाय तथा हठयोगियों से प्रभावित संत कवियों ने सबसे अधिक व्यक्ति के आचरण की शुद्धता पर जोर दिया। यह इसलिए भी कि भारतीय समाज धर्म के जिस कर्मकाण्डीय और पाखण्डी रूप से आक्रान्त था उसमें अनेक प्रकार की विसंगतियाँ आ गयी थीं। संत कवियों ने सादा जीवन, सहज जीवन, सामूहिक जीवन, सदाचारी जीवन, परोपकारी जीवन जैसे मानवीय तत्त्वों पर जोर दिया। इनकी दृष्टि में ईश्वर निराकर, निर्गुण और सर्वव्यापी है। आत्मा उसी का अंश है तथा शुद्ध आचरण और सहज साधना द्वारा आत्मा-परमात्मा का मिलन हो सकता है। संत कवियों ने अन्धविश्वासों, धार्मिक पाखण्डों तथा कर्मकाण्ड का खुलकर विरोध किया है। संत मानव धर्म के पक्षधर हैं जो हिन्दू-मुसलमान, गरीब-अमीर, सवर्ण-अवर्ण सबको समान मानते हैं। इनके अग्रणी कबीर हैं जिन्होंने कबीर पंथ भी चलाया किन्तु कबीर आदि संत मानव-धर्म के ही उन्नायक हैं तथा जीवन को सुखद बनाने को उत्सुक हैं। कबीर आदि संत हठ योग साधना को भक्ति का साधन मानते हैं।

सूफी काव्यधारा (प्रेमकाव्य अथवा प्रेमाख्यान काव्यधारा)

मुसलमानों में सूफी संत भी आते हैं जो अपना उदार और मानवीय दर्शन अपने साथ लाये। सूफी मत के अनुसार आत्मा पुरुष है और परमात्मा स्त्री। पुरुष स्त्री को प्राप्त करने का प्रयास करता है। परमात्मा को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है—प्रेम। सूफी साधना का मार्ग प्रेम मार्ग है इसलिए इसे प्रेम काव्य धारा भी कहते हैं। सूफी संतों ने भारतीय जीवन से अपनी कथाएँ ली हैं और उन कथाओं के माध्यम से सूफी मत को व्यक्त करने का प्रयास किया है। सूफी कवियों ने भारतीय जीवन के अंतरंग का बड़ी गहराई से अध्ययन किया था यह उनके काव्यों से स्पष्ट होता है। सूफी सम्प्रदाय के अग्रणी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने "पद्मावत" नामक काव्य में रतनसेन और पद्मावती के प्रेम की कथा कही है जिसमें पद्मावती ईश्वर है और रतनसेन आत्मा है, नागमती दुनियादारी है, अलाउद्दीन खिलजी, जो पद्मावती को प्राप्त करना चाहता था माया है, रतनसेन का मंत्री राघव चेतन शैतान है। इस प्रकार इस कथा को रूपक में ढालकर मसनवी शैली में लिखा गया है। दोहा-चौपाई शैली में लिखी गयी इन प्रेम कथाओं की भाषा अवधी है। ये काव्य वर्तमान काल की स्थितियों में बहुत प्रासंगिक लगते हैं।

राम काव्य धारा

स्वामी रामनन्द सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार की भक्ति के उन्नायकों में थे किन्तु उन्होंने राम भक्ति की प्रस्थापना की किन्तु उनके शिष्य कबीर ने रामभक्ति को ' निर्गुण में ढाला तो उनके दूसरे शिष्य गोस्वामी तुलसीदास ने राम को सगुण रूप में देखा और रामभक्ति की स्थापना की। उनका ''रामचरितमानस' रामभक्ति का कालजयी ग्रन्थ है तथा आज भी उसका भारतीय समाज में पूरा सम्मान है। विश्व की अनेक भाषाओं में इस ग्रन्थ का अनुवाद हो चुका है। गोस्वामी तुलसीदास का काव्य व्यक्तित्त्व बड़ा प्रखर था इसलिए रामकाव्य धारा में और जो कवि हुए उनका कृतित्व तुलसी के समक्ष नगण्य लगता है। तुलसी के सभी ग्रन्थ राम भक्ति को केन्द्र में रखकर रचे गये हैं किन्तु तुलसी समन्वयवादी हैं और अपने काव्य में तत्कालीन सम्प्रदायों के विचारों का समन्वय करते हैं। उनके राम भी गरीबों और छोटों के रक्षक हैं, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तथा सामाजिक मूल्यों के नियंता हैं। तुलसी अपने काव्य में हर प्रकार का समन्वय करते चलते हैं।

कृष्ण काव्य धारा

रामानुजाचार्य से प्रभावितं होकर रामानन्द ने राम भक्ति को प्रचारित किया तो बल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी तथा महाप्रभु चैन्तय ने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। भक्तिकाल में राम और कृष्ण को देव रूप में लगभग एक ही समय स्वीकृति मिली किन्तु कृष्ण भक्ति को लोकप्रियता अधिक प्राप्त हुई। इसका कारण यह रहा कि तुलसी ने रामभक्ति के जिस मर्यादित रूप को स्थापित किया उसकी तुलना में कृष्ण भक्ति का माधुर्य अधिक आकृष्ट करने वाला था। हिन्दी में कृष्ण भक्ति के प्रसार का श्रेय बल्लभाचार्य को है। उन्होंने भागवत पुराण के आधार पर प्रेम भक्ति की स्थापना की। इसलिए राम भक्ति को दास्य भाव की और कृष्ण भक्ति को सख्य भाव की भक्ति नाम से पुकारा जाता है। बल्लभाचार्य के आठ शिष्य हुए जिन्हें अष्टछाप के कवि कहते हैं। इनके नाम हैं—सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी और गोविन्दस्वामी।

संत काव्य की विशेषताएँ

(1) सर्व समावेशक, स्वानुभूत अध्यात्म-विचार—सन्त काव्य का अध्यात्म विचार शास्त्रों पर आधारित न होकर सन्तों का स्वानुभूत है। अधिकांश संत कवि शास्त्रों से सीधे रूप में परिचित नहीं थे। वे अधिकांश अनपढ़ थे और निचली जाति के थे, इसीलिए शास्त्राध्ययन का उन्हें उस समय अधिकार नहीं था। लेकिन शास्त्र मात्र ग्रंथों में नहीं होते, किसी-न-किसी रूप में जन-मानस में भी होते हैं। सन्त-काव्य और कवि भी जन-मानस से जुड़े थे। इसीलिए उनके अध्यात्म-विचार पर उन सभी दर्शनों का अपरोक्ष प्रभाव दिखाई

देता है, जो तत्कालीन जन-मानस में व्याप्त थे। सन्त-मत पर वैदिक धर्म, नाथ-पंथ, इस्लाम धर्म, सूफी-दर्शन का प्रभाव इसी रूप में था। अतः कहा जा सकता है कि सन्तों के अध्यात्म-विचार सर्वसमावेशक हैं। अध्यात्म-चिन्तन के अन्तर्गत ब्रह्म, जीव, जगत और माया आदि के विचार होते हैं।

(अ) ब्रह्म विचार—सन्त निर्गुण ब्रह्म के उपासक हैं। उन्होंने उस ब्रह्म को राम-रूप में प्रतिष्ठित कर त्रिगुणातीत और अनिवर्चयनीय कहा है। यह सर्वान्तरयामी, घट-घट व्यापी, पाप-पुण्य से परे, ज्ञान-ध्यान से, अतीत और स्थूल सूक्ष्म से पृथक हैं, जिसके लिए अजर, अमर, भक्त, निरंजन, अनादि सर्व शक्ति मान, अपार्थिव, प्रकाश-पुंज और अजन्मा आदि विशेषण दिये जा सकते हैं। कबीर के शब्दों में—

सन्तों धोखा का सूँ कहिए।
गुण में निरगुण निरगुण में गुण है, बाट छांड़ि क्यूं बहिए।
अजरा अमर कथै सब कोई, अलख न वयणाँ जाई।
जाति सरूप वरन नहि जाके, घट-घट रह्यो समाई।
प्यंड-ब्रह्मण्ड कथै सब कोई, बाके आदिरु अन्त न होई।
प्यंड ब्रह्मण्ड छाँड़ि जे कथिये, कहे कबीर हरि सोई।

सन्तों का निर्गुण ब्रह्म-निरूपण बहुत कुछ उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म के अव्यक्त स्वरूप के ढंग पर हैं, किन्तु कहीं-कहीं उस पर योगियों के द्वैताद्वैत विलक्षण, ज्योतिवाद, सूफियों के नूरवाद, सबदवाद, शून्यवाद आदि की भी छाया दिखाई पड़ती है। भक्ति-भावना के आवेश में कहीं-कहीं निगुर्ण-ब्रह्म के लिए सगुण-भगवान के अवतारों का भी प्रयोग किया है, श्रेष्ठतम् मानव-गुणों का उन पर आरोपण भी किया है।

(आ) आत्म-विचार—सन्तों ने आत्मा और ब्रह्म दोनों को सदैव एक रूप माना है। 'आत्मा' परमात्मा का ही अंश है, किन्तु शरीरबद्ध होने के कारण आत्मा, परमात्मा से भिन्न प्रतीत होती है। कबीर ने कुम्भ के रूपक से इस बात को स्पष्ट किया है—

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूट्या कुम्भ जल जलहिं समाना, यह तत कथौ गियानी॥

सन्तों ने ब्रह्म और आत्म की एकता को कई प्रतीकों के द्वारा स्पष्ट किया है, जैसे—सूत और वस्त्र, कनक और कुण्डल, जल और तरंग, पाषाण और मूर्ति आदि। उन्होंने दार्शनिक दृष्टि से जीव-आत्मा को ईश्वर का अंश माना है, किन्तु व्यावहारिकता की दृष्टि से उसे सांसारिक प्रपंचों में फँस हुआ तत्त्व स्वीकार किया है।

(इ) माया-विचार—सन्तों ने माया को ब्रह्म और आत्मा के बीच अन्तराल उपस्थित करने वाली और विश्वासघातिनी माना है। माया का सृजनात्मक रूप सन्तों ने अस्वीकार किया है। सन्त कवियों का 'माया' विचार किसी दर्शन-विशेष का अनुसरण नहीं है, बल्कि अपने इर्द-गिर्द जो भी पतितोन्मुखी-प्रलोभन हैं, उन्हें माया के रूप में स्वीकार किया है।

मन को मोहने वाले सभी तत्त्वों को माया मानकर उन्होंने उसकी कटु आलोचना की है उनके इर्द-गिर्द-कनक और कामिनी के रूप में ही माया विद्यमान थी। इसी रूप में अधिकांश माया-निरूपण किया गया है। जैसे—

(1) **माया सांपिन सब डसै, कनक कामिनी होई।**
ब्रह्मा बिस्नु महेश लौ, दादु बचै न कोई॥

(2) **नारी तो हम भी करी, पाया नहीं विचार।**
जब जानी तब परिहरी नारी बड़ी विलार॥

सन्त काव्य में नारी-रूपी माया की भर्त्सना करने में कोई कसर नहीं रखी गयी है, वे कनक, कामिनी के अतिरिक्त काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, आशा, तृष्णा, मद, मान, मात्सर्य और ईर्ष्या-द्वेष आदि को भी माया के ही अंग मानते हैं।

(ई) जगत—सन्तों ने, जो कुछ दृष्यमान है, उसे जगत् माना है। उसके अनुसार जगत, भ्रम, भय, चंचल और नश्वर है। धन, वैभव, आडम्बर, विलास, सुख और दुख ये सब जगत के रूप हैं। इस जगत के भ्रम में पड़कर ही व्यक्ति अपने मूल-रूप को भूल जाता है और दुखों की सर्जना करता है। विश्व का सारा प्रप्रंच संसारी जीवन का ही माया-प्रसार है। सन्तों ने जगत के विवेचन में तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक-परिवेश की प्रतिक्रिया पायी जाती है।

(2) रूढ़ियों और बाह्यडम्बरों का विरोध—सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त रूढ़ियों और बाह्याडम्बरों का सन्तों ने खुलकर विरोध किया है। सामाजिक-क्षेत्र में वर्ण-व्यवस्था के आधार पर धर्म के ठेकेदार निम्न जातियों को उनके सामाजिक-धार्मिक अधिकारों से वंचित रखते थे। इसीलिए सन्तों ने वर्ण-व्यवस्था पर करारे आघात किये हैं। अधिकांश सन्त निम्न जातियों से सम्बन्धित थे, वर्ण-व्यवस्था के दुष्परिणामों को उन्होंने स्वयं अनुभव किया था, अतः उस पर किये गये आघातों में जहाँ एक ओर उनका उत्पीड़नजन्य आवेश भी है और दूसरी ओर समानता की कामना भी। ''जाति-पांति बूझै नहीं कोई, हरि का भजै सो हरि का होई।' में यही भाव निहित है। इसीलिए सन्तों का वर्ण-व्यवस्था विरोध मात्र बौद्ध, नाथ मत का अनुकरण नहीं है। सन्त हर जीव में परमात्मा का अंश पाते हैं, अतः कोई 'अंश' मात्र किसी विशेष जाति में

पैदा होने से उच्च और नीच कैसे हो सकेंगे? वर्ण-व्यवस्था एक बाह्याडम्बर है। कबीर कहते हैं—

'एक ज्योति में सब उत्पना, कौ ब्राह्मण कौ सूदा।'

धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त हर धर्म के बाह्याडम्बर का सन्तों ने विरोध किया है। हिन्दुओं के जप, तप, सन्ध्या-वन्दना, माला फेरना, तीर्थ, व्रत, बलि, तिलक आदि, मुसलमानों की नमाज, रोजा, हलाल आदि, बाह्याडम्बरों पर आघात तो किये हैं, अवधूतों (नाथों) और जैनों की भी खबर ली है, वैष्णवों को भी बक्शा नहीं है। उदाहरण के लिए—

हिन्दू— "क्या जप क्या तप संयमी क्या व्रत क्या अस्नान,
जब लगि मुक्ति न जानिये भाव भक्ति भगवान।"

मुस्लिम— "जोरी करि जिबहै करि करते हैं जो हलाल,
जब दफ्तर देखेगा दई तब ह्वैगा कौन हवाल।"

नाथों-सिद्धों के विभिन्न सम्प्रदाय के भ्रष्टाचरण के प्रति कबीर का यह व्यंग्य देखिये—

ऐसा जोग न देखा भाई। भूला फिरै लिए गफिलाई।।
महादेव को पन्थ चलावै। ऐसो बड़ो महंत कहावै।।
हाट बाजार लावै तारी। कच्चे सिद्धन माया प्यारी।
कब दत्ते मवासी तोरी। कब सुकदेव तोप ची जोरी॥

× × ×

भये विरक्त, लोभ मन ठाना। सोना पहिरी लजावे बाना।
धोरा-धोरा किन्ह बहोरा। गाँव-गाँव जस चलै ककोरा।।

(3) समन्वित-भक्ति-भावना—सन्त-साहित्य में अभिव्यक्त भक्ति-भावना पर नाथों की योग-साधना, वैष्णवों की भक्ति-महिमा, सूफियों के प्रेम तत्त्व का प्रभाव होकर भी समन्वित तथा मौलिक है। इसमें कर्म, ज्ञान और योग का समन्वय है। संतों की भक्ति-साधना पर योग मार्ग का प्रभाव है, लेकिन उसका अन्धानुकरण नहीं है। उनकी नजर में प्रेम के बिना ज्ञान और योग की क्रियाएँ व्यर्थ हैं। इस सन्दर्भ में कबीर की मान्यता है—

मैं जान्यौ पढ़िवो भलौ, पढ़िबा तै भल जोग।
राम नाम सूँ प्रीति करि, भल-भल नींदो लोग॥

इससे भी आगे जाकर वे कहते हैं—

प्रेम बराबर जोग ना, प्रेम बराबर ज्ञान।
प्रेम भगति बिन साधिबो, सब ही थोथा ज्ञान॥

इस तरह से संत-काव्य की भक्ति-साधना एक प्रकार की प्रेम-साधना ही है। उनकी प्रेम-साधना में लौकिक वासनाओं के लिए अनुमान का भी अवकाश नहीं। उनका तो विश्वास था कि जहाँ प्रेम है, वहाँ "काम" के लिए कोई स्थान नहीं। सन्तों की भक्ति-साधना के लिए मन की शुचिता, सदाचार और आराध्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण की अनिवार्यता प्रतिपादित की गयी है।

(4) नाम स्मरण की महिमा—नाम-तत्त्व सन्त काव्य की विरचना का एक विशेष अंग है। सन्त-काव्य में वर्णित राम-नाम की साधना एक प्रकार की मंत्र-साधना है, जिसका गुरु मंत्र स्वामी रामानन्द ने कबीर को दिया था। केवल नामोच्चारण या परम्परागत जाप राम-नाम-साधना नहीं है, उसका सम्बन्ध जीवन की रागात्मक वृत्ति से है। जब तक नाम-

35 × 15 = 12.25

साधना का परमतत्त्व हमारी प्राण-शक्ति के साथ घुल-मिल नहीं जाता, तब तक वह शब्द-ज्ञान मात्र ही बना रहता है। इसीलिए नाम-स्मरण तन-मन से एकाग्र होकर ही किया जा सकता है—

सुमिरन ऐसा कीजिये, दूजा लखै न कोय।
होंठ न फरकत देखिये, प्रेम राखिये गोय॥

अनमने ढंग से किया नाम-स्मरण आडम्बर है, इसीलिए सन्तों ने उसकी निन्दा भी की है—

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवा तो चहु दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥

(5) सतगुरु की महिमा—विश्व का शायद ही कोई ऐसा वाङ्मय हो, जिसमें गुरु महिमा-गान न हुआ हो। सन्त-साहित्य के पूर्ववर्ती युगों में भी गुरु के महात्म्य के सम्बन्ध में बहुत अधिक लिखा गया है। सन्त साहित्य की पृष्ठभूमि अथवा प्रेरणा स्रोतों के रूप में जिन सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य की चर्चा की जाती है, उसमें भी गुरुतत्व की महिमा है। वस्तुतः द्रविड़ प्रदेश से कर्नाटक और महाराष्ट्र से होती हुई जो भक्ति-धारा हिन्दी प्रदेशों में प्रवाहित हुई है, वह अपने मूल रूप में ही गुरु महात्म्य-गान लेकर ही आयी है। हिन्दी सन्त काव्य में गुरु महात्म्य की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। लगभग सभी सन्तों ने गुरु महिमा का बखान किया है। उनके अनुसार गुरु ही अपने भीतर के विशुद्ध आत्म तत्त्व से परिचित करा सकते हैं। सन्त नानक देव कहते हैं—

"गुरु बिनु कितै न पाइयो, केति कहै कहाये।
गुरु सागरो रतन गुरु तितु रतन धणोरो राम॥"

दादू दयाल की मान्यता है—

घट घट राम रतन है, दादू लखै न कोय।
सतगुरु सबदा पाइये, सहज ही सिधि होय॥

इसीलिए कबीर की नजरों में गुरु, गोविन्द से भी बड़ा है—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पांय।
बलिहारी गुरु आपनौ, गोविन्द दियो बताय॥

(6) रहस्य-भावना की अभिव्यक्ति—ब्रह्म के आध्यात्मिक स्वरूप से आत्मा की भावात्मक ऐक्यानुभूति का प्रकाशन रहस्यवाद है। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के मतानुसार, "जब साधक भावना के सहारे आध्यात्मिक सत्ता की रहस्यमयी अनुभूतियों को वाणी के द्वारा शब्दमय चित्रों में सजाकर रखने लगता है, तभी साहित्य में रहस्यवाद की सृष्टि होती है।" (कबीर की विचारधारा-त्रिगुणायत पृ. 168)।

सन्त-साहित्य में भावनात्मक, साधनात्मक और अभिव्यक्तिमूलक रहस्याभिव्यक्ति के

सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। भावात्मक रहस्य-भावना प्रेममूलकहै, साधनात्मक रहस्य-भावना यौगिक, तथा अभिव्यक्ति मूलक रहस्य-भावना पारिभाषिक शब्द जनित है। सभी सन्तों में कबीर की रहस्य-भावाभिव्यक्ति अद्वैतदर्शन, सूफी-दर्शन और नाथों के योग से प्रभावित होकर भी मौलिक है। उदाहरण के लिए—

(1) प्रेममूलक रहस्याभिव्यक्ति—

बहुत दिनन में प्रीतम आये। भाग बड़े धरि बैठे पाए॥ टेक॥
मंगलाचार माँहि मन राखौ, राम रसाइन रसना चाखौ।
मन्दिर मांई भया उजियारा, लै सूती अपना पीव पियारा॥

(2) यौगिक रहस्याभिव्यक्ति—

तलि कर साखा उपरि करि मूल, बहुत भाँति जड़ लागे फूल।

(3) अभिव्यक्तिमूलक रहस्याभिव्यक्ति—

फिलु खादी वलदु पखावज कउआ ताल बजावै।
पहिन चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै॥

(7) शान्त और शृंगार रस की अबाधित धारा—यद्यपि सुन्दरदास जैसे सन्तों को छोड़कर लगभग सभी सन्त काव्य-शास्त्रीय रस-मीमांसा से अनभिज्ञ थे, परन्तु उनका काव्य सभी रसों से आप्लावित है। उनका काव्य अपनी अनुभूति की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है उन्होंने काव्य के शिल्प-पक्ष के बाह्याडम्बरों से बचकर ही अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त किया है, इसीलिए इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता 'साधारणीकरण' सन्त काव्य में विद्यमान है। सुन्दरदास ने काव्यशास्त्रीय दृष्टि अपनायी पर भावों की सहज संप्रेषणशीलता से वे वंचित रहे। सन्त काव्य में प्रधानता शान्त रस को ही है, उसके बाद शृंगार का क्रम आता है। उनके दाम्पत्य प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त भावनाओं में संयोग और वियोग शृंगार के अनुपम चित्र मिलते हैं। चेतावनी और उपदेश की बानियों में शान्त रस है। ब्रह्म के विराट स्वरूप के वर्णन में तथा रहस्यभावाभिव्यक्ति में अद्‌भुत रस है। बाह्याडम्बरों के वाड्बानों में हास्य तथा प्रेतादि के वर्णन और जीव जगत की क्षणभंगुरता के निरूपण में वीभत्स रस का परिपाक हुआ है।

(8) सधुक्कड़ी भाषा—सन्तों ने जन-बोलियों में अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त किया है। भाषा के सन्दर्भ में उनका दृष्टियोग है—

संस्किरत है कूप जल, भाषा बहता नीर।
भाषा सतगुरु सहित है, सत मत गहिर गंभीर॥

संत-कवि भ्रमणशील थे, इसीलिए ये कई स्वदेशी भाषाओं के ज्ञाता थे। सन्तों की भाषा में उस समय की समस्त भाषाओं, विभाषाओं और बोलियों का मधुर मिश्रण मिलता है। उनकी काव्य-भाषा में पंजाबी, अवधी, ब्रज, राजस्थानी मैथिली, बुंदेली आदि के सा

अन्य प्रादेशिक भाषाओं तथा अरबी-फारसी के शब्दों का सुन्दर प्रयोग प्राप्त होता है। भाषा के इस मिले-जुले रूप को 'सधुक्कड़ी' की संज्ञा दी जाती है। सन्तों की भाषा सीधी-सादी, सरल और भावानुकूल है।

इनकी भाषा में बहुत से पारिभाषिक शब्दों का भी प्रयोग मिलता है, विशेषकर योग-साधना से संदर्भित पारिभाषिक शब्दों को सन्तों ने अपनाया है, वहाँ उनकी भाषा कुछ क्लिष्ट-सी हो जाती है।

(9) छन्द-प्रयोग—अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सन्तों ने साखी और सबद छन्दों का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त रमैनी, चौपाई, कवित्त, सार, वसंत आदि छन्दों का प्रयोग किया है। सुन्दरदास को छोड़कर अन्य सन्त छन्दशास्त्र से अनभिज्ञ थे। इसीलिए इनके छन्दों को 'सधुक्कड़ी' छंद कहना ही समीचीन होगा।

(10) अलंकारों का सहज एवं अनायास प्रयोग—छंदों के समान ही संतों ने सहेतुक प्रयोग नहीं किये हैं, लेकिन अनायास रूप में विभिन्न अलंकार उनके काव्य में आये हैं जिनमें रूपक, उपमा, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा, श्लेष, यमक और अतिशयोक्ति प्रमुख हैं। इन अलंकारों के अतिरिक्त स्वाभावोक्ति, सहोक्ति, समासोक्ति, अन्योक्ति, वक्रोक्ति, विरोधाभास, विभावना आदि अलंकार भी पाये जाते हैं। सन्तों के रूपक बड़े यथार्थपरक और प्रभावशाली हैं। प्रतीक योजना भी परम्परागत प्रतीकों से पृथक है। अधिकांश प्रतीक जनसामान्य में प्रचलित और परिचित हैं, इसीलिए भाषा की संप्रेषणशीलता को वे और भी वृद्धिगत करते हैं। सन्तों के अलंकार वाणी के आभूषण नहीं बल्कि भावों-विचारों के संप्रेषण का माध्यम है।

संत काव्यधारा के प्रमुख कवि

संत काव्यधारा के सबसे अग्रणी कवि कबीरदास हैं जिन्हें कबीर पंथ का स्थापक भी माना जाता है। कबीर हिन्दी के सबसे महत्त्वपूर्ण कवियों में हैं जिनको लेकर आज भी नयी-नयी खोजें हो रही हैं। इनका विस्तृत परिचय आगे दिया गया है।

संत धर्मदास—संत धर्मदास महात्मा कबीर के शिष्य थे तथा कबीर की इन पर विशेष कृपा थी। माना जाता है कि पहले-पहल कबीर की वाणी का संकलन धर्मदास ने ही किया। धर्मदास ने कबीर के शिष्य होने के कारण अपनी रचनाओं में उन्हीं विचारों का प्रतिपादन किया है जिनका कबीर ने किया था। वे भी धर्म के कर्मकाण्डी और पाखण्डी रूप की तीव्र भर्त्सना करते हैं पर उन्होंने अपना रूख थोड़ा नरम रखा है। उनकी काव्य-भाषा फूर्वी हिन्दी है और उनकी अभिव्यक्ति में अधिक परिपक्वता है।

संत दादूदयाल—संत काव्यधारा में कबीर के बाद दादूदयाल का नाम सबसे महत्त्वपूर्ण है क्योंकि दादूदयाल की शिष्य परम्परा बहुत समृद्ध थी और उनका जनता में प्रभाव भी बहुत व्यापक था। वे सूफी मत से भी प्रभावित थे इसलिए उनकी रचनाओं में

आत्मा-परमात्मा के प्रेम का बड़ा हृदयस्पर्शी वर्णन मिलता है। उनके काव्य में समरसता बहुत है तथा उनके पंथ को दादूपंथ के नाम से जाना जाता है। उनका काव्य प्रमुख रूप से ब्रजभाषा है पर उसमें राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्द मिल जाते हैं क्योंकि दादू भी घुमक्कड़ थे। उनकी रचनाओं में तन्मयता विशेष गुण है।

सुन्दरदास—दादूदयाल के शिष्य सुन्दरदास बहुत शिक्षित व्यक्ति थे। "सुन्दर विलास" नामक उनकी रचना बहुत प्रसिद्ध है। उनकी रचनाओं में भक्ति, नीति, ज्ञान विषयक भावों को अभिव्यक्ति मिली है। शिक्षित होने के कारण उनकी कविता में छन्दों तथा भाषा का लालित्य मिलता है। उनकी सम्पूर्ण रचनाएँ सुन्दर ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं, वे संत कवियों में एक महत्त्वपूर्ण कवि हैं।

मलूकदास—"ज्ञान बोध" और "रत्न खान" रचनाओं के रचनाकार संत मलूकदास की कविता में वैराग्य, नीति, आत्मदर्शन और निर्गुण भक्ति को अभिव्यक्ति मिली है। संत मलूकदास की कविता बहुत सहज और सुव्यवसित है।

इनके अतिरिक्त संत कवियों में संत रविदास (रैदास), संत रज्जब, सहजोबाई, धन्ना आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन संत कवियों के बारे में एक तथ्य और महत्त्वपूर्ण है कि इनमें से अधिकांश निम्न जातियों के थे। इससे स्पष्ट है कि भक्ति आन्दोलन ने जाति-व्यवस्था की रूढ़ि को भी तोड़ने का प्रयास किया था।

सूफी काव्य की विशेषताएँ

(1) परम्परागत तथा काल्पनिक कथा स्त्रोत—इस काल खण्ड में लिखित प्रेमाख्यान के कथा स्त्रोत मुख्यतः परम्परागत जन-मानस पर बिम्बित पौराणिक, ऐतिहासिक कथाएँ हैं, जिसका प्रयोग कल्पना के प्रचुर प्रयोग द्वारा हुआ है। अधिकांश कथाएँ हिन्दू-राज-परिवारों से सम्बन्धित हैं। कुछ प्रेमाख्यानों में ऐतिहासिक चरित्रों को तथा घटनाओं को अपनाया गया है, लेकिन उसमें ऐतिहासिक तथ्यों की अधिकतर उपेक्षा ही हुई है। इस रूप में 'पद्मावत' और 'कुत्ब मुश्तरी' रचनाओं को देखा जा सकता है। परम्परागत कथाओं में हिन्दू के साथ मुस्लिम-परम्परागत कथाओं का भी प्रयोग किया गया है जैसे—युसूफ-जुलेखा, लैला-मजनूँ आदि। कभी-कभी हिन्दी में प्रख्यात प्रेमाख्यान के कथा की पुनरावृत्ति भी हुई है, जैसे 'मधुमालती' की कथावस्तु को लेकर दक्खिन में 'गुलशने इश्क' लिखा गया। 'माधवानल कामकदंला' में किचिंत परिवर्तन कर सात-आठ कवियों ने प्रेमाख्यान लिखे, 'चंद-लोरित' की कथा भी अलग-अलग रूप में हुई। भावों के मानवीकरण की प्रवृत्ति भी 'सबरस' जैसे काव्य में पायी जाती है, जो परम्परागत-कथा उत्स में देखी जा सकती है। हिन्दू और मुस्लिम परिवार की विधर्मी प्रेम-कथा अधिक मात्रा में नहीं लिखी गयी, प्रायः नायक और नायिका सधर्मी चित्रित की गयी हैं, लेकिन 'चंदरबदन व महयार' में विधर्मी प्रेम-कथा चित्रित है, तात्पर्य कथावस्तु के परम्परागत स्त्रोतों से ये कथाएँ जरूर आयी हैं, लेकिन तत्कालीन स्थितियों का प्रभाव भी उस पर देखा जा सकता है।

(2) अलौकिक या आदर्श प्रेम की व्यंजना—इन प्रेमगाथाओं में लौकिक प्रेमकथाओं का चित्रण है, लेकिन मात्र 'प्रेमकथा' कहना इनका उद्देश्य नहीं है। कुछ विद्वानों ने इन्हें मात्र लौकिक प्रेमगाथाएँ माना है और कुछ विद्वानों ने इनका उद्देश्य सूफी-मत का मात्र प्रचार एवं प्रसार माना है। हमारी नजर में ये दोनों धारणाएँ अतिवादी हैं। दोनों धारणा प्रस्तुत करने वाले विद्वान् किसी-न-किसी पूर्व धारणा से ग्रसित हैं। हमारा दुर्भाग्य यह रहा है कि हमारा इतिहास चाहे वह राजनैतिक हो, सांस्कृतिक हो या साहित्यिक एक तरह से उस पर जमातवादी दृष्टिकोण हावी है, तटस्थता का दृष्टिकोण कम ही रहा है। 'प्रेमाख्यान' काव्य को लेकर भी हिन्दी-साहित्य के इतिहास में भी जमातवादी दृष्टिकोण से उसके उद्देश्य का विश्लेषण किया जाता रहा है। कुछ लोग इसे पूरी तरह सूफी मानते हैं, तो कुछ लोग पूरी तरह से भारतीय। जबकि असलियत यह है कि ये प्रेमाख्यान भारतीय और सूफी दोनों के सम्मिलित प्रभाव में लिखे गये हैं। दोनों दर्शन में अलौकिक तथा आदर्श प्रेम प्रतिपादन की लम्बी परम्परा रही है, अतः भक्तिकालीन प्रेमाख्यानों को मात्र 'मनोरंजन' का साधन कहना कहाँ तक उचित होगा? वस्तुतः इन काव्यों में लौकिक प्रेम-गाथा के माध्यम से अलौकिक तथा आदर्श प्रेम की अभिव्यंजना हुई है। जहाँ सूफी प्रभाव अधिक मात्रा में हुआ है, उन रचनाओं में सूफी-साधना के आत्मा, परमात्मा, शैतान, गुरु की मान्यता में दिखाई देता है, अन्य काव्यों में 'प्रेमतत्त्व' की महत्ता अभिव्यक्त हुई है।

(3) मानवी हृदय की सूक्ष्म-भाव-तरंगों का अंकन—इन प्रेमाख्यानों का मुख्य प्रतिपाद्य प्रेम है और प्रेम के वियोग को इनमें अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। वियोग-अवस्था में प्रेमी की विभिन्न मानसिक दशाओं का सूक्ष्म-अंकन इन काव्यों की अपनी विशेषता है। यह वियोग निष्क्रिय आक्रोश मात्र नहीं है, बल्कि प्रियतम को प्राप्त करने के लिए सक्रिय है इसीलिए कई बाधाओं से टकराना यहाँ अनिवार्य है, इसी परिप्रेक्ष्य में नायक-नायिका की विभिन्न-भाव दशाओं का चित्रण किया गया है, जिसमें प्रसंगवश उत्साह, द्वेष, ईर्ष्या, वैर, कपट, दया, सहृदयता और सौजन्यपरक भावों की सुन्दर व्यंजना हुई है। विरह-वर्णन में बारहमासा वर्णन के अपनाव के कारण इर्द-गिर्द का परिवेश और उसके चरित्र के मानस पटल पर पड़े प्रभाव से उत्पन्न भाव-तरंगों का अंकन भी इसमें प्राप्त होता है। कहीं-कहीं विरह-वर्णन में भावातिरेक का चित्रण अतिरंजित शैली में भी हुआ है, जहाँ नायिका विरह में रक्त के आँसू बहाने लगती है, लेकिन इसे एक शैली के रूप में स्वीकार करना चाहिए, दोष के रूप में नहीं।

(4) वर्णनात्मकता—वर्णनात्मकता प्रबन्ध-काव्य रूपों में अनिवार्य रूप में आ जाती है। प्रेमाख्यान काव्य में नायिका में सौन्दर्य का नख-शिख वर्णन हुआ है। नायिका का लोकोत्तर सौन्दर्य वर्णन अतिशोयक्तिपूर्ण किया जाता रहा है, जिसका एक कारण परम्परा में देखा जा सकता है और दूसरा अलौकिक प्रेमव्यंजना के उद्देश्य में। इसमें नख-शिख, रूप-रूप और हाव-भाव के अतिरिक्त कला-विशारदता, विदग्धता आदि का भी समावेश

है। इन काव्यों में वस्तु, घटना, कार्य, पर्व, उत्सव आदि का भी विस्तृत वर्णन किया ग है। प्रकृति के विभिन्न दृश्यों वन, वाटिका, समुद्र, पर्वत, सरिता, विभिन्न ऋतु आदि विस्तृत वर्णन प्रसंगवश तथा कभी-कभी अप्रासंगिक रूप में भी किया है। नगर, पन आदि के साथ ही बारात, युद्ध, ज्योनार आदि का वर्णन विशेष रूप से किया गया है। वर्णनों की अतिरंजिततता में भी जहाँ एक ओर प्रबन्ध-परम्परा के दर्शन होते हैं, वहाँ दू ओर दार्शनिक प्रतीकात्मकता भी देखी जा सकती है। समुद्र यात्रा का वर्णन प्रायः अधिक प्रेमाख्यानों में हुआ है, जिसमें सूफी-साधना की नहीं भारतीय साधना की प्रतीकात्म भी देखी जा सकती है, भले ही वह कम मात्रा में ही क्यों न हो। लेकिन इस संद यह भी वास्तविकता है कि अधिकांश कवियों ने पूर्व में हुए वर्णन की पुनरावृत्ति मात्र है, उसमें मौलिकता का प्रायः अभाव ही है। इसी रूप में विभिन्न कला और शास्त्रों जानकारी का प्रयोग भी कवियों ने किया है।

(5) अद्‌भुत घटनाओं का चित्रण—इन प्रेमाख्यानों में अद्‌भुत घटनाओं का चि पर्याप्त मात्रा में हुआ है। इन घटनाओं के स्रोत भारतीय और फारसी दोनों रहे हैं। पर अप्सराओं, राक्षसों द्वारा नारियों का अपहरण और नायक के हाथों उसकी मृत्यु, जादू नायिका की पंछी बन जाना और फिर उसका उद्धार, बोलने वाले पंछी, तोता, हंस के स साथ हिन्दू-मुस्लिम देवी-देवता, पीर आदि के साथ जुड़ी अद्‌भुत-कथाओं का प्रयोग इनमें हुआ है। इन अद्‌भुत पात्र एवं घटनाओं का प्रयोग कथानक की मूल आवश्यकत अनुरूप हुआ है। इसमें भी प्रतीकात्मकता के साथ ही रूढ़िवद्धता दिखाई देती है।

(6) सांस्कृतिक समन्वय का काव्य—प्रेमाख्यान हिन्दू-मुस्लिम सांस्कृतिक सम का काव्य है, चाहे वह कृति हिन्दू ने लिखी हो या मुस्लिम कवि ने। हाँ, जहाँ मु कवि ने सूफी-मत की परोक्ष या प्रत्यक्षचर्चा की है, वहाँ भी उनमें साम्प्रदायिक भाव अभाव ही है। उन्होंने कहीं भी अन्य मतों का खण्डन नहीं किया है। इन्होंने पीर-पै की स्तुति की है और उनकी महानता को भी अबाधित रखा है। भारतीय दर्शन और मुस्ि दर्शन और मुस्लिम-दर्शन का यहाँ टकराव नहीं, बल्कि समन्वय ही दिखाई देता है। ही नहीं तत्कालीन सभी धार्मिक मतों का सहज प्रभाव इन कृतियों में ग्रहण किया है। 'चंदरबदन व महयार' जैसी कृति में हिन्दू-नायिका और मुस्लिम नायक के प्रे चित्रण है, लेकिन कहीं भी हिन्दू मतों की अपेक्षा मुस्लिम मतों की श्रेष्ठता का चित्रण किया गया है। इस काव्य के अन्त में नायिका चन्दरबदन इस्लाम कबूल करती है, त अपने प्रेमी के उदात्त और अटूट प्रेम और त्याग के कारण—धर्म के कारण नहीं। सू के सिद्धान्त और धर्म-भावना में भारतीय हिन्दू धर्म और परिष्कृत इस्लाम धर्म का एक समन्वित स्वरूप दिखाई देता है, जो दोनों धर्मों के अनुयायियों को मान्य है। इसीलि समय के प्रेमकाव्यों पर जो सूफी प्रभाव मात्र मुस्लिम कवियों की कृति में ही नहीं अ कवियों के कृतियों में भी इस प्रकार घुलमिल गया है कि वह अपना अलग अस्तित्

रखता है। इसीलिए काव्य चाहे हिन्दू कवि का हो या मुस्लिम कवि का, साम्प्रदायिकता के भाव से अलग है।

(7) भारतीय और फारसी शिल्प-मिश्रण—कथानक को विकसित करने वाले तत्त्वों और पात्रों के जीवन में आने वाले मोड़ों के लिए प्रेमाख्यानों के रचयिताओं ने भारतीय और फारसी शिल्प का सुन्दर मिश्रण किया है। फारसी शिल्प मसनवी शैली में है, जिसके अन्तर्गत काव्यारम्भ में ईश्वर-वन्दना, पैगम्बर-प्रशंसा, खलीफा स्तुति, शाहेवक्त और गुरु प्रशंसा के बाद कवि परिचय परम्परा आती है। भारतीय प्रबन्ध काव्य परम्परा में मंगलाचरण और ईश स्तवन की परिपाटी रही है। कथा में गति लाने के लिए भारतीय काव्यों में व्यवहृत काव्य रूढ़ियों का भी उपयोग किया गया है। चित्रदर्शन स्वप्न द्वारा अथवा शुक, सारिका आदि द्वारा नायिका का रूप देख या सुनकर उस पर आसक्त होना, पशु-पक्षियों की बातचीत में भावी घटना का संकेत पाना, मन्दिर, चित्रशाला, उपवन अथवा किसी अन्य गुप्त स्थान पर प्रेमी युगल का मिलना आदि काव्य रुढ़ियाँ भारतीय हैं तथा प्रेम-व्यापार में देवों और परियों का सहयोग, उड़ने वाली राजकुमारियों द्वारा राजकुमारियों के प्रेमी को गिरफ्तार करवा लेना, प्रेमी-प्रेमिका का एक-दूसरे के दर्शन के साथ बेहोश हो जाना आदि फारसी काव्य रूढ़ियाँ हैं। विरह-वर्णन में पायी जाने वाली अतिरंजितना भी फारसी शैली के प्रभाव का परिणाम माना जा सकता है।

कुछ विद्वानों ने मुस्लिम कवियों की रचनाओं में ही फारसी शैली का प्रभाव माना है और

हिन्दू कवियों की रचनाओं को विशुद्ध भारतीय-शैली की रचनाएँ घोषित की हैं। यह एक तरह की आलोचकों की साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का परिणाम है। जैसे कि

डॉ. रामकुमार वर्मा ने लिखा है—"जो प्रेम कथाएँ मुसलमान लेखकों द्वारा लिखी गई हैं, उनमें धार्मिक संकेत अवश्य हैं, पर जो प्रेम कथाएँ हिन्दू लेखकों द्वारा लिखी गयी हैं उनमें काव्यत्व और घटना-वैचित्र्य ही प्रधान है। इतना अवश्य है कि हिन्दू-प्रेम-कथाकारों ने मुसलमानों द्वारा चलाई गई प्रेम कथा के आदर्शों का पूर्ण रूप से पालन किया है।" (हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—पृ. 332)।

(8) शृंगारेतर रसों के प्रति उदासीनता—इन काव्यों में प्रधानतः शृंगार रस की व्यंजना हुई है। शृंगार में भी विप्रलम्भ पक्ष को ही प्रमुखता प्राप्त हुई है। इसीलिए संयोग-शृंगार की भी प्रायः उपेक्षा हुई है। पूर्व राग को जागृत करने के लिए गुण-श्रवण, प्रत्यक्ष-दर्शन, स्वप्न-दर्शन तथा चित्र-दर्शन का प्रयोग किया गया है। उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत सखा-सखी, वन, उपवन, ऋतु-परिवर्तन आदि का चित्रण किया गया है। संयोग-शृंगार के वर्णन में इन्होंने इतनी रुचि नहीं दिखाई, जितनी कि विप्रलम्भ शृंगार के वर्णन में, और न ही इन्होंने नायक एवं नायिकाओं के भेदों के उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। जहाँ भी संयोग शृंगार का चित्रण है, उसमें मौलिकता नहीं है।

शृंगार रस के अतिरिक्त अन्य रसों का इन प्रेमगाथाओं में अपेक्षाकृत कम वर्णन किया गया है। नायक आततायियों का दमन करता हुआ चित्रित है, वहाँ वीर रस का चित्रण हुआ है। अन्य रसों में करुण, शांत, वीभत्स, अद्‌भुत आदि रसों का प्रसंगानुरूप अल्पांश में प्रयोग पाया जाता है।

(9) सहज-सरल तथा स्वाभाविक भाषा प्रयोग—प्रेमाख्यानों की रचनाएँ उत्तरी-भारत में प्रमुखतः अवधी में और दक्षिण में दक्खिनी भाषा में हुई हैं। अवधी और दक्खिनी भाषा का जनमानस में जो स्वरूप था, उसी को इन कवियों ने अपनाया है। अवधी भाषा में लिखे गये प्रेमाख्यानों की भाषा पर राजस्थानी, भोजपुरी और ब्रजभाषा का प्रभाव भी देखा जा सकता है। उसमान और नसीर की काव्यभाषा पर भोजपुरी का प्रभाव दिखाई पड़ता है तो नूरमुहम्मद में कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव दिखायी देता है। भक्तिकाल में रामकाव्य और सूफी प्रभावित प्रेमाख्यानों ने अवधी को अपनाया है लेकिन सूफी प्रभावित प्रेमाख्यानों की भाषा अवधी रामकाव्य की भाषा की अपेक्षा अधिक सरल और स्वाभाविक है। तुलसी और जायसी की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर डॉ. रामकुमार वर्मा कहते हैं—''जो अवधी इस प्रेमकाव्य में प्रयुक्त है, वह अत्यन्त सरल और स्वाभाविक है। वह जन-समाज की बोली के रूप में है। उसमें संस्कृत के कठिन समास या दुरूह शब्दावलियाँ नहीं हैं। तुलसीदास ने अपनी अवधी को संस्कृतमय कर अपने शब्द भण्डार का अपरिमित परिचय दिया है, पर प्रेम-काव्य के कवियों ने भाषा का यथातथ्य स्वरूप कविता में सुरक्षित रखा। साहित्य को प्रेम काव्य की यह सबसे बड़ी देन है।'' (हि.सा.आ.ई.—पृ. 330)

दक्खिनी में लिखे प्रेमख्यानों में भी इस तरह का भाषा प्रयोग है। इनमें बोलचाल की दक्खिनी भाषा का प्रयोग ही अधिकांश मात्रा में हुआ है। जैसा कि डॉ. श्रीराम शर्मा ने लिखा है—''इस युग में गव्वासी और नुस्त्रती जैसे महाकवियों ने दक्खिनी के फ़ारसीकरण का प्रयत्न किया। फारसीकरण की प्रवृत्ति ने अनेक कवियों को प्रभावित किया, फिर भी दक्खिनी की मूलधारा आगे बदल गयी।'' (द.हि.सा. पृ. 347)।

नुस्त्रती-गव्वासी की भाषा में जहाँ एक ओर फारसीकरण की प्रवृत्ति है, उसी तरह बोलचाल के शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में किया है। दक्खिनी के अन्य कवियों की अपेक्षा हाशमी की भाषा बोलचाल की दक्खिनी के अत्यधिक निकट है। उन्होंने तो शुद्ध दक्खिनी में लिखने का प्रण ही किया था—

''अवल कस्द कर दखनी बोल उपर,
जरूर आ पड्या तो मिलोनी भी कर।''

चाहे अवधी हो या दक्खिनी कवियों ने तत्कालीन लोकोक्तियाँ और मुहावरों का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया है जिससे भाषा की सरसता और प्रवाहमयता के दर्शन होते हैं।

अवधी, दक्खिनी के अतिरिक्त कुछ असूफी प्रेमाख्यानों की रचना राजस्थानी और ब्रजभाषा में भी हुई है।

(10) छन्द और अलंकार विधान—सूफी प्रभावित अवधी-धारा के प्रेमाख्यानों में प्रमुखत: दोहा-चौपाई छन्द का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त सवैये, प्लवंगम, बरवै आदि छन्द भी प्रयुक्त हुए हैं। दक्खिनी के प्रेमाख्यानों में फारसी का द्विपदी छन्द मस्नवी प्रयुक्त हुआ है, कथा-परिवर्तन अथवा विषय परिवर्तन के लिए शेर का प्रयोग हुआ है।

अलंकारों के प्रयोग में प्रेमाख्यानों के रचयिता ने बहुधा प्रचलित परम्परा का अनुसरण किया है। जहाँ इसमें एक ओर अतिशयोक्ति अलंकार का वर्णन शैली के रूप में प्रयोग किया है, जिस पर फारसीयत का प्रभाव दिखाई देता है। इस काव्य में समासोक्ति का प्रयोग अत्यधिक सुन्दरता के साथ हुआ है। यों तो इसमें सभी अलंकारों के उदाहरण उपलब्ध हो जाते हैं लेकिन उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक और अतिशयोक्ति के विभिन्न भेदोपभेदों की ही प्रमुखता दृष्टिगोचर होती है। इस काव्यधारा की अलंकार-योजना में भाव प्रवणता अधिक है और चमत्कार प्रदर्शन की प्रवृत्ति कम है। यही कारण है कि शब्दालंकारों का प्रयोग स्थिति विशेष या अनुभूति-विशेष की प्रेरणा से हुआ है, उनके पीछे विशेष चेष्टा या यत्न परिलक्षित नहीं होता।

इन प्रमुख विशेषताओं के अतिरिक्त रहस्यानुभूति की अभिव्यक्ति, निर्गुण ईश्वर में आस्था, मुक्तक शैली, ढाँचे में ढला चरित्र-चित्रण आदि विशेषताएँ भी इस धारा के काव्य में दिखाई देती हैं।

सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि

(1) कुतुबन : मृगावती—कुतुबन शेख बुरहान के शिष्य थे। ये शेरशाह के पिता हुसेनशाह के समकालीन माने जाते हैं इसीलिए इनका आविर्भाव काल सन् 1493 ई. माना जाता है। सन् 1501 ई. (सं. 1558) में दोहे-चौपाइयों में कुतुबन ने 'मृगावती' प्रेमाख्यान की रचना की थी। इसमें चन्द्रनगर के राजा गणपति देव के राजकुमार और कंचनपुर के राजा रूप मुरारी की कन्या मृगावती की सरस प्रेम-कथा वर्णित है। कंचनपुर की राजकुमारी मृगावती पर मोहित राजकुमार प्रेम-योगी बनकर, कई कष्ट झेलने के उपरान्त उसे प्राप्त करता है। इस कार्य में रुक्मिनी नामक सुन्दरी उसके विपदा के दिनों में सहायता करती है। कहानी के अन्त में राजकुमार की आखेट में मृत्यु और दोनों पत्नियों का सती हो जाना चित्रित है। डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, "मृगावती की कथा लौकिक प्रेम की कथा है, जिसमें अलौकिक प्रेम का सम्पूर्ण संकेत है।"

इस काव्य में कवि ने प्रेम के लिए किये गये त्याग और प्रेमिका की प्राप्ति में उठाये गये कष्टों द्वारा प्रतीकात्मक धरातल पर साधक और ईश्वर के सम्बन्ध को स्पष्ट किया है। कथा प्रवाह के बीच सूफी शैली के आधार पर स्थान-स्थान पर रहस्यात्मक चित्रण भी मिल जाता है।

(2) मंझन 'मधुमालती'—कवि मंझन के जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो पायी है। रामपुर स्टेट लाइब्रेरी से इसकी 'मधुमालती' रचना की अधूरी पांडुलिपि प्राप्त हुई है। इस कृति का रचनाकाल सन् 1545 ई. माना जाता है। इसमें कनेसरनगर के राजकुमार मनोहर और महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की प्रेमकथा द्वारा निस्वार्थ प्रेम की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। अप्सराओं द्वारा मधुमालती से साक्षात्कार के बाद राजकुमार मनोहर उसकी प्राप्ति के लिए समुद्र मार्ग से यात्रा कर उसके नगर तक पहुँचना चाहता है। बीच सागर में ही दुर्घटना हो जाती है, किसी तरह बचकर मनोहर जंगल में पहुँचता है, वहाँ राक्षस को मारकर मधुमालती की सखी प्रेमा का उद्धार करता है। प्रेमा के सहारे वह मधुमालती तक पहुँचता है। लेकिन मधुमालती की माता प्रेममंजरी को मनोहर मधुमालती का प्रेम भाता नहीं। इसीलिए वह मधुमालती को मनोहर के प्रेम से विमुख करना चाहती है। जब वह नहीं मानती, तब वह उसे चिड़िया बनने का शाप दे देती है। चिड़िया बनी मधुमालती को ताराचन्द पकड़कर सोने के पिंजरे में बन्द कर देता है। एक दिन चिड़िया ताराचन्द को अपनी प्रेम कहानी सुनाती है। उस कहानी से ताराचन्द द्रवित हो उठता है और उसे लेकर मधुमालती के माता-पिता के पास ले जाता है। वहाँ माता उस पर जल छिड़क कर फिर से 'मधुमालती' के रूप में बदल देती है। आगे योगी के रूप में मनोहर भी आ जाता है और ताराचन्द के प्रयास से मनोहर-मधुमालती का विवाह हो जाता है। ताराचन्द प्रेमा पर मोहित होता है। आगे की पांडुलिपि फट गयी है। लेकिन सम्भव है कि प्रेमा—ताराचन्द का विवाह वर्णित हुआ हो। प्रस्तुत कृति में वर्णनात्मकता का अंश अधिक है। प्रेम के चित्रण में विरह को यहाँ बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विषय-निरूपण, भाषा, सौन्दर्याभिव्यक्ति, भावाभिव्यंजना-शैली, अलंकार-विधान आदि की दृष्टि के यह एक उच्चकोटि की कृति मानी जा सकती है।

(3) उसमान-चित्रावली—ये जहाँगीर कालीन सूफी कवि थे। चिश्ती सम्प्रदाय के हाजी बाबा इनके गुरु थे। इनको 'चित्रावली' नाम का प्रेमाख्यान प्राप्त हुआ है, जिसका सम्पादन श्री जगमोहन वर्मा ने किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इस रचना का रचनाकाल 1613 ई. है। यह प्रेमाख्यान जायसी के पद्मावत का अनुकरण करता हुआ जान पड़ता है। कवि ने उन सभी विषयों का अपनी रचना में समावेश किया है, जो पद्मावत में है। कथानक सर्वथा कल्पित है, पर उसे बड़ी कुशलता के साथ सूफी साधना का आध्यात्मिक स्वरूप से जोड़ा गया है। इसमें नेपाल के राजा धरन्नीधर पँवार के पुत्र सुजान और रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली की प्रेमकथा वर्णित है। यहाँ दोनों के मन में प्रेमांकुर एक दूसरे के 'चित्र' देखने से ही उगते हैं। दोनों एक-दूसरे को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं। राजकुमारी के भेजे हुए जोगी के सहारे राजकुमार रूपनगर पहुँचता भी है, लेकिन वहाँ उसे कई यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। कुटनी उसे अन्धा बना देती है और अजगर उसे लील लेता है। लेकिन फिर भी वह बच निकलता है, वनमानुष से आँखों की ज्योति पात

है। इसी बीच सासरगढ़ नगर की राजकुमारी कँवलावती उस पर मोहित हो जाती है और उससे विवाह करती है। बाद में योगियों के सहारे फिर से वह रूपनगर पहुँचता है और कई मुसीबतों का सामना कर चित्रावली को प्राप्त करता है। इधर कँवलावती सुजान के वियोग में व्याकुल हो रही थी। अपने हंस के जरिये वह सुजान को अपना संदेश देती है। सुजान को कँवलावती का स्मरण होता है और वह चित्रावली तथा कँवलावती को साथ लेकर नेपाल आ जाता है। उसमान ने सूफी प्रणित प्रेमतत्त्व की महिमा इस कहानी द्वारा अभिव्यक्ति की है। पद्मावत का अनुकरण करने के बावजूद कवि ने अपनी मौलिकता भी बनाये रखी है। इसकी ओर संकेत करते हुए डॉ. हंस ने लिखा है—"उसमान ने अपनी काव्य-कृति द्वारा विश्व को वही संदेश दिया है, जो सदैव से सूफी सन्तों का जीवन सूत्र रहा है, किन्तु इनके संदेश देने का ढंग अन्यों से पृथक है। उन्होंने प्रत्येक बात इस ढंग से कही है, जैसे वह बात इनके पूर्व अन्य किसी ने न कही हो। यही कारण है कि 'चित्रावली' पूर्ववर्ती सूफी-काव्य की अन्य कड़ियों से अलग ही दिखाई देती है।" (हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास : डॉ. कृष्णलाल हंसः पृ. 147)।

(4) शेख नबी : ज्ञानद्वीप—शेख नबी जिला जौनपुर के रहने वाले थे। सन् 1619 में उन्होंन 'ज्ञानद्वीप' की रचना की थी। इस प्रेमाख्यान में राजा राय शिरोमणि के पुत्र ज्ञानद्वीप और राजकुमारी देवयानी के प्रेम की कथा वर्णित है। इस काव्य में नायक के स्थान पर नायिका की सखी का योगी वेश धारण करना, नायिका की सहचरी का नायक से विवाह नहीं होना आदि नये प्रयोग मिलते हैं। इसमें नायक की खोज के लिये स्वयंवर का आयोजन होता है। कथा का अन्त सुखमय है। इसमें भी वर्णनात्मकता का बाहुल्य पाया जाता है।

राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ

हिन्दी रामकाव्य में दो धाराएँ प्रवाहित रही हैं तुलसी प्रणित मर्यादावादी और अग्रदास प्रणित रसिकोपासना रामभक्ति धारा। प्रथम धारा के सर्वेसर्वा तुलसीदास हैं, प्राणचन्द चौहान और हृदयराम तुलसी का ही अनुकरण करते हैं। शेष अधिकांश रामभक्तों ने रसिकोपासना का राम-काव्य लिखा है। आज इस धारा की ढेर सारी रचनाओं की खोज हुई है लेकिन उनमें 'मानस' जैसी कोई प्रभावी रचना नहीं है। ये रचनाएँ उपेक्षनीय नहीं हैं। उनकी उपलब्धियों पर विचार करने से स्पष्ट होगा कि वे रामकाव्य का एक अंग जरूर हैं पर 'रामचरित' के अनुकूल नहीं हैं, इसीलिए उसे रामकाव्य की मात्र एक विशेषताओं का सम्बन्ध तुलसी प्रणित मर्यादावादी रामभक्ति साहित्य से ही है।

(1) शील, शक्ति और सौन्दर्य से युक्त आराध्य राम का चित्रण—रामभक्ति साहित्य पर रामानन्द के सिद्धान्तों का प्रचुर प्रभाव विद्यमान है। रामानन्द ने राम को परब्रह्म परमात्मा, जगत का सृष्टा रक्षक और पालनकर्ता माना है। रामभक्त कवियों ने भी राम का यही रूप स्वीकार किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने तो उन्हें ऐसी उच्चतम पराकोटि पर

पहुँचा दिया है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि देवाधि देवों की शक्तियाँ भी उनके सम्मुख कुंठित हो जाती हैं। वह निर्गुण भी है और सगुण भी। तुलसीदास के अनुसार अपने विशुद्ध रूप में निर्गुण, निराकार और अव्यक्त रहने वाले उनके आराध्य साधुओं के परित्राणाय दुष्टों के विनाश तथा धर्म के संस्थापन हेतु साकार राम रूप में अवतार धारण करते हैं। वे लौकिक और अलौकिक गुणों से युक्त हैं। रामभक्ति साहित्य के राम का चरित्र वाल्मीकि से लेकर तुलसी से विभिन्न धारणाओं का समन्व के रूप में हुआ है जिसमें शील, शक्तिऔर सौन्दर्य का समन्वय है। सौन्दर्य में वे त्रिभुवन को लजावन हारे हैं, शक्ति से वे दुष्टों का दलन और भक्तों का रक्षण करते हैं, वे अपने शील गुण से लोक को आचार की शिक्षा देते हैं। उन लोकोत्तर गुणों के साथ उनके व्यक्तित्व प्रेम और कर्तव्य, त्याग और औदार्य, रक्षण और रंजन के अद्‌भुत गुणों का सामंजस्य है। कुल मिलाकर वे लोक और लोकोत्तर-जीवन के आदर्श हैं।

तुलसी के परवर्ती रसिक सम्प्रदाय के कवियों ने इसके विपरीत राम को रसिक-स्वरूप में भी वर्णित किया है। लेकिन जन-मानस में राम का यह स्वरूप स्थान नहीं पा सका है।

(2) आदर्शोन्मुख काव्य—राम साहित्य आदर्शोन्मुख साहित्य है। उसमें नैतिक आदर्श, शुद्ध-आचरण और उदात्त भावनाओं का अत्यधिक महत्त्व है। मूलतः रामकथा ही सभी आदर्शों का समुच्चय है। राम-काव्य के पात्र आचार और लोक-मर्यादा की आदर्श व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। राम यहाँ एक आदर्श, पुत्र और आदर्श राजा हैं। सीता, कौशल्या आदर्श पत्नी और माता हैं, भरत, लक्ष्मण शबरी आदर्श भक्त हैं। 'राम-राज्य' एक राजनैतिक आदर्श है। तुलसी का रामचरितमानस भारतीय सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के आदर्शों का आदर्श कोश कहलाया जाता है। तुलसी प्रणित राम-साहित्य का उद्देश्य मात्र धार्मिक नहीं है बल्कि तत्कालीन पतनोन्मुखी जन-जीवन के सभी क्षेत्रों में ऐसे आदर्श प्रस्तुत करना है, जिसका संबल पाकर जन-जीवन उर्ध्वन्मुखी हो सके। इस सन्दर्भ में डॉ. वेंकट शर्मा ने लिखा है—"उन्होंने (तुलसीदास ने) अनेक प्रसंगों में संतों तथा हरिभक्तों के जो लक्षण निर्धारित किये हैं, उन पर यदि समाज चलने लगे तो अनेक प्रकार की विषमतामूलक समस्याओं का अन्त हो सकता है। उनका हरिभक्त समाज उच्च आदर्शों का निदर्शन और श्रेष्ठ गुणों का आगार है।" (भक्ति काव्य का अंतदर्शन, पृ. 215)।

(3) सर्वांगपूर्ण भक्ति-भावना—राम-साहित्य में निहित भक्ति-भावना अपेक्षाकृत उदार है। उनके आराध्य राम हैं किन्तु अन्य देवताओं की पूजा भी उन्होंने अस्वीकृत नहीं की है। राम के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं की स्तुति भी इन कवियों ने की है। राम-भक्त कवियों के राम त्रिलोकातिशायी हैं, उनमें शील, शक्ति और सौन्दर्य का समन्वित्व मर्यादा पुरुषोत्तम है। इसीलिए उनके और आराध्य के बीच सेवक-सेव्य भाव ही उनके अनुकूल है। अतः राम-भक्ति साहित्य में मूलतः दास्य-भाव की भक्ति का सर्वोपरि महत्त्व दिया जाना स्वाभाविक है, लेकिन इसके साथ ही प्रचलित सभी भक्ति-पद्धतियों का सुन्दर

समन्वय राम-भक्ति साहित्य की अपनी विशेषता है। यह तुलसी की समन्वय-भावना का सुफल है। तुलसी प्रणित इस भक्ति-भावना का विश्लेषण करते हुए रामचन्द्र शुक्ल जी लिखते हैं—''गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती। सब पक्षों के साथ उसका सामंजस्य है। न उसका कर्म या धर्म से विरोध है न ज्ञान से। धर्म तो उसका नित्य लक्षण है। तुलसी की भक्ति को धर्म और ज्ञान दोनों की रसानुभूति कह सकते हैं। योग का भी उसमें समन्वय है, पर उतना ही जितना ध्यान के लिए, चित्त को एकाग्र करने के लिए आवश्यक है।....जिस प्रकार उन्होंने लोक धर्म और भक्ति साधना को एक में सम्मिलित करके दिखाया, उसी प्रकार कर्म, ज्ञान और उपासना के बीच भी सामंजस्य उपस्थित किया।'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 137) यही कारण है कि राम-काव्य में निर्गुण भक्ति का नाम-महिमा के साथ नवधा भक्ति के कथा श्रवण, यश-कीर्तन, नाम-स्मरण, चरण-सेवा, चरण-वंदन, सख्य-प्रीति और आत्मसमर्पण आदि विविध सेवा भावना का समावेश हुआ है। प्रपत्ति के 'अनुकूल्यस्य संकल्प' प्रतिकुल्यस्य वर्णनम्, रक्षिष्यतीति विश्वास, गीप्तृत्वे वरणं. आत्मनिक्षेप तथा कार्पण्ये इन छः अंगों का भी अपनाव रामकाव्य में है। इस तरह रामभक्त कवियों की भक्ति पद्धति वैधी कोटि में आ जाती है।

(4) लोक-जीवन का अंकन—रामकाव्य में एक ओर लोकजीवन का व्यावहारिक-पक्ष मूर्तिमान हो उठा है, तो दूसरी ओर तत्कालीन-पतितोन्मुख जन-जीवन का अंकन भी हुआ है। इस संदर्भ में तुलसी के मानस और कवितावली को देखा जा सकता है। मानस तथा अन्य तुलसी काव्य में लोकजीवन में प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक अनुष्ठानों तथा सांस्कृतिक आयोजनों के कई चित्र मिलते हैं, जिनमें वर्णाश्रम-धर्म की व्यवस्था और षोडस संस्कारों की क्रियाएँ समन्वित हैं। रामचरितमानस की रामकथा में ऐसे असंख्य प्रसंग हैं, जिनमें विविध लोक-जीवन के भिन्न-भिन्न अंगों का निरूपण हुआ है।

तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक सामाजिक पतन का लोक-जीवन पर पड़े प्रभाव का चित्रण भी रामकाव्य में प्राप्त होता है—

''गोड़ गँवार नृपात महि जमन महामहिपाल।
साम न दाम न भेद कलि केवल दंड कराल॥''

यह कलियुग-वर्णन के बहाने तत्कालीन मुगल साम्राज्य का ही वर्णन है। जनता की आर्थिक दशा का चित्रण करते हुए तुलसी लिखते हैं—

खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीधमान सोचबस
कहै एक एकन सो कहाँ जाई का करि॥

धामिर्क-सामाजिक परिस्थिति की पतनावस्था का चित्रण करते हुए वे लिखते हैं—

आश्रम बरन धरम बिरहित जग लोक बेद मरजादा गई है।
प्रजा पतित पाषंड परत अपने-अपने रंग रई है॥

तत्कालीन निर्गुण-सन्त और सूफी सन्तों के मोह कल्पित पंथों की व्यर्थता स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं—

''साखी सबदी दोहरा कहि किहनी उपखान।
भगति निरूपहिं भगत कलि निंदहि बेद पुरान॥
श्रुति संमत हरि भगति पथ संजुत बिरति विवेक।
तेहि न चलहिं नर मोहबस कल्पहिं पंथ अनेक॥''

(5) नव रसों का परिपाक—रामभक्ति साहित्य में वर्णित रामकथा बहुत व्यापक है, जिसमें जीवन की विभिन्न अवस्था एवं मानव-भावों की अभिव्यक्ति है। इसीलिए प्रायः सभी रसों का परिपाक उसमें हुआ है। रामभक्ति मूलतः सेवक-सेव्य की भक्ति होने से इस साहित्य का प्रमुख रस निर्वेदजन्य शान्त है। रामकथा के विभिन्न दृश्यों में अन्य रसों की निष्पत्ति होती है। विभिन्न युद्ध-दृश्य चित्रण में वीर के साथ ही रौद्र, करुण, भयानक और कहीं-कहीं वीभत्स रस की निष्पत्ति हुई है। परशुराम-लक्ष्मण-संवाद, सूर्पणखा के विवाह प्रस्ताव जैसे दृश्यों में हास्य रस अपेक्षाकृत कम मात्रा में प्रयुक्त होना स्वाभाविक ही है। विभिन्न अलौकिक घटनाओं में अद्‌भुत रस की निष्पत्ति होती है। राम की बाल-लीलाओं के चित्रण में वात्सल्य रस के दर्शन होते हैं, लेकिन कृष्ण-लीलाओं की सहजता उसमें नहीं है। यद्यपि तुलसी प्रणित रामकाव्य में शृंगार रस का प्रायः अभाव ही है, तथापि राम-सीता का वियोग-शृंगार का चित्रण उसमें भी पाया जाता है। किन्तु यहाँ हर पल यह याद दिलाया गया है, कि यह भगवान की नर-लीला है, इसीलिए विरह-शृंगार का परिपाक सहज-स्वाभाविक रूप में नहीं पाया है। संयोग शृंगार इसमें न के बराबर ही कहा जा सकता है लेकिन अग्रदास प्रणित रसिक-रामभक्ति काव्य में शृंगार ही प्रमुख रस है। इस काव्य मे संयोग-शृंगार का उत्थान चित्रण किया गया है। वन विहार, जल-विहार, वसन्त-विहार हास-परिहास, सखियों का नृत्य, हिंडोला, काम क्रीड़ाओं, साथ ही राम-सीता का नख-शिख वर्णन भी इस काव्य में हुआ है। इस धारा के परवर्ती कवियों के लिए राम और सीत अपनी काम-भावों की अभिव्यक्ति के महज माध्यम बन गये।

(6) प्राचीन और नवीन काव्य रूपों का प्रयोग—राम-काव्य में काव्य-रूपों की विविधता है। इसमे प्रबन्ध और मुक्तक-काव्य-रूप की प्रायः सभी भेदों को अपनाया गया है। रामभक्त कवि साहित्यशास्त्र से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में परिचित थे। इसीलिए परम्परागत शास्त्रीय काव्य-रूपों का प्रयोग उन्होंने किया है, साथ ही लोक-परम्परा के काव्य रूपों को भी अपनाया है। तुलसी का साहित्य इसीलिए तत्कालीन काव्य-रूपों का सर्वांग कोश

कहलाया जा सकता है। 'रामचरितमानस' में महाकाव्य, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल में खंडकाव्य, कवितावली, दोहावली में मुक्तक, विनयपत्रिका में प्रबन्ध मुक्तक का मिश्रण, रामलला नहछू में गीतिकाव्य के प्रायः सभी तत्त्व विद्यमान हैं। परम्परागत काव्य रूपों के अपनाव की दृष्टि से 'मानस' और 'अष्टयाम' में वीरगाथाओं की प्रबन्ध पद्धति, राम-गीतावली, ध्यानमंजरी आदि में विद्यापति की गीत-पद्धति, रामायण, महानाटक और हनुमन्नाटक में संस्कृत राम-काव्य की संवाद पद्धति और रामचन्द्रिका में रीति-पद्धति का अपनाव दृष्टिगोचर होता है। लोक-परम्परा का अपनाव राम-काव्य की अपनी विशेषता है। इस तरह कहा जा सकता है कि काव्य-रूपों की दृष्टि से भी राम-काव्य समन्वयात्मकता से सम्पन्न हुआ है।

(7) अवधी और ब्रज भाषा में अभिव्यक्ति—रामभक्ति-साहित्य अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में अभिव्यक्त हुआ है। फिर भी इसका स्तरीय साहित्य अवधी में ही है। स्वयं तुलसी ने भी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया है। इन दोनों भाषाओं के प्रवाह में राजस्थानी, बुंदेली, भोजपुरी, फारसी तथा अरबी और संस्कृत भाषा के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। तुलसी की भाषा अधिक संस्कृतनिष्ठ है। तुलसी के समान ही इस धारा के अन्य कवियों की भाषा सरल, भावात्मक, रसानुकूल होते हुए भी पांडित्यपूर्ण है, केवल केशवदास की भाषा पांडित्यप्रदर्शन की धुन में बोझिल और क्लिष्ट हो गयी है।

(8) छंद और अलंकार योजना—छंद और अलंकारों की योजना में भी रामभक्ति साहित्य समन्वयवादी रहा है। इसमें विविध छंदों का बड़ी कुशलता के साथ प्रयोग हुआ है। यद्यपि दोहा-चौपाई का मुख्यतः प्रयोग राम साहित्य में हुआ है, फिर भी अन्य परम्परागत सभी छंदों का सुन्दर समन्वय यहाँ प्राप्त होता है, जैसे—वीरगाथाओं के छप्पय, सन्त काव्य के दोहे-चौपाई आदि। इन प्रमुख छन्दों के अतिरिक्त कुण्डलियाँ, सोरठा, सवैया, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी आदि छंदों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। इन छन्दों का प्रयोग केशव को छोड़कर अन्य कवियों ने कला के प्रदर्शन के लिए नहीं बल्कि भावानुकूल रूप में किया है।

जहाँ इस साहित्य में विविध छन्दों का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया गया है, वहाँ अलंकारों के प्रयोग में भी विदग्धता प्रदर्शित की है। जैसा कि इसके पूर्व ही संकेत किया जा चुका है, रामभक्त कवि साहित्य शास्त्र से परिचित थे, इसीलिए उन्होंने अलंकारशास्त्र की अवहेलना की है, प्रायः सभी अर्थालंकारों को उन्होंने अपनाया है। केशवदास ने शब्दालंकारों का भी प्रयोग किया है। इस धारा के कवियों में उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं। अलंकार प्रयोग में भी केशव को छोड़कर अन्य कवियों ने पाण्डित्य और चमत्कार प्रदर्शन के लिए नहीं किया है।

रामभक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि

'रामभक्ति' की प्रतिष्ठा रामानन्द के रामावत सम्प्रदाय द्वारा हुई है। रामानन्द की भ
और विचारधारा से तुलसीदास पूर्णतया प्रभावित थे। उनका 'रामरक्षास्तोत्र' इसी पर
का आद्य ग्रन्थ माना जा सकता है। तुलसी के समय में तथा उनके बाद भी विपुल
में रामभक्ति साहित्य लिखा गया, लेकिन तुलसी का राम-साहित्य इतनी ऊँचाई को छू
कि अन्य कवि और उनकी रचनाएँ उनके सामने बौनी दिखाई देने लगीं। साथ ही अग्र
द्वारा रामभक्ति में रसिक-भक्ति का समावेश हुआ और परवर्ती राम-काव्य में वह गाम्भ
नहीं रही, जो 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' के चरित के अनुकूल थी। परिणामतः तुलसी
परवर्ती समय में लिखित राम-काव्य जनता के मानसपटल पर कोई ठोस छाप नहीं
पाया। फिर भी रामकाव्य-परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में उनका महत्त्वपूर्ण यो
रहा है, उनमें से कुछ कवियों का संक्षिप्त-परिचय यहाँ प्रस्तुत है—

(1) **अग्रदास**—रामानन्द शिष्य परम्परा के कृष्णदास पयहारी के ये शिष्य थे। उ
अविर्भाव काल सन् 1556 के लगभग माना जाता है। रामभक्ति-साहित्य में रसिक-
के प्रवर्तक अग्रदास ही माने जाते हैं। ईसा की सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी में लाल
नाभा अली, बालभक्ति, रामप्रिया शरण, जानकी शरण, प्रेम सखी आदि कवियों ने
सीता के शृंगार-वर्णन को जो राम-काव्य का वर्ण्य-विषय बनाया उसकी प्रेरणा अग्र
की रचनाएँ और कृष्ण-काव्य थी। अग्रदास 'अग्रअली' नाम से रचनाएँ लिखते थे।
मंजरी, अष्टयाम, रामभजन मंजरी, उपासना-बावनी और पदावली इनकी मुख्य रचना
अष्टयाम अथवा रामाष्टयाम में सीता-राम की दैनिक लीलाओं का चित्रण है। ब्रजभा
अत्यन्त सरल रूप का प्रयोग इनकी रचनाओं में पाया जाता है।

(2) **ईश्वरदास**—इनका आविर्भाव काल सन् 1480 ई. लगभग माना जात
इनकी दो रचनाएँ राम-कथा से सम्बन्धित प्राप्त हुई हैं 'भरत मिलाप' और 'अंगद
प्रथमकृति 'भरत मिलाप' में वनगमन के उपरान्त भरत-राम भेंट के प्रसंग की करुण-
काव्याभिव्यक्ति है तो दूसरी रचना 'अंगद पैज' में रावण की सभा में अंगद के पैर ज
डट जाने का वीररस से ओतप्रोत वर्णन किया गया है।

(3) **जन-जसवंत**—ये तुलसीदास के समकालीन महाराष्ट्र के रामभक्त कवि
जाते हैं। नाभादास के 'भक्तमाल' में इनका दो स्थलों पर केवल नामोल्लेख है।
तुलसी से सम्बद्ध उत्तर भारत के साहित्य में इनका परिचय नहीं मिलता, लेकिन महारा
एकनाथ, निकोबा महाराज आदि के साहित्य में इनका उल्लेख पाया जाता है। ह
नामक कवि की 'भक्ति मंज़री' में 'जन जसवंत परिचारिका' प्राप्त होती है, जिसके
छन्दों में जन जसवंत का परिचय 'रामभक्त' और तुलसी शिष्य के रूप में दिया है। य
परिचारिका में प्राप्त इनका 'जीवन-वृत्त' कई चमत्कारों से भरा हुआ है, लेकिन उससे

जीवन-वृत्त की कुछ प्रामाणिक घटनाओं को अलग किया जा सकता है। डॉ. विनयमोहन शर्मा ने कुछ हद तक इनका विस्तृत और सप्रमाणित परिचय दिया है—(हिन्दी को मराठी सन्तों की देन, पृ. 148-150)। इधर हाल ही में डॉ. जसवंत के पुत्र विष्णुदास के पद और संक्षिप्त परिचय के साथ 'रामभक्ति शाखा के अज्ञात कवि' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। उपलब्ध सामग्री में देखा जा सकता है कि जसवंत ने भी तुलसीदास के समान राम के गुणगान, राम का स्मरण करना और उनके चरणों में लीन होना ही जीवन का सर्वस्व मानते हैं।

(4) **नाभादास**—ये भी तुलसीदास के समकालीन रामभक्त कवि थे। इनका आविर्भाव काल सन् 1570 ई. के आस-पास माना जाता है। नाभादास अग्रदास के शिष्य थे। इनकी 'भक्तमाल' प्रख्यात कृति है। इसके अतिरिक्त अष्टयाम तथा रामभक्ति विषयक पद उपलब्ध होते हैं? 'अष्टयाम' की रचना रसिक-भावना को लेकर हुई है, जिसमें राम की विभिन्न क्रीड़ाओं का वर्णन किया गया है।

(5) **केशवदास**—यद्यपि केशवदास भक्तिकालीन कवि नहीं हैं, बल्कि रीति-कवि हैं, किन्तु उनकी 'रामचन्द्रिका' परवर्ती राम-काव्य की एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसका रचनाकाल सन् 1601 ई. है। यह प्रबन्ध काव्य 39 प्रकाशों में रामकथा प्रस्तुत करता है। इसमें राम-चरित्र के मात्र राजसी व्यक्तित्व का अलंकृत-चित्रण पाया जाता है, रामकथा की गहराई का उसमें प्रायः अभाव है। फिर भी वर्णन की चित्रोपमता और छंद-अलंकारों के चमत्कृत प्रयोग की दृष्टि से 'रामचन्द्रिका' एक ऐसा रामकाव्य है, जिसका प्रभाव तुलसी परवर्ती रामकाव्य की अधिकांश रचनाओं पर छंद-प्रयोग, चमत्कारपूर्ण अलंकार बहुल शैली, संस्कृत गर्भित शब्दावली का प्रयोग, राम के ऐश्वर्य एवं विलास वर्णन के रूप में देखा जा सकता है।

(6) **प्राणचन्द चौहान**—सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भिक रामकथा के कवियों में प्राणचन्द्र का नाम उल्लेखनीय है। इनकी 'रामायण महानाटक' रचना वस्तुतः नाटक न होकर पद्यबद्ध संवादों के रूप में रचित प्रबन्ध काव्य है। इसमें वर्णनात्मकता अधिक है और काव्य-सौन्दर्य कम।

इन कवियों के अतिरिक्त सेनापति कृत 'कवित्त रत्नाकर' माधवदास कृत रामरासो और अध्यात्म रामायण, हृदयराम कृत 'हनुमान् नाटक' नरहरि बारहठ कृत 'पोरुषेय रामायण', कपूरचन्द्र कृत 'रामायण' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। रसिक सम्प्रदाय के कवियों ने रामकाव्य की मधुर अभिव्यक्ति की है, जिनमें लालदास कृत 'अवध-विलास' बालभक्ति कृत 'नेहप्रकाश', रामप्रिया शरण कृत 'सीतायण', जानकी रसिक शरण कृत 'अवधी सागर', प्रेमसखी कृत 'जानकी राम को नखशिख' आदि उल्लेखनीय हैं। कृष्णभक्त कवियों में से सूरदास, मीराबाई, नन्ददास, गोविन्द स्वामी, परमानन्द, परशुराम देव, हित

Date ___/___/___

आदिकालीन काव्य । भक्तिकाव्य

* भक्तिकाव्य

प्र.1. भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है। स्पष्ट कीजिए

प्र.2 भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं परिस्थि[तियाँ] बताइए

Ans: भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण [युग] भी कहा जाता है क्योंकि इस काल में विभिन्न भक्ति धाराओं के कवियों ने जो साहित्य रचा वह गुणात्मक दृष्टि से अपिसभाषा की दृष्टि से उच्च कोटि का था भक्ति आंदोलन तत्कालीन परिस्थि[तियों] की देन इसलिए पहले हम संक्षेप में भक्तिकालीन परिस्थितियों पर विचार करेंगे।

भक्तिकालीन परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ
- राजनीतिक परिस्थितियाँ
  - इब्राहिम लोदी के समय काल
  - प्रशासकों का काल
- सामाजिक परिस्थितियाँ
- धार्मिक परिस्थितियाँ

1) **राजनीतिक परिस्थितियाँ** :→ भक्तिकालीन काव्य खंड

Date __/__/__

को राज्य की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया गया है

(i) इब्राहिम लोदी के समय का काल :→ भारतीय जनता पर किए गए अनुदत्त अत्याचारों से परिपूर्ण है इस खण्ड की दो प्रमुख विशेषता रही है।
(अ) राजनीति अस्थिरता और सत्ता का विघटन
(ब) शासकों द्वारा हिन्दुओं का अत्याचार

(ii) प्रशासकों का काल :→ इस काल में साहित्य, संगीत आदि को भी महत्व दिया किंतु औरंगजेब तक आते-आते कट्टरता का प्रभाव फिर से विस्तार पाने लगा।

2) सामाजिक परिस्थितियाँ :→ इस काल खण्ड में भारत समाज और राजसत्ता और अत्याचारों से पीड़ित था। तैमुर के आक्रमण से बाबर के आक्रमण तक भारत की जनता बार-बार लुटी जाती रही। समाज संकीर्ण व्यवस्था और कर्मकाण्ड व्यवस्थाओं में जकड़ता रहा हिन्दु समाज बराबर धार्मिक और जातिगत संकीर्णताओं में बंटता चला गया। अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, छूआछूत, जादू-टोने आदि का प्रभाव पड़ता है
मुस्लिम समाज की परिस्थितियाँ भी कोई अच्छी नहीं था। मुस्लिम समाज और विदेशी मुस्लिम समाज एक नहीं था

Date ___/___/___

शिया- सुन्नी के बीच तब भी मतभेद था सैयद, शेख, पठान, तुर्क आदि अपने को श्रेष्ठ मानते थे। समाज मे महिलाओं की स्थिति बहुत खराब थी। मुस्लिम समाज में अनेक अंधविश्वास और कुप्रथाएँ प्रचलित थी।

3। **धार्मिक परिस्थितियाँ** :-> आदिकाल में भारतीय समाज में हिन्दू, बौद्ध, जैन मुस्लिम आदि अनेक सम्प्रदाओ में विभाजित था।
हिंदुओ में भी शैव, शाक्त स्मार्त, निर्गुण, सगुण जैसे मत, बौद्धो मे मंत्रयान, तंत्रयान, सहजयान वज्रयान जैसे मत नाथ सम्प्रदाय 12 मत प्रचलित थे।
मुस्लिम सम्प्रदाय में भी जरा दूशरा, सूफी, चिश्ती कादरी आदि मत उपासना की कर्मकाण्डीय विधियां मे प्रचलित हो रही थी।
धार्मिक दृष्टि से इस अंधकार मे दक्षिण भारत में अलवार, नयनार संतो ने निष्काम भक्ति भावना का आंदोलन आरंभ किया, जो बढते - बढते उत्तर भारत मे आया जिसका प्रभाव भक्ति साहित्य पर पड़ा।

निर्गुण संत काव्य धारा

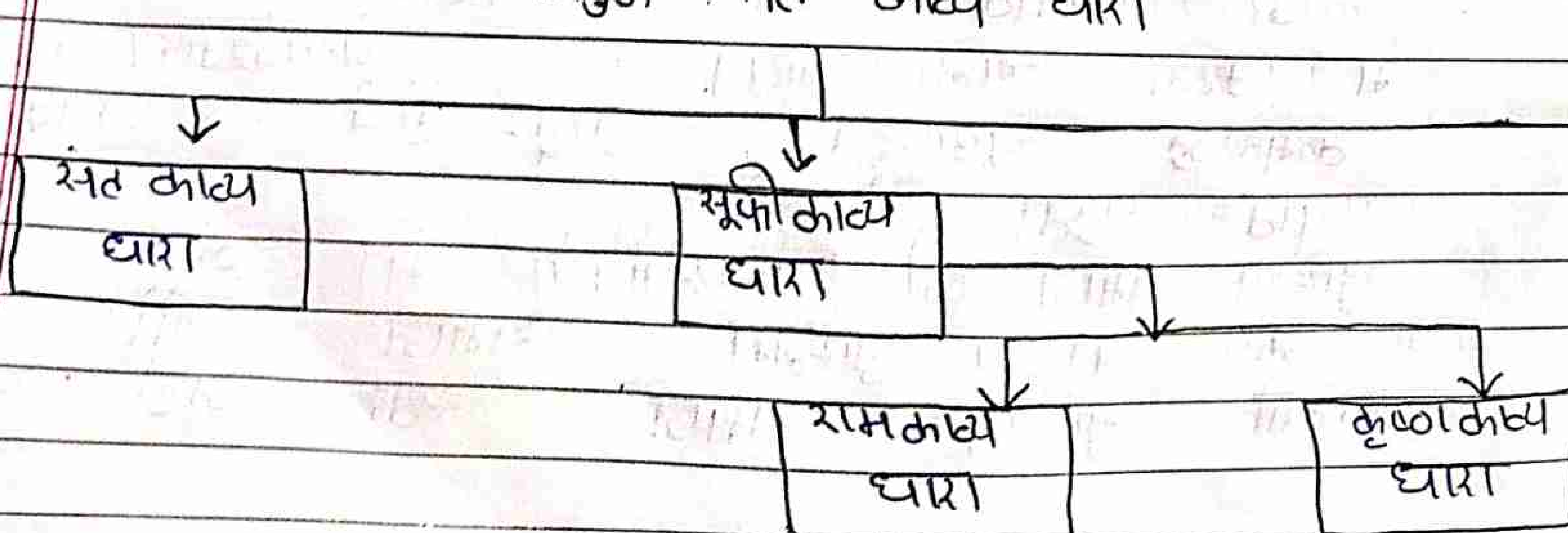

Date ___/___/___

★ निर्गुण संत काव्य धारा :→ निर्गुण संतों में वे कवि आते है जो ईश्वर के निराकर रूप में विश्वास करते है और इसी रूप में आराधना की बात करते है इस धारा के कवियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है

1) **संत काव्य धारा :→** निर्गुण काव्य धारा में सबसे पहले उन संतों की श्रेणी आती है जो दक्षिण में अलवर संतों से प्रभावित थे तथा जिन पर शैव साधना का भी प्रभाव था क्योंकि नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव उत्तर भारत में दूर-दूर तक फैला है।

(i) संत कवियों मे सादा जीवन, सहज जीवन, सामूहिक जीवन, सदाचारी जीवन, परोपकारी जीवन जैसे मानवीय तत्वों पर जो दिया है

(ii) इनकी दृष्टि मे ईश्वर निराकार, निर्गुण सर्वव्यापी है आत्मा उसी का अंग है तथा शुद्ध आचरण सहज साधन द्वारा आत्मा परमात्मा का मिलन हो सकता है

(iii) संत कवियों में अंध विश्वासों, धार्मिक पाखंडों तथा कर्मकाण्डों का विरोध किया

(iv) संत मानव धर्म के परस्पर है जो हिन्दू, मुसलमान, अमीर-गरीब, स्वर्ण-अवर्ण सबको समान मानता है

2) **सूफी काव्य धारा :→** मुसलमानों मे सूफी संत आए जो अपना उदार और मानवीय दर्शन अपने साथ लाये सूफी संत के अनुसार आत्मा पुरुष है परमात्मा

Date —/—/—

स्त्री है परमात्मा को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है प्रेम और सूफी साधना का मार्ग प्रेम है इसलिए इसे प्रेम काव्य भी कहा जाता है
सूफी सम्प्रदायों के अग्रणी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत नामक काव्य में रत्नसेन और पद्मावती के प्रेम की कथा कही जिसमें पद्मावती ईश्वर है रत्नसेन आत्मा है नागमति दुनियादारी है। अलाउद्दीन खिलजी जो पद्मावती को प्राप्त करना चाहता था वह माया और रत्नसेन का मंत्री राघवचेतन शैतान है।
सूफी काव्य धारा को दो मार्गों में विभाजित किया गया है।

(i) <u>राम काव्य धारा</u> ⇒ स्वामी रामानंद सगुण व निर्गुण दोनों प्रकार की भक्ति में उच्च नायक थे। किन्तु उन्होंने राम भक्ति की स्थापना की। उनके शिष्य कबीर ने राम भक्ति को निर्गुण में ढाला तो दूसरे शिष्य स्वामीतुलसीदास ने राम को सगुण रूप में देखा और राम भक्ति की स्थापना की।

(ii) <u>कृष्ण काव्य धारा</u> ⇒ रामानुजन से प्रभावित होकर रामानंद ने रामभक्ति को प्रचारित किया तो वल्लभाचार्य, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी तथा महाप्रभु चैतन्य ने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। भक्तिकाल में राम और कृष्ण को देव रूप में लगभग एक ही समय स्वीकृति मिली। किन्तु कृष्ण भक्ति को लोकप्रियता अधिक प्राप्त हुई।

इसका कारण है की तुलसी ने रामभक्ति ने जिस मर्यादित रूप को स्थापित किया गया है। उसकी तुलना में कृष्ण भक्ति का माधुर्य अधिक आकर्षित करने वाला था हिन्दी में कृष्ण भक्ति के प्रसार का श्रेय वल्लभाचार्य को दिया जाता है

प्र.3. सगुण भक्ति काव्य और निर्गुण भक्ति काव्य में मुख्य अंतर स्पष्ट कीजिए

निर्गुण भक्ति काव्य

↓

निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास	लौकिक प्रेम द्वारा आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति	धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों का विरोध	जाति प्रथा का विरोध	हिन्दु मुस्लिम एकता का समर्थन

सगुण भक्ति काव्य

↓

सगुण भक्ति का विशिष्ट रूप	अवतार वाद में विश्वास

॥ निर्गुण भक्ति काव्य की विशेषताएँ

ढोला मारू रा दूहा

'ढोला मारू रा दूहा' राजस्थान का प्रसिद्ध लोककाव्य है। ढोला और मारू की प्रेम कथा राजस्थान में बहुत लोकप्रिय रही है क्योंकि यह काव्य मानव की कोमल भावनाओं का अंकन करता है। इस प्रेम गाथा में संयोग तथा वियोग शृंगार के मधुर तथा मर्यादित चित्र अंकित हैं।

यह राजस्थान का जातीय काव्य है, इसे लोक काव्य भी माना जाता है। इस काव्य का नायक ढोला कछवाहा वंश के राजा नल का पुत्र था जबकि मारवणी पूगळ के राजा पिंगळ की पुत्री थी। वह अनिंद्य सुन्दरी थी। ढोला और मारवणी की यह प्रेम कथा लोगों के कंठ का हार रही है। समय-समय पर इसमें परिवर्तन-परिवर्धन होते रहें हैं। अतः यह किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं है।

यह काव्य दूहा छंद में लिखा गया है। कुछ संस्करणों में कुशललाभ की चौपाइयाँ और गद्य वार्ता भी मिलती है किन्तु इसका प्रमुख छंद दूहा ही है।

इस कथा की ऐतिहासिकता को लेकर विद्वान मतैक्य नहीं हैं। इसका कारण यह है कि समय-समय पर इस काव्य में दूहा जुड़ते-घटते रहे हैं। किन्तु यह एक भावना प्रधान काव्य है जिसका उद्देश्य प्रेमीजन की कोमल भावनाओं को व्यक्त करना है। 'ढोला मारू रा दूहा' एक मार्मिक काव्य है जिसमें विरह की सभी दशाओं का मार्मिक वर्णन है। इस काव्य की भाषा राजस्थानी है तथा इस भाषा में कोमलता और माधुर्य की बहुलता है। इस प्रकार यह राजस्थानी का एक गीतिकाव्य है।

इसका रचनाकार कुशललाभ को माना जाता है।

Date 26/10/2024

अध्याय - 1

आधुनिक काव्य / भक्तिकाव्य

कवि - ढोला मारू रा दूहा

जे जीव्या तिन्हां (1) तणाँ, तन ही माँहि वसंत। - - - - - -
धराइ दूध पयोरहे, बालक किम कांढंत ॥

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि "ढोला मारू रा दूहा" से अवतरित है।

संदर्भ ⇒ उक्त वाक्य में कवि मारवणी स्वप्न में पति के दर्शन करती है उसको देखकर उसकी सखी कहती है की इनने अपने प्रियतम को देखा है तो उसके मन में प्रेम पैदा हो गया है।

व्याख्या ⇒ कवि कहता है की जो जिसका जीवन होता है, वह उसके शरीर में ही बसता है स्तनों से दूध की धाराओं को बालक किस प्रकार निकाल लेता है, क्योंकि दूध ही तो उसका जीवन होता है कहने का भाव यह है की प्रियतम अनदेखा होने पर भी प्राणों में समाया रहता है

विशेष :→

(i) राजस्थानी भाषा और दूहा छन्द में कवि ने मारवणी के हृदय में समाई अपने प्रियतम के प्रति सच्ची भक्ति की ओर संकेत किया है।

Date ___/___/___

(ii) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। वर्णन में मनोवैज्ञानिकता है।

(2)

चहुँ दिस दामिनि सघन घन. पीउ तजी तणि गर।
मारु मर चातग भर . पिउ करत पुकार ।।

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत दोहा राजस्थान के प्रसिद्ध लोक काव्य "ढोला मारु रा दूहा" से उद्धृत है

संदर्भ ⇒
यहाँ कवि ने मारवणी की मनः स्थिति का वर्णन किया गया है पीहे पपीहे की आवाज को सुनकर उसकी मनोभावना दुखी होती है।

व्याख्या ⇒
विरहिणी मारवणी पपीहे से कहती है की हे पपीहे। तेरी यह पिउ- पिउ की आवाज मुझे विरहिणी को नहीं , पर्वत को भी जला देने वाली है। इसलिए यह रहेगा की तु इस स्थान को छोड़कर कहीं दूसरी जगह चले जा। तेरी आवाज सुनकर मुझे मेरे प्रिय की याद आती रहती है जिससे मुझे अत्याधिक पीड़ा होती है। मारवणी कहती है की वर्षा ऋतु के वातावरण में आकाश के चारों दिशाओं में बादल आच्छादित है। और उन बादलों में बिजली चमक रही है। ऐसे माहौल में मेरा प्रिय मुझे छोड़कर दूर चला

Date ___/___/___

गया है। उसके वियोग में मारवणी प्रिय- प्रिय पुकारती हुई मरकर चेतक हो गया और अब वही चातक के रूप में पुकार करती है।

विशेष ⇒

(i) मारवणी की विरह वेदना का कवि ने हृदय स्पर्शी वर्णन किया गया है

(ii) इसमें अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

(3)

ढाढी एक संदेसडउ प्रीतम कहिया जाइ।
सा धण बलि कुइला भई, भसम ढंढोलिस आइ॥

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के 'ढोला मारू रा दूहा' से उद्धरित है।

संदर्भ ⇒

उक्त पंक्तियाँ ढोला मारू रा दूहा राजस्थान का प्रसिद्ध लोककाव्य है जिसमें ढोला मारू के प्रेम का बड़ा सरस एवं रोचक चित्रण किया गया है।

व्याख्या ⇒

मारवणी, राहगीर के संदेश देते हुए कहती है की ढाढी अर्थात राहगीर तू मेरे एक संदेश को मेरे प्रियतम ढोला को

Date ___/___/______

जाकर कह आ । तू प्रियतम ढोला से कहना कि उनके बिना उनकी प्रियतमा अर्थात मारवणी जलकर कोयला हो गई है, अब तो वह आकर उसकी भस्म ढूंढ ले। अर्थात प्रियतम का विरह मेरे लिए अब असह्य हो रहा है, यदि उन्होंने याद आने मे विलम्ब किया तो मेरी जीवन-लीला समाप्त हो जायेगी।

विशेष ⇒

(i) काव्यांश में मारवणी की विरहजन्य पीडा का बडा ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

(ii) काव्यांश में वियोग- शृंगार की प्रधानता है

(iii) अनुप्रास, उपमा व रूपक अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

प्र.1. 'ढोला मारू रा दूहा' एक सरस लोकगाथा है। - इस उचित उक्ति का विवेचन कीजिए।

अथवा

'ढोला मारू रा दूहा' को लोकगीत कहा जा सकता है' इस कथन के सम्बन्ध में सार्थक एवं सप्रमाण विचार व्यक्त कीजिए।

Ans. 'ढोला मारू रा दूहा' एक प्रेमगाथा है। इसके सम्बन्ध अनेक विद्वानों के अलग - अलग विचार है। कुछ विद्वान इस काव्य को लोकगीत की संज्ञा प्रदान करते है तो कुछ इसे लौकिक खण्डकाव्य के रूप में मानकर इसके महत्व

को स्वीकार करते है लेकिन यह एक ऐसी प्रेमगाथा है जिसमें प्रेम के विविध पक्ष उदय और विकास रूप में समाये हुए है। कही संयोग की छटा मन को आह्लादित करती है तो कही वियोग कष्टदायी सिद्ध होता है। इसमें गेयता के साथ-साथ कथानक का क्रमिक विकास और समाठित विधान भी है।

★ **लोकगाथा का स्वरूप और उसकी विशेषताएँ ⇒**

लोकगाथा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए अनेक विद्वानो ने इसकी परिभाषाएँ दी है पाश्चात्य विद्वानो ने इस सम्बंध में बडी सूक्ष्मता और गंभीरता से विचार किया है। रॉबर्ट ग्रेम्स ने इसका सम्बंध 'बैलेड' शब्द से माना है जिसका अर्थ से गीत से है जो नृत्य के साथ-साथ गाया जाता था, लेकिन बाद में इसका प्रयोग ऐसे गीत के लिए जाने लगा जिसे जनता का एक समूह गाता हो।

★ **लोकगाथा की प्रमुख विशेषताएँ :→**

लोकगाथा की प्रमुख विशेषता को निम्न प्रकार प्रकार वर्णित किया जा सकता है इन विशेषता को ढोला मारू रा दूहा, पर भी लागु करके देखेंगे इस लोकगाथा में कौन-कौन सी विशेषताएँ घटित होती दिखाई देती है-

(1) **अज्ञात रचयिता का होना ⇒**

यह लोकगाथा की सबसे विशेषता होती है। लोकगाथाओ के रचनाकारो का नाम

Date ___/___/______

प्राय: अज्ञात ही होता है। इसी प्रकार उत्तर भारत में पाये जाने वाली लोकगाथाओं के नाम भी अज्ञात है। इसका अर्थ यह नहीं है इनकी रचना किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं है। यह तो निश्चित ही है कि आरंभ में इन लोकगाथाओं की रचना में अन्य कई लोगों का सहयोग भी जुड़ जाता है।

2) प्रमाणिक मूलपाठ का अभाव ⇒

लोकगाथाओं का कोई निश्चित मूलपाठ नहीं होता है, क्योंकि वे अपने मौखिक रूप में ही जनमानस में प्रचलित रहती है। इस दृष्टि से स्थान-परिवर्तन के आधार पर इनके स्वरूप में कुछ न कुछ परिवर्तन होना संभव रहता है।

3) मौखिक आवृति ⇒

लोकगाथाओं का कोई निश्चित मूलपाठ नहीं होता है, क्योंकि वे अपने गेयता के गुण के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान गायी जाती रहती है। यदि इस दृष्टि से ढोला मारू रा दूहा' काव्य को देखा जाए तो उसमें भी प्रवृति दिखलाई देती है

4) लम्बा कथानक ⇒

लोकगाथा का कथानक गेय होता है। अत: उसका लम्बा होना स्वभाविक है। चूंकि यह मौखिक परम्पराओं का सफलतापूर्वक निर्वहन करती है। इसलिए भी इसके कथानक परिवर्तन और परिवर्द्धन होना स्वभाविक होता है

Date ___/___/___

5। संगीत और नृत्य का समन्वय -

गेयता की प्रधानता होने के कारण लोकगाथा में संगीत और नृत्य का समन्वय होना स्वभाविक होता है ग्रामीण क्षेत्रों में इनका गायन नृत्य और संगीत के मध्य ही स्वभाविकता के साथ चला आया है

6। स्थानीय की प्रचुरता ⇒

लोकगाथा में स्थानीयता का प्रचुर पुट देखने को मिलता है। यह गाथा जिस विशेष से जुड़ी होती है, उस क्षेत्र की लोक-संस्कृति इसमें स्वभाविक रूप से चित्रित होती है।

7। उपदेशात्मक प्रवृति का अभाव ⇒

लोकगाथा में उपदेशात्मक प्रवृति का अभाव पाया जाता है क्योंकि ये गेयता के आधार पर लम्बी चलती है। इसलिए उनमें उपदेश या शिक्षा देना संभव नहीं होता है।

★ निष्कर्ष ⇒

संक्षेप में उपयुक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि लोकगाथा की वर्णित विशेषताओं में से एक-दो विशेषताएँ चाहे "ढोला मारु रा दूहा" काव्य में मिलती हो लेकिन ढोला मारु रा दूहा एक लोकगाथा काव्य है। इसके सम्बध में ही यही मानना उपयुक्त है।

Date 27/10/2024 Ch- 1

ढोला मारू रा दूहा

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1. राजस्थान के प्रसिद्ध लोकगाथा का नाम लिखिए
उत्तर "ढोला मारू रा दूहा"।

प्र.2. ढोला मारू रा दूहा के रचयिता कौन है?
उत्तर ग्यारवी शताब्दी में रचित राजस्थान का प्रसिद्ध लोकगाथा काव्य ढोला मारू रा दूहा के रचयिता के कवि छल्लोल है। मूलतः दूहों में रचित इस लोक काव्य में सतरवी में कुशललाभ वाचक ने कुछ चपाइया जोड़कर विस्तार दिया।

प्र.3. यह काव्य किस छंद में लिखा गया है?
उत्तर दूहा छंद में (दोहा)

प्र.4. ढोला मारू रा दूहा लोक काव्य की भाषा कौनसी है?
उत्तर राजस्थानी

प्र.5. मारवणी ने अपने पति ढोला को किन-किन माध्यमों से संदेश प्रभावित किया।
उत्तर मारवणी ने अपने पति ढोला को संदेश भेजने के लिए कुरजा नामक पक्षी और दाढ़ियो के माध्यम से संदेश भेजा।

प्र.6. मारवणी ने बरसात को किन-किन के लिए खुशी का प्रतीत बताया है।

...ना करना है।
...काव्य है जिसमें विरह की सभी दशाओं का मार्मिक
...राजस्थानी है तथा इस भाषा में कोमलता और माधुर्य

Date ___/___/___

उत्तर राजा, प्रजा, गुणगान, कवि, पण्डित और वृक्षों के लिए मारवणी ने बरसात को खुशी या बरसात का प्रतीक बताया है।

प्र.7. ढोला मारू रा दूहा लोक काव्य का संचय परिचय दीजिये

उत्तर ढोला और मारू कि प्रेम कथा राजस्थान की खेती प्रसिद्ध इस प्रेम गाथा में सयोग व वियोग श्रृंगार के मधुर तथा मर्यादित चित्र अंकित है यह राजस्थान का जातियाँ काव्य है इसे लोक काव्य भी माना जाता है। जिसे इतिहास में ढोला के नाम से जाना जाता है।

प्र.8. मारवणी को सावन का महीना कष्टप्रद क्यों लगता है

उत्तर सावन के महीने में मारवणी को पति ढोला उनके पास नहीं है। और इस महीने में मूसलाधार बारिश व बिजलियाँ कडकती है।

प्र.9. मारवणी ने अपने पति से मिलने के लिए ईश्वर से क्या प्रार्थना करती है।

उत्तर मारवणी अपने पति से मिलने के लिए ईश्वर से पेम्न मारती है वह जन भी मिलना चाहे मिल सके।

प्र.10. विरहिणी पपीहे की चोंच कटवाने के लिए क्यों कहती है

उत्तर विरहिणी पपीहे की चोंच कटवाने के लिए इसलिए कहती है क्योंकि रात में पपीहे के बोलने से उसे प्रिय की याद आती है जिससे उसे अत्यधिक पीड़ा होती है

Page No. ___

Date 28 /10 /2024

Ch-2

विद्यापति- बसी माधुरी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1. विद्यापति का जन्म कब हुआ
उत्तर विद्यापति का जन्म 1380 के पास- हुआ था

प्र.2. विद्यापति किस तरह के कवि है तथा इसकी पदावली मे कौनसे विषय वर्णित है।
उत्तर भक्त एवं श्रृंगारिक कवि है। तथा इनकी पदावली में प्रेम व श्रृंगार विषय वर्णित है

प्र.3. विद्यापति की पदावली पर किस प्रकार का प्रभाव लक्षित है।
उत्तर विद्यापति की पदावली पर जयदेव की गीतगोविन्द का प्रभाव लक्षित है।

प्र.4 विद्यापति में कितनी भाषाओं में काव्य रचना की।
उत्तर विद्यापति ने तीन भाषाओं में काव्य रचना की-
(i) मैथिली
(ii) संस्कृत
(iii) अवहट्ट

प्र.5. विद्यापति का निधन कब हुआ
उत्तर 1460 ई. में।

Unit - 2

Date 24 / 10 / 2024

आधुनिक काव्य

अध्याय - 2

विद्यापति - बंशी माधुरी

साहित्यिक परिचय

जन्म - 1380 ई.
मृत्यु - 1460 ई.
जन्म स्थान - बिपसी गाँव मधुबनी गाँव (बिहा
पिता का नाम - गणपति ठाकुर
पत्नी का नाम - चन्दन देवी
गुरु का नाम - पंडित हरि मिश्र
रचना - बंशी माधुरी
भाषा - अवधी, संस्कृत व अवहट्ट

पद

(1) सनु रसिया • अब न बजाऊँ बिपिन रसिया ----------
---------- धन्य - धन्य तोर भाग गोआरिनी, हरि भजु हृदय हुलसिया ।।

प्रसंग :→
प्रस्तुत अवतरण कवि विद्यापति द्वारा रचित बंशी माधुरी से उद्धृत है।

संदर्भ :→
इसमें नायिका अर्थात राधा श्रीकृष्ण से बाँसुरी न बजाने का आग्रह कर रही है। इसमें कवि का भक्ति भाव व्यक्त हुआ है

Date ___/___/______

व्याख्या ⇒ राधा कहती है की (रसिया) कृष्ण सुनो, अब वन में मुरली मत बजाओ, मैं सदा तुम्हारे व चरणों की दासी बनकर रहूँगी। तुमसे प्रेम करने के बाद मैं क्या हो गई हूँ। मैं नही जानती। तुम हमारे प्रेम का सबर प्रकट मत करो। व्यथ में ऐसा प्रतीत होता है। अर्थात हृदय होती तो ऐसा लगता है। जैसे की मेरे हृदय के कामदेव के सर्पो ने डस लिया हो। नायिका राधा कहती की है श्रीकृष्ण चाहे संसार में कितनी भी बदनामी हो परन्तु मैं तुम्हारे शरण का कदापि नही करूँगी। कवि विद्यापति कहते है की हे रमणीय में श्रेष्ठ राधे सुना तुम्हारे मुख मे तो चंद्रमा जीत लिया है। भवानी तुम्हारे भाग्य जीत लिया है। मवानी तुम्हारे भाग्य मावित करो धन्य हो तुम उल्लास पूर्वक

विशेष ⇒
(i) मदन भजुगम में रूपक अलंकार प्रयुक्त हुआ है।
(ii) राधा की अनुरक्ति का लीका अनुभव-अनुरूप चित्रण किया है।
(iii) हरि भुज हृदय हलारिया कवि ने आत्मक संकेत दिया है

(2)

सखि हे कतहु न देखि मधाई - ।.................
.... बालम बिलासि समाजे ।।

Date / /

प्रसंग → प्रस्तुत अवतरण विद्यापति द्वारा रचित पदावली से उद्धृत है।

सन्दर्भ → इसमें श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर राधा विरह से पीड़ित होकर अपनी सखी से दुख बताती है।

व्याख्या → राधा अपनी सखी से कहती है कि हे सखी मैं प्रियतम कृष्ण को कहीं भी देख नहीं पा रही परन्तु उन्हें कहीं भी देख नहीं पाई। उन्हें मथुरा से वापस आने पर जो तिथि को स्मरण करके मेरा शरीर विरह-वेदना से तड़प रहा है। मेरा मन भी व्याकुल हो रहा है। क्योंकि आने की अवधी समीप आ रही है, प्रियतम कृष्ण वैशाख माह की एकादशी तिथि को वापस आने की तिथि निश्चित हो गई है। जाते समय उन्हें मुझे छूकर स्पष्ट कहा था तो इससे मुझे उनकी बात पर पूरा विश्वास हो रहा है।

कौन कहती है कस्तुरी-चन्दन लेप कुमकुम चंद्रमा लेप, शीतल होते हैं। अर्थात विरहणी के लिए यह सारे उपद्रव सुनकर कार्य होते हैं। इस कारण प्रियतम के वियोग में मेरे लिए भी यह पदार्थ आग बरसा रहे हैं।

सच है की विपत्ति में भले व बुरे की पहचान हो जाती है। कवि विद्यापति कहते है युवतियों मे ज्येष्ठ राधे है। सून आज तुम मेरे मन में पछताव मत करो। क्योंकि तुम्हारे प्रियतम कृष्ण साथ रहे कर विरहव्यवस्था को मिटा देंगे अर्थात से भेंट अवश्य हो जाये अर्थात विरह समाप्त हो जायेगी।

विशेष ⇒

(i) व्यंगात्मक अनुभूतियों की भी व्यंजना के लिए उल्लेख हुआ है किन्तु अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में नवीनता एवं मौलिकता है

(ii) रूपक अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

(3)

बिरह- व्याकुल वकुल तरु-तर - कवि विद्यापति मान रे ।।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत अवतरण कवि विद्यापति द्वारा रचित है

संदर्भ ⇒

इसमें राधा ने "मान" किया फलतः कृष्ण व्यतीत है। राधा कृष्ण की दूती कथा को कृष्ण की विरह को व्यंजित कर रही है और राधा से मान को छोड़ने का आग्रह कर रही है।

Date ___/___/___

व्याख्या ⇒ यह कहती है की हे राधा! मैंने मौलि वृक्ष के नीचे व्याकुल कृष्ण को देखा है। उनके नीले कमल जलधारा से बह रहे है। वे चंदन पंक, कस्तुरी, कमल और कपूर को देखकर तुम्हारी याद आने से तथा विरह - व्यथा के जाने से इतने व्यथित हो जाते है कि पृथ्वी पर गिर पड़ते है जब मंद, सुगंध, शीतल मलय वायु बहती है तो उन्हें ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रत्यन्नशील प्रलय आग उनके शरीर को जलाती है। उनके अत्यधिक कंपन के कारण उनकी चिकनी मोतियों की माला देखकर गिर पड़ी है। जो ऐसी लगती है की मानो वायु की चंचलता से तमाल वृक्ष से फूलों का समूह टूटकर गिर पड़ा है। यह धड़क, छंद, सरस सुनने में अत्यधिक सुखदायी लगता है।

विशेष ⇒

(i) कृष्ण विरह का वर्णन परम्परागत है

(ii) अनुप्रास, उपमा, रूपक प्रयुक्तप्रशंसा अलंकार प्रयुक्त हुए है।

(५)

नन्दक - नन्दक कदम्बी तरुतरे - - - - - - - - -
- - - - - - - - - ~~धीरे~~ धीरे वंदह नैंद किसोरा ॥

Date ___/___/______

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत अवतरण कवि विद्यापति द्वारा रचित है

संदर्भ ⇒ कवि उस घटना का वर्णन करते है जब श्रीकृष्ण राधा की प्रतीक्षा में बैठे हुए है और के पहुँचने पर व्याकुल हो रही है श्रीकृष्ण की इस व्याकुलता को कोई सखि राधा से कहते है।

व्याख्या ⇒
हे राधे नन्दपुत्र श्रीकृष्ण कदंम वृक्ष के नीचे निर्धारित समय पर आ मिलने की प्रतीक्षा में धीरे- धीरे मुरली बजा रहे है उनकी मुरली के स्वर एकान्त स्थान पर मिलन का संकेत दे रहे है। राधे तुमसे अनुरक्त होकर श्रीकृष्ण प्रतीक्षण विकल्प हो रहे है। इसलिए यह यमुना के तट पर उपवन में उद्दिपन होकर उसी जोर बारह बेचते के लिए आती- जाती प्रत्येक नारी को तुम्हारे विषय में पूछ रहे है। राधे मेरी तुम छोटी- सी बात सुन लो तुम भी बुद्धिमति हो और श्रीकृष्ण भी चतुर है इसलिए तुम्हारे परस्पर प्रेम होना स्वभाविक व उचित है। कवि अन्यथा कहते है की तुम श्रीकृष्ण की वंदना करो अन्यथा उनके पास जाकर निश्चित स्थान पर मिलो और प्रसन्नपूर्वक रहो।

Date ___/___/___

8

विशेष ⇒

(i) यह पद्य कवि ने मंगला चरण की तरह गाया है

(ii) इसमें कवि ने अपने असहाय अथवा अराध्य की वेदना के साथ ही काव्य के प्रतिपदक विषय का संकेत भी किया है

(iii) अनुप्रास व उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

प्र.7. विद्यापति प्रेम व श्रृंगार के कवि है इसकी पुष्टि करते हुए भाव पदों की विशेषता बतायें।

उत्तर: विद्यापति का परिचय ⇒ मैथिल कोकिल कवि विद्यापति का जन्म मरण दोनों की विवाद रूप रही है। समकालीन राजाओं की तिथियों के आधार पर कुछ विद्वानों का माना है की लगभग एक सौ तीस वर्षों तक जीवित रहे है उनका जन्म 1380 के आस- पास तथा उनकी मृत्यु 1460 ई. के आस- पास हुई। उनके पिता पण्डित ठाकुर अपने समय के सांस्कृतिक के प्रसिद्ध विद्वान और वह मैथिल नरेश गणेश्वर दास के राजसभा के सदस्य बने

बचपन से विद्यापति कुशाग्र बुद्धि के थे महाराज कवि शिव सिंह की उन पर विशेष कृपा रही है क्योंकि वे स्वयं भी साहित्य प्रेमी थे। मैथिल पदावली की रचना करने के कारण वह "मैथिल कोकिल" के नाम से विख्यात है।

Date __ / __ / __

<u>विद्या की प्रमुख रचना</u>

मैथिली	प्राकृत । संस्कृत	अपभ्रंश	अवहट्ट
पदावली	शैलिकाव्य	कीर्तिलता	कीर्तिपताका
		वीर गाथा सकल	शृंगारिक रचना

- <u>वीर गाथा काव्य</u>
वीरांगना तथा वीरांगनाओं के शृंगार रस का वर्णन किया गया है

- <u>विद्यापति प्रेम व शृंगार के कवि के रूप में</u> ⇒ विद्यापति की पदावली का प्रधान प्रतिपाद्य है कवि ने शृंगार के दोनों पक्षों का अनन्त मार्मिक निरूपण अपनी पदावली प्रस्तुत किया है यदि कवि ने संयोग के वर्णन में अपनी रुचि दिखाई है तो वियोग मे भी अपनी मार्मिकता को छोड नहीं सका। विद्यापति के शृंगार पदों को राजा शिव सिंह को सुनकर प्रसन्न करने के लिए रचा था। इस बात के समर्थक विद्वानों ने भी विनय कुमार सरकार डॉ. सुभाद्र पण्डित शिव नन्दन ठाकुर है

- <u>संयोग पक्ष</u> ⇒ विद्यापति संयोग-शृंगार के कवि है। संयोग के रूप में वर्णन प्रधान होता है। रूप वर्णन में नासिक, वेश-भूषा, आकृति-प्रकृति, सुकुमारता वह मनोहर वातावरण के रूप में वर्णन किया गया है।

Date __/__/__

विद्यापति का वर्णन कई सामान्य रहा तो कई अलंकृत रहा है

जैसे :-
संगक सीस अगु आइलि रे, हमसा एक सरनारा आप डुलइलि है एक रूप अन्धारी।

व्यख्या अर्थ ⇛
युवत पक्ष में विद्यापति वर्णन करते है की राधा और श्रीकृष्ण को आकर्षित करने के लिए वे कहते है कि उसके साथ सारी सखि चली गई मैं अकेली रह गई आकाश मे घने बादल छा रहे है और इस पर भी रात्रि का अंधकार छा गया है।

• <u>वियोग पक्ष</u> ⇛
विद्यापति का वियोग भी संयोग वर्णन की भाँति मार्मिक है, इसके सम्बध मे डॉ प्रकाश ने कहा है विद्यापति के विरह वर्णन में भाव और कल्पना की अनुभूति व तन्यता का ऐसा अबद्ध अद्भुत सामान्य है। की पाठक सहज ही सुद्ध - बुद्ध भूलकर समन्वय हो जाता है।

विरह का नायक और आलम्बन का नायक होता है विद्यापति ने नायक के विरुद्ध का वर्णन किया है की विरह प्रकृति चित्रण बडी सहायता से करती है। विद्यापति ने प्रकृति के उद्दीपन रूप का भी चित्रण किया है।

Date ___/___/___ Ch- 3

नरपति नाल्ह (बीसलदेव रासो)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1. रासो साहित्य के कवियों का उल्लेख बताइए

उत्तर
(i) नरपति नाल्ह → बीसलदेव रासो
(ii) चन्दबरदाई → पृथ्वीराज रासो
(iii) दलपति विजय → खुमाण रासो
(iv) नल्ह सिंह → [redacted] विजयपाल रासो
(v) जगनिक → परमाल रासो
(vi) शारंगधर → हम्मीर रासो

प्र.2. बीसल देव रासो के चार खण्ड लिखिए।

उत्तर **प्रथम खण्ड ⇒**
मालवा के परमार भोज की पुत्री राजमति से शाकम्भरी नरेश बीसलदेव रासो के विवाह का वर्णन है

द्वितीय खण्ड ⇒
बीसलदेव का राजमति से रूठ कर उड़ीसा जाना

तृतीय खण्ड ⇒
राजमति का विरह वर्णन

चतुर्थ खण्ड ⇒
भोजराज के द्वारा अपनी पुत्री को वापस ले आना , बीसलदेव को वहाँ से चित्तौड़ आने का प्रसंग है।

Date ___/___/______

प्र.3 बीसलदेव रासो का जन्म कब हुआ

उत्तर बीसलदेव का जन्म 1400 ई के आस-पास मे हुआ

प्र.4. बीसलदेव रासो किस भाषा मे रचित है

उत्तर राजस्थानी

प्र.5. बीसलदेव रासो किस प्रकार की काव्य रचना है

उत्तर बीसलदेव रासो वियोग शृंगार रस का मार्मिक काव्य है।

बीसलदेव रासो

रचनाकाल : नरपति नाल्ह

छंद : 125

रचनाकाल : 1515 ईस्वी

इसमें परमार की पुत्री राजमति और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव रासो के विवाह वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा सरस शैली में प्रस्तुत की गई है।

Unit - II

Date 25 / 10 / 2024

अध्याय - 3
आधुनिक काव्य । भक्तिकाव्य
कवि - नरपति नाल्ह

परिचय :-
आदिकाल के कवि - नरपति नाल्ह
नरपति नाल्ह पृथ्वीराज पश्चिमी भाग के कवि थे।
माना जाता है की नरपति नाल्ह इनकी उपाधि होगी, नाल्ह इनका मूल नाम है

रचना ⇒ बीसलदेव रासो

प्रमुख रस :→ श्रृंगार और रस, वीर रस, काव्य रस, विरह गीत, काव्य, वीर, गीत, गेय, गीत।

यह काव्य गेय नही था क्योंकि राजस्थान ने कभी भी गेय नही रहा है।

खण्ड - 4

खण्ड 1 ⇒ मालवा के भोज परमार की पुत्री राजमति से बीसलदेव का विवाह का वर्णन किया है।

खण्ड-2 :→ राजमति का रूठकर बीसलदेव को उडीसा जाना पडता है।

खण्ड -3 :→ राजमति का विरह वर्णन

खण्ड -4 :→ भोजराज का अपनी पुत्री को मालवा

Date __ / __ / ____

से ले जाना वर्णित है । और इसी में बीसलदेव को उड़ीसा लौटाने और राजमति के घर ले जाने का प्रसंग है

पद - 1

गउरिका नंदन त्रिभुवन सार ---------------
मुकानई देवउ रे गहि ढलाई ।।

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत पंक्तियाँ 'राग केदार' में क्विरित बीसल देव रासो की प्रारम्भिक पंक्तियाँ है।

संदर्भ ⇒
इसमें आलोच्य कृति का रचियत नाल्ह कवि श्री गणेशजी की वंदना कर रहा है । अपने काव्य की निर्विघ्न समाप्ति की कामना के लिए वंदना करता हुआ कवि नाल्ह कहता है।

व्याख्या ⇒
कवि कहता है की गौरीनंदन ! आप त्रिभुवन के सार भाव यह है की तीन लोगों में आपकी व्यंजित है नाद-भेद उदर में निवास करता है । समस्त स्रष्टि और उसके तत्व आपके उदरस्थ है। आपके मुख में एक दाँत झलका करता है हे गौरीनंदन आपका मूषक है और मस्तक पर चिन्हित तिलक सिंदूर का है भाव यह है की मूषक पर

Date __/__/__

हुए मस्तक पर सिंदूर तिलक धारण करने वाले प्रभु आप और आपका तिलक सुशोभित है। मानो रोहिणी नक्षत्र सूर्य काँप रहा है व्यंजना यह है कि तिलक की घूती इतनी द्विपित है की मानो रोहिणी नक्षत्र में छिपाकर इस नक्षत्र में चमकर कि कांति भी द्वि - गुणित होकर चमकती है। उसमें समाई हुई हिमस्ती उद्भत आपकी दया से दिन में सूर्य की भाँति से हि- पीठ भुवनों का प्रत्यक्ष दर्शन कर रह है दिन में आपके उदभट छिपति से का प्रत्यक्ष दर्शन करता रहा है।

विशेष ⇒

इन पंक्तियों में परम्परा का निर्वाह करते (i) हुए नाल्ह में वन्दना की है। इस वंदना में सौन्दर्य आकृति, आराध्या, चित्रण किया गया है।

(ii) जाणी कर रोहिणी तप टपूर दशाई रे रवि तलाइ। पंडित में उक्त प्रत्यक्ष का अलंकार का प्रयोग किया है

(2)

दीन्ही सोपारीयउ नई छत्रिय राय..।..........
जई घरि - अरि रयह जाति पमारि ।।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि नरपति नाल्ह के 'बीसलदेव रासो' से अवतरित है।

Date

संदर्भ ⇛ इसमें स्थापित का लग्न भेजे जाने के बाद दोनों घरों में खुशियां का वर्णन किया है

व्याख्या ⇛ कवि वर्णन करते हुए कहते है की 'राजा' भोज ने प्रभाव और भाट को पर रूप में बीसलदेव निश्चित करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक सुपारी दी। राजा के उस समय अपार आनंद छाया हुआ था और उमंग भाव भरा हुआ था। उस खुशी के अवसर पर घर-घर में पतंगे उड़ाइ गई और महिलाएँ मंगलिक गीतों का गायन कर रही है। बीसलदेव चौहान के बड़ी प्रसन्नता और नाचा हुआ था लोग यह सोचकर खुश हो रहे थे की चौहान के कुल में परमार कि कुल की कन्या वधू बनकर आ रही है। परमार की कुल कन्या का वधु के रूप में गौरव की बात थी।

विशेष ⇛

(i) राजस्थान की परम्परा कि और यहा संदेश दिया है। राजस्थान में खुशी के अवसर पर पतंग उड़ाने की परम्परा है

(ii) अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है

Date ___/___/______

(3)

बेमत भाट गैलगिया राउ ------------------
राजमति पर बीसलदेव रासो ॥

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ "नरपति नाल्ह" द्वारा रचित "बीसलदेव रासो" से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒ उक्त वाक्य में बीसलदेव रासो वर्णन किया गया है इन पंक्तियाँ में रजा भोज द्वारा अपनी बेटी राजमति के लिए प्रश्न पत्रिका देकर अजमेर के राजा बीसलदेव के पास भेज जाने का वर्णन है।

व्याख्या ⇒ राजा भोज ने बीसलदेव की पहचान करके उसे अपनी लडकी के लिए योग्य समझकर ब्राह्मण को और विद्यावली गाने वाले को बुलाकर उनके हाथ देखकर लग्न, पत्रिका, चावल, सुपारी, पान, मिठाई इत्यादि देखकर अजमेर के गढ में उनको खाना खिलाया और संदेश भिजवाकर कहा की वस्त्र भेजकर राजा को मनाने वो इनकार ना करे उनसे कहने भी हम राजा भोज की बेटी राजमति का टीका (लग्न) लेकर बीसलदेव के लिए आये है

आप स्वीकार करे

विशेष :-
(i) उक्त पंक्तियाँ रजस्थानी भाषा में लिखी गई है।

Date __/__/____

(ii) उक्त पंक्तियों में सामाजिक रीति- रीवाजों का वर्णन है।

(iii) इसमे राजमति और बीसलदेव के विवाह का वर्णन किया गया है।

(iv) यह बताया गया है की पृथ्वीराज परिवारो में भाट, राजा, की विधावली गाया करते थे। इन बातों से यह प्रतीत होता है की लडकी के पिताजी न जाकर गाँव का पंडित या नाई गया होगा। यही वर या कन्या की सगाई की बात कर लेते है

(५)

हंस गमणि मृगलोयणि नारि ---- --- -- -----
जाई दिखाउड रे झूरंता ॥

प्रसंग :→
प्रस्तुत पंक्ति कवि 'नरपति नाल्ह' से द्वारा रचित बीसलदेव रासो से उद्धृत है।

संदर्भ :→
इसमें अजमेर के राजकुमार बीसलदेव और भोज की राजकुमारी राजमति की प्रेम कथा का वर्णन किया गया है। इस पद्य मे कवि रचना करते समय माँ शारदे की वंदना कर रहे है।

व्याख्या :→
कवि माँ शारदे को सम्बोधित करके कहते है की हे! हंस पर सवारी करने

Date ___/___/______

वाली अपने हाथों में वीणा को धारण करने वाली है। नादान को कवि बनाने वाली एवं समझदार को कुलहीन बनाने वाली है माँ शारदे वरदान दीजिए जो कहते भूल जाये वो पुनः याद आ जाये कृपा से अक्षरों को जोड़कर नाल्ह विषय-वस्तु का वर्णन कर सके अपने मन्य की रचना कर सके।

विशेष ⇒
(i) उक्त पंक्तियाँ राजस्थानी डिंगल भाषा में लिखी गई है
(ii) अनुप्रास अलंकार का मनोरम चित्रण किया गया है
(iii) माँ शारदे की असीम कृपा का वर्णन किया गया है।
(iv) चौपाई छंद में वर्णात्मक काव्य है।

प्र.4. बीसलदेव रासो के काव्य के महत्व पर प्रकाश डालिए वह आदिकाल की महत्वपूर्ण रचना है। इसे स्पष्ट कीजिए

अथवा

बीसलदेव रासो का सामान्य परिचय देते हुए आदिकाल महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय कवि है। स्पष्ट कीजिए।

Ans: बीसलदेव रासो के रचियता कवि नरपति नाल्ह है। मुख्य नायक बीसलदेव तृतीया (अजमेर व चित्तौड़) मुख्य नायिका (राजमति) मालवा के

रचना भोज परमार की पुत्री यह रचना रानी राजमति और बीसलदेव के संयोग-वियोग व पुर्नमिलन की प्रेम कहानी है। राजा बीसलदेव के नाराज होकर उड़ीसा चले जाने व रानी राजमति के विरह वर्णन का चित्रण किया गया है। इसमें बीसलदेव रासो 12 वर्ष बाद अपनी पत्नी राजमति से मिलते है। इस कारण यह शृंगारिक वीरों की रचना भी कहलाती है।

भाषा शैली ⇒

भाषा राजस्थानी (डिंगल)
रचना शैली पिंगल)

यह रचना चार खण्डों 128 रासो में वर्णन है यह मुक्तक शैली चौपाई छंद में खण्ड काव्य में यानी कथात्मक काव्य है इनकी आरंभिक भाषा हिंदी है तथा आदि से अन्त तक एक ही शैली में वर्णित है।

रचनाकाल ⇒

इस का रचनाकाल विक्रम संवत 1212 यानी 1155 में माना जाता है।

बीसलदेव रासो के काव्य निम्न प्रकार है

1) मंगला चरण कृति का श्री गणेश ⇒

नरपति नाल्ह में बीसलदेव रासो का आरंभ दो छंदों में गणेश जी की वंदना के साथ गया है। वह

Date __/__/____

इनके मूलभूत अक्षरों को सुधार दे।
उसके बाद कवि ने सरस्वति देवी शारदा देवी की वंदना की है। इसका मंगलाचरण पाठकों को अधिक प्रिय लगता है इस प्रकार से मंगलाचरण कवि नरपति नाल्ह की भक्ति भावना की व्याप्ति होती है साथ इनके काव्य को लोकप्रिय बनाती है

2। **आकर्षक तथा वस्तु का होना :→** बीसलदेव रासो का कथानक जो इसकी लोकप्रियता को बढ़ाता है जैसे नरपति नाल्ह ने मंगलाचरण छंदों को अपनाया है। इस के अलावा मालवा के राजा ~~भोजा~~ भोज द्वारा राजमति के लिए वर की खोज करना अजमेर के राजा बीसलदेव का वैभव वर्णन बीसलदेव की गवेषित पर राजमति की व्यग्योक्ति इत्यादि के वर्णन से काव्य की तथा वस्तु आकर्षक है।

3। **शृंगार रस का मनोहारी चित्रण ⇒** कवि नरपति नाल्ह ने अपने काव्य में शृंगार के दोनों पक्षों को अति मार्मिक मनोहारी चित्रण किया जिसके कारण इसे शृंगारिक भी माना जा सकता है। कवि बीसलदेव रासो व राजमति के विवाह वर्णन को जितने भाव प्रधानता के साथ प्रस्तुत करते है, उसी प्रकार राजमति के विवाह का भी वर्णन करते है जो इस काव्य की लोकप्रियता का एक कारण है

Date ___ /___ /______

4) **काव्य का भाषा सौन्दर्य ⇒**

कवि नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो की काव्य रचना राजस्थानी भाषा व डिंगल भाषा शैली में की थी जो पाठकों के सरल व सहसत्ता देने लगी। जिसके कारण पाठक अंत काव्य के भाव पक्ष में सरसता। सरलता को समझ व ग्रहण कर सके।

5) **वास्तविक मानसिकता पर आधारित रचना :→**

नरपति नाल्ह ने कहा की पति-पत्नी व्यवहारी का जिस प्रकार चित्रण किया गया है। वह आज के दाम्पत्य जीवन की वास्तविकता को दर्शाता है। जो काव्य की लोकप्रियता को बढ़ाते है

6 **आकर्षक शिल्प विधान :→**

कवि नरपति नाल्ह ने काव्य को अलंकारिक योजना के साथ प्रस्तुत किया जिसमें कवि ने शब्दा अलंकार के साथ-साथ अर्थालंकार का भी स्वभाविक प्रयोग किया है इस संबंध में डॉ. राज वर्मा ने अपने भाव स्पष्ट करते हुए कहा है "नरपति नाल्ह" का प्रिय अलंकार उपमा है

उन्होने अपने काव्य में उपमाओं में नवीनता है विधान की दृष्टि से बीसलदेव रासो की भाषा मे तत्सम, देशज व विदेशी चार प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

Date ___ / ___ / ______

* नायिका प्रधान रचना ⇒
इस काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है की यह काव्य नायक प्रधान न होकर वस्तु नायिका प्रधान काव्य है कवि ने इसमें नायिका के व्यक्ति को उकेरा है और अपने कुछ विस्त हिन्दी साहित्य का एक स्वचरित्र बन गई है। अतः भाव दृष्टि से काव्य उत्तम मार्मिक है। इसी शिल्प प्रकार की दृष्टि से यह लोकप्रियता रचना है।

* मार्मिकता ⇒
इस काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है की काव्य मार्मिकता पूर्ण है जिसके बारे में विद्वानों ने प्रसंग की है की उड़ीसा जाने के लिए आतुर बीसलदेव रासो को मनाती हुई राजमति का यह नायिका कथन इस प्रकार है।

" हेडाऊ को तुरिय जिऊँ
हाथ करइ सउ सउ वार "

* नृत्य गीत काव्य ⇒
यह एक गीत परक काव्य है अन्य रासो काव्यों में कई प्रकार के वर्णन मिलते हुए किन्तु इस काव्य प्रेमाख्यान प्रवृत्तियाँ ही मिलती है प्रेम सम्बद्ध तथा स्वभाविक रूप से सरस होती है यह काव्य ललित पुस्तकों मे रचे गये है। यह संदेश रासक की तरह विरह काव्य है। विभिन्न घटनाओं का वर्णन होने पर भी इस काव्य की लोकप्रियता बनी रहती है।

Date ___/___/___

★ अन्य कारण ⇒ बीसलदेव रासो काव्य की लोकप्रियता एवं महत्वों के अन्य अनेक कारण हैं जैसे -

(i) यह लोक गीतात्मक परम्परा में विकसित हुआ है इसमें गीति तत्वों का समावेश स्वतः हो गया है

(ii) कवि ने इसमें नारी के स्वभाव स्वम स्वाभिमान का दृश्य है।

(iii) इसमे बारहमास पद्धति अपनाकर वीरानुभूतियों को दृश्य है तथा मार्मिकता से निरूपण किया गया है।

(iv) श्रृंगार की सभी दशाओं का सरल निरूपण किया गया है।

★ बीसलदेव रासो की ऐतिहासिकता ⇒ वीर गाथा काल सबसे अधिक विवादास्पद काल है। इस काल मे कृतियो की ऐतिहासिकता भी विवादस्पद है कई रचनाओं के मूलरूप विस्तृत है। जिसमे ग्रन्थ के मूल वास्तविकता रूप को पहचाना कठिन हो गया है। इस काल में सत्रवही शताब्दी के भाषा के लक्षण पाये जाते है वैसे इस ग्रन्थ को आदिकाल की गीतात्मक रचना भी माना जाता है

गौरी शंकर हरिचंद्र ओझा के अनुसार इस ग्रन्थ को सम्बन्ध तीस से एक हजार छप्पन के समीप माना जाता है नरपति नाल्ह ने इस रचना का समय बारह वर्ष और संवत 1013 माना है।

Date ___/___/_____

★ **आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ⇒**

इसका रचना काल संवत 1012 और लाला सीताराम का सम्बंध 1273 माना जाता है।

★ **डॉ. माता प्रसाद गुप्त के अनुसार ⇒**

इसका सम्बंध 1363 मानते है इस रचना के छंदो के बारे में भी विवाद है इसमें कुछ प्रचलित है जो किसी अन्य द्वारा बाद में जोड़ा गया है। डॉ माता प्रसाद के अनुसार इस ग्रन्थ में 128 छंद है परन्तु अन्य संस्करणों में इसमें चार छंद को मानता दो और कुल 318 छन्द माने जाते है।

★ **निष्कर्ष ⇒**

उपयुक्त विवेचना उठाकर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है की कलात्मक श्रेष्ठ से बीसलदेव रासो एक महप श्रेणी की उत्तम रचना है उनमें कवि ने भाव व भाषा की श्रेष्ठ से एक सुंदर सम्नव प्रस्तुत किया है। इस काव्य में प्रेम व मोहक का चित्र प्रस्तुत किया है इस काव्य के कथासार के आधार पर कहा जा सकता है कि बीसलदेव रासो एक चरित काव्य है। राजा भोज की कन्या रानी राजमति और अजमेर के राजा बीसलदेव रासो का जीवन वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

Date 22/10/2024 unit - III^rd

कबीरदास

जीवन परिचय

पूरा नाम : संत कबीरदास
जन्म : सन 1398 ई.
स्थान : वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
पिता का नाम : नीरू
माता का नाम : नीमा

प्रसिद्धि : कवि संत दार्शनिक
मृत्यू : सन 1518 ई
मृत्यू स्थान : मगहर (उत्तर प्रदेश)
रचना : साखी, सबद, रमैनी

कबीरदास का जीवन एवं साहित्यिक परिचय ⇒

कबीरदास एक महान सांसारिक सुधारक और एक सन्त कवि थे। कबीर के शिष्य धर्मदास ने इनकी रचनाओं को बीजक नाम से संग्रह किया

इनके तीन भाग है → 1. साखी 2. सबद 3. रमैनी

1. **साखी ⇒**

साखी शब्द संस्कृत का विस्तृत रूप है और धर्मोपरि के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है कबीर की शिक्षाओं और सिद्धांतों का निरूपण अधिकार साखी मे हुआ है। यह दोहा छंद मे लिखा गया है।

Date ___/___/___

2. **सबद ⇒**

यह गेय पद होता है जिसमें पूरी संगीत आत्मात्मक विद्यमान है। इसमें उपदेशात्मकता के स्थान पर भावातेरा की प्रधानता है क्योंकि कबीर के प्रेम और अन्तरंग साधना की अभिव्यक्ति हुई है।

3. **रमैनी ⇒**

यह चौपाई एवं दोहा छंद में रचित है। इसमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचारक को प्रकट किया गया है।

Note :→ (इनकी भाषा में अवधी, फारसी, भोजपुरी, पंजाबी, बुंदेलखंड, ब्रज, खड़ी बोली आदि विभिन्न शब्दों के शब्द मिलते हैं) (सधुक्कड़ी या पंचवती भाषाएँ)

साखी पद
1. मन को अंग

(1)

मन के मते न चलिये, छाडि जीव की बाँणि।
ताकु केरे सूत ज्यूँ, उलटि अपूठा आँणि ॥

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास द्वारा रचित 'साखी' में 'मन को अंग' से उद्धृत है

संदर्भ ⇒

कबीरदास ने अपनी पंक्तियो में मन के अनुसार नहीं चलना चाहिए तथा मन की उत्तेजना व्यक्त की गई है।

Date ___/___/______

व्याख्या ⇒ कबीरदास कहते है कि प्राणी के मन के अनुसार नही चलना चाहिए क्योंकि मन चंचल होता है। मन का अनुगामी मत बनो क्योंकि वह तो सर्वदा विषय-वासना मे संलिप्त रहता है। मन को इस माया मे ही विलुप्त रहते है कि यह आदत छुडा दे। जिस प्रकार कच्चे सूत को खीचकर उसको केन्द्र स्थल या लक्ष्य पीढ़ियो पर ही चढा दिया जाता है। उसी प्रकार प्रभु भक्ति से मन मे बढ़ा लगा दे।

विशेष ⇒

(i) प्रस्तुत साखी मे कबीरदास जी ने साधकों को मन की प्रकृति से अवगत कराया है

(ii) इसमे अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है

(2)

चिंता चिंति निवारिये, फिर बूझिये न कोइ।
इंद्री पसर मिटाइये, सहजि मिलैगा सोइ ।।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास द्वारा रचित साखी पद "मन को अंग" से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒

प्रस्तुत पंक्तियो मे कवि ने सांसारिक चिन्ताओं का विस्तार किया है।

Date ___/___/___

व्याख्या ⇒

सांसारिक चिन्ताओं को मन से निकाल कर इंद्रियों का विभिन्न विषयों में जो प्रसार है उसे समाप्त कर देने से ही प्रभु भक्ति का मार्ग खुल जायेगा। तब किसी से ब्रह्म-प्राप्ति का उपाय पूछने की आवश्यकता नहीं, वह स्वयं ही, अनायास ही प्राप्त हो जायेगा।

विशेष ⇒

(i) सहज साधना का तत्व वर्णित है।
(ii) अनुप्रास एवं काव्यलिंग अलंकारों का प्रयोग हुआ है

(3)

कबीर सैरी सांकड़ी, चंचल मनवा चोर।
गुण गावै लैलीन होई, कछु एक मन में और।।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास द्वारा रचित साखी पद 'मन को अंग' से उद्धृत है

संदर्भ ⇒

कबीर जी कहते है की प्रभु प्राप्ति का का मार्ग बड़ा संकीर्ण है और यह मन जो साधना का मूलाधार है चंचल और चोर के समान लोभिवृत्ति है।

व्याख्या ⇒

कबीरदास जी कहते है कि प्रभु प्राप्ति का मार्ग बड़ा संकीर्ण है और यह मन जो

Date ___/___/_____

साधना का मूल आधार है। चंचल और चोर के मन समान लोभी वृत्ति का है। यह कपटी मन प्रत्यक्ष में तो लगता है की प्रेममग्न होकर प्रभु का गुणगान कर रहा है। किंतु भीतर माया के जाल में लगा हुआ है

विशेष ⇒
(i) कवि के मन की चंचल प्रवृति का वर्णन किया है।

गुरूदेव को अंग

(1)

सतगुरु सावन को समा
भीजि गया सब अंग ॥

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ प्रसिद्ध संत एवं समाज सुधारक महा कवि कबीर द्वारा रचित है

सन्दर्भ ⇒
ये पंक्तियाँ "गुरूदेव को अंग" शीर्षक से अवतरित है इन साखियों में कबीर ने गुरु की महिमा एवं उसकी अनंत महिमा को निरुपित किया है

व्याख्या ⇒
प्रथम साखी में कवि पर कबीर गुरु की

Date ___/___/___

असीम महत्ता बखान करते हुए कहते हैं कि सतगुरु के समान कोई भी समान नहीं हो सकता और नहीं उसके समान कोई तत्व शोधक एवं अन्वेषी हो सकता है। गुरु के समान कोई हितकार व परोपकारी भी नहीं हो सकता और न ही प्रभु भक्तों सी कोई जाति हो सकती है।

दूसरी साखी में कबीर कहते है की जिन लोगों के चित भ्रमयुक्त है। उन्हें सतगुरु मिल भी गये है तो उन्हें क्या लाभ होगा। वह ज्ञान प्राप्ति नहीं कर सकते यदि वस्त्र को रंगने से पूर्व पुट देने में ही वह नष्ट हो जाए तो सुंदर रंग देने में समर्थ व्यक्ति भी बेचारा क्या कर सकता है।

तीसरी साखी के अनुसार सतगुरु सच्चा शूरवीर है जो शिष्यो को अपने प्रयत्नों से उसी प्रकार योग्य बना देता है जिस प्रकार लुहार लुप्त लोहे को पीट कर सुडौल आकार देता है उसी प्रकार गुरु शिष्यों को परीक्षा की ~~असीम~~ अग्नि में तपा-तपा कर योग्य बनाता है

विशेष ⇒

(i) भारतीय संस्कृति में आरम्भ से ही गुरु की महिमा स्वीकृत है

(ii) प्रस्तुत साखियों में अनुप्रास, दृष्टांत अलंकारों का प्रयोग हुआ है

(2)

सतगुरु की महीमा अनन्त, अनन्त किया उपगार।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावणहार ॥

Date ___/___/___

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत दोहा, कबीरदास की साखि की, गुरुदेव को अंग को उद्धृत है

संदर्भ ⇒ कबीर दास एक बार पुन: गुरुदेव की महीमा का व्याख्यान कर रहे है।

व्यख्या ⇒ सच्चे गुरु की महीमा का क्या उल्लेख है और उनकी अपार महीमा है। वह अपने शिष्य अन- गनित उपार करते है। गुरु की एक बात होती है कि वह अनन्त दिशाओं खोल देते है। जिससे शिष्य अनन्त ज्ञान प्रकाश दिखाई देने लगता है तब शिष्य को फिर रोम परमतत्व का साक्षात्कार होने लगता है।

विशेष ⇒

(i) " अन्तर लोचन उघाडिया " में नेत्र खोलना " लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग किया गया है

(ii) कबीर की भाषा में अर्थ व्यता की अपार क्षमता का पता चलता है

(iii) तत्व - ज्ञान कबीर के सम सरल, सुबोध शब्दों में है

(3)

मन रे जगत रहिये भाई

राम रतन धन पाया ।।

Date __/__/__

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद कबीरदास द्वारा रचित है।

संदर्भ ⇒ इस पद मे कबीरदास जी ने अपने मन को अपार चेतना से युक्त होने और ज्ञान साधना द्वारा मोह- माया से मुक्त होकर परमात्मा से साक्षात्कार का उपाय बतलाने का प्रयत्न किया है।

व्याख्या ⇒ कबीरदास जी अपने मन को समझाते हुए कहते है की रे मन! जागता रह तू सावधान और मदहोश होगा। अज्ञानता के वशीभूत होकर मन ही तेरे अन्त कारण रूपी घर को काम क्रोध आदि लुटेरे लूट रहे है। धूचकों की यह तुम्हारी बहुमूल्य कोठरी है उसी में तुम्हारे वास्तविक शुद्ध चैतन्य रूप का प्रकाश प्रचलित है। उनका साक्षात्कार कुंडली के द्वारा उन चक्रो के भेदन से होता है वही चैतन्य मात्र रूप मूल वस्तु है ईश्वर प्रेम की व्यथा अथवा योगिता से कुंडली जाग्रत करणरूपी चाबी के लगाते ही वह कोठरी खुल जाती है और उसके खुलने देर नही लगाती है ईश्वर प्रेम अथवा कुण्डली के जाग्रत होने पर ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी पहरेदार सो जाते है अर्थात वह उन विषयो से विमुख हो जाते है। और आत्मा का स्वरूप अर्थात विशुद्ध ज्ञान स्वरूप आत्मा जागने लगाती है चिन्तन करते करते अन्तकरण मे

Date ___/___/___

में ही उस परम तत्व का ज्ञानेरूप होता है कबीरदास जी कहते है की इस साधना से सारा भ्रम नष्ट हो गया और मैंने राम रूपी रतन प्राप्त कर लिया है

विशेष :-

(i) अनुप्रास एवं सांगरूपक अलंकारों का प्रयोग हुआ है

(ii) ईश्वर प्रेम की जागृति का सम्बध चित्रण हुआ है।

प्र.1. कबीर के काव्य की विशेषताएँ लिखिए

Ans सामान्य परिचय ⇒

भक्तिकालीन निर्गुण मार्गी धारा के ज्ञानकर संतो में कबीर का स्थान सर्वोच्च है। कबीर इतिहास के उन विशिष्ट महापुरुषों संतो, भक्तों एवं कवियों को शामिल किया गया, जिन्होंने अपने क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान दिया। लेकिन कबीर का स्थान उन सभी से अलग है क्योंकि वह एक साथ ही संत भक्त कवि व समाज सुधारक है। कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी की कोख से जन्मे थे, जिसने लोक- लाज के भय से उन्हें किसी सरोवर के किनारे छोड़ दिया था। कबीर ने विधिवत किसी प्रकार की शिक्षाग्रहण नहीं की थी। कबीर ने स्वयं ही कहा है-

"मसि कागद छुयो नही कलम, गहि नहि हाथ"

Date __/__/____

कबीर रामानंद के गहन शिष्यों में से प्रमुख शिष्य थे। गोरखपंथी योगियों के संपर्क में आने से कबीर का योग का अभ्यास किया। उनकी वाणी को उनके मौखिक कथ्यों अभिव्यक्ति को उनके "धर्मदास" नामक शिष्य ने 'बीजक' नाम से संकलित है बीजक के अभोग है
(i) साखी (ii) सबद (iii) रमैनी

कबीर को यद्यपि शास्त्रीय ज्ञान नही था तथापि काव्य शास्त्र से परिचित न होते हुए भी उन्होंने अपने भावपक्ष को सफलता से प्रस्तुत किया

1) निर्गुण ईश्वर की उपासना :→

कबीर के साहित्य में जो ईश्वर भक्ति अभिव्यक्त हुई है वह सर्वत्र निर्गुण एवं निराकार रूप में है। उनका ईश्वर सर्वव्यापी, ईश्वर, निराकार, निरूपण एवं शाश्वत ही अपने निर्गुण के विषय में उन्होंने कहा है।

"निर्गुण राम निर्गुण राम जपहु रे भाई।"
अविगत की गति लखइ न जाई।।"

2) भक्ति भावना :⇒

कबीर के काव्य का मुख्य आधार भक्ति है और भक्ति अनुभूति का विषय है इस अनुभूति के बारे में गोविंद त्रिगुणायत का कथन है। भक्तप्रवर संत कबीर को मध्ययुग का साधारण धर्मप्राण जनता को सिद्धों आदि की विविध साधनाओं में दलदल से पूर्व क्षेप है

भगति भजन हरि नॉव है, दूजा दुख अपार
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार

Page No. ____

Date __/__/__

3) **प्रेम तत्व का सिद्धांत :→** कबीर ने प्रेम को ही सृष्टि का आधार ईश्वर से साक्षात्कार का आधार माना है उनका इस विषय का प्रसिद्ध दोहा है।

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"

4) **संयोग एवं वियोग की गहनता :→** कबीर के काव्य में ईश्वर के मिलन एवं वियोग के भावपूरित चित्र अंकित हुए हैं। कबीर परमात्मा को प्रियतम एवं आत्मा के प्रियतमा माना है वहां कुछ समय को अपने पति रूपी परमात्मा से दीदार करना चाहती है।

बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुव न मिलन को, मन नाही विसराम"

5) **समाज सुधारक के रूप में :→** कबीर की पहचान समाज-सुधारक के रूप में भी उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों पर कड़ा प्रहार कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने मूर्तिपूजा, बाह्याडम्बर, नारी संग, मांसाहार, नमाज, ढोंग, ऊंच-नीच आदि पर आवाज उठाई।

6) **आध्यात्मिक भावना →** कबीर ने अपनी वाणी से आध्यात्मक के विषय में बहुत कहा है, परमात्मा जीव, जगत, माया, शैतान, आदि के बारे में विवेचना करना ही आध्यात्मिक साधना में आता है

Date ___/___/___

अभिव्यक्ति (कलापक्ष) विशेषताएँ :⇒

★ अभिव्यक्ति पक्ष के लिए कलापक्ष, शिल्पविधान, अभिव्यंजनापक्ष या भाषा शैली शब्दों का प्रयोग किया जाता है इसके अंतर्गत भाषा, अलंकार, प्रतीक, कवि, छंद काव्यगुण, रस शैली आदि को सम्मिलित किया जाता है

(i) छंद विधान ⇒ काव्य मे कोई ना छंद होता है कबीर के काव्य मे साखी, सबद, रमैनी और पद इनका ही अधिक प्रयोग हुआ है पदों में भी चौपाई या यांत्रिक दण्डक विष्णु पद आदि छंद का मेला हुआ है कबीर की साखियों मे दोहा प्रतीत होता है फिर भी इनमे भी छंद मिले हुए है।

(ii) अलंकार योजना ⇒ कबीर ने अपने काव्य मे अन्योक्ति शैली, प्रतीक शैली, काव्य शैली, उलटबासी शैली, प्रबंध शैली विरोधमूलक शैलीक शैली का प्रयोग किया गया है। उनकी भाषा इनकी मे चित्रात्मक रोचकता की विशेषताएँ है। कबीर ने अलंकारों का प्रयोग करके वर्णन के दौरान कोई अलंकार आ गये है। जैसे उपमा, रूपक, अन्योक्ति अलंकार, विरोधोक्ति, प्रकाश अलंकार, दृष्टांत काव्य लिंग न्यास आदि है।

कबीर ने काव्य में प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। कबीर साधक थे उन्होंने आत्मा परमात्मा सम्बधी अनुभूतियों का वर्णन करते है

Date ___ /___ /___

कबीर ने नित्य जिंदगी से मय को कबीर ने मौलिक वर्णन में माता-पिता, पति-पत्नी संबंधी प्रतीकों का वर्णन किया जैसे -

हरि मोरे पिउ मैं, राम की बहुरिया।
हरि जननी मैं बालक तोरा ॥

(iii) भाषा शैली :->

कबीर की भाषा जनभाषा है जिसमें तत्सम, तद्भव, देशज, अरबी, फारसी, भोजपुरी, राजस्थानी, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्द प्रस्तुत है वास्तव में तो कबीर की भाषा प्रारंभिक भाषा हिंदी है वैसे देखा जाए तो कई विद्वानों कबीर की भाषाओं को सधुक्कड़ी भाषा बताया है

☆ निष्कर्ष ⇒

संक्षेप में कहा है तो कबीर की मस्तमौला उनके काव्य के भावपक्ष, कलापक्ष दोनों में ही मिलती है। वे सिर से पैर तक मस्तमौला थे उनके काव्य में अनुभूतियों की की सच्चाई एवं आत्मा का बल है। इस काव्य को कला पक्ष अलंकृत करने का प्रयास नहीं किया। व्याकरण व छंदों के संबंधों की परवाह की फिर भी काव्य अनेक विशेषताएँ से संचित है।

Date 25 / 9 / 2024

आधुनिक काव्य भक्तिकाव्य

Unit - III

[मलिक मुहम्मद जायसी]

Ch - II

जायसी ग्रंथावली
* सिंहलद्वीप वर्णन
* नागमति वियोग खण्ड
*

परिचय →

जन्म : 1492 ई. में जायस अमेठी उत्तर प्रदेश
मृत्यु : सन 1548 में,
काल : भक्तिकाल
रचनाएँ - अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, पद्मावत
कहरनामा, कान्हावत आदि

प्रमुख ग्रन्थ → पद्मावत है
मूलभाषा → अवधी

(1) चढा आषाढ गगन घन गज
साज विरह दुंद दल बजाय

---------------------------------- ।
कंत पियारा। बाहिर रूप सुख भुला सब ।

प्रसंग :→
जायसी सूफी कवियों में प्रमुख कवि माने जाते है प्रस्तुत अवतरण मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा जायसी ग्रंथावली से उद्धृत है

संदर्भ :→
पद्मावत एक प्रेम प्रधान काव्य है जब राजा रत्नसेन अपनी रानी नागमति को

Date ___/___/______

को छोड़कर सिंघल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती के सौंदर्य से आश्वत होकर उसको प्राप्त करने के लिए निकल पड़ते है इसी दौरान नागमति के उसके पति राजा रत्नसेन के वियोग में व्याकुल रहने लगती है और उसकी विरहदशा को और भी अधिक व्यतीत प्रकृति का बदलता स्वरूप करता है बार महीने मे प्रत्येक बार अलग-अलग प्रभाव पड़ता है प्रस्तुत पंक्तियों में नागमति विरह खण्ड से अवतरित है। बारह महीनो से विरह की भिन्न-भिन्न दशाएँ विरह को दुख का वर्णन किया है

व्याख्या :→

आषाढ़ के महीने मे बादलो का गरजना एक प्रकार से बाजे बजने के समान है जो विरहणि के दुःख को और भी ज्यादा बढ़ाते है। आकाश मे उमड़-उघमड़कर बादलो का आगे बढ़ना विरहणि की मनोस्थिति को और अधिक व्याकुल करते है। इस महीने मे चारो तरफ अंधेरा छा जाता है। और सफेद बुगलो की पंक्ति बड़े प्यार से अपने घरो की ओर जाती है। इस महीने आकाश मे बिजली तलवार की भांति चमकती है और यह तलवार विरहणि के हृदय मे सीधा प्रहार करती है और बादलो का बरसना, पानी की बूंद गिरना विरहणि के लिए बाण के समान होते है। उस महीनो मे चारो तरफ ऐसी घटा छा जाती है और इस घटा का प्रभाव विरहणि के प्रेमभाव को और भी ज्यादा

Date __/__/____

जाग्रत कर देता है। ऐसी स्थिति मे नागमति अपने पति के स्वरूप को और ज्यादा याद करती है और उन यादो मे गिरी रहती है।
आषाढ के महीने मे मोर, कोयल, पपीहे आदि का बोलना विरहणी को उसके प्रियतम की याद दिलाता है और इन पक्षियों की आवज से एक विरहणि का जीना दुर्लभ हो जाता है।
बरसात के समय पुष्पनक्षत्र की बूंद भी विरहणि के सिर पर गिरती है तो पति या प्रेमी के उसके उद्धार नही होता है ऐसे आषाढ मास के वातावरण मे प्रकृति मे बिना प्रियतम के कोई आदर सम्मान भी नही रहता है जिस घर मे पति घर पर रहता है उस घर मे पत्नी गर्व से मदमाती रहती है लेकिन पति जब बाहर चला जाता है तो वह मायूस हो जाती है।

विशेष :→

(i) भाषा अवधी व ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है
(ii) मनसवनी शैली मे विरहदशा का वर्णन किया है
(iii) अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है।
(iiii) प्रकृति के प्रभाव को निश्चित किया गया है।

(2) सावन बरस मे अति पानी
भरनी परी है बिरह झुरानी
- -
किसी के भैटो कत तुम्ह
ना माहि पावन पॉस्व ॥

Date ___/___/___

प्रसंग :→ प्रस्तुत अवतरण कवि जो मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा उद्धृत है

संदर्भ :→ प्रस्तुत पद्यांश में सावन मास के महीने मे प्राकृतिक स्वरूप का विरहणी के मन में पर पड़ने वाले प्रभाव बताये गये है।

व्याख्या :→ कवि जायसी नागमति के विरह पर पड़ रहे प्रभाव और बारह महीने के प्रभाव को भिन्न- भिन्न रूप से बताया गया है प्रस्तुत पद्यांश की सावन मास के प्राकृतिक स्वरूप का विरहणी के मनोदशाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण किया है। सावन के महीने में बरसात अपने यौवन रूप में होती है और ऐसे बरसात के मौसम में एक नायिका और विरहणी झुलसी रहती है। बहुत से दिन बीत गए लेकिन नागमति को अपने पति दिखाई नही देते है अर्थात बहुत दिनों से अपने पति से मिल नही पाई है इस कारण वह पागलसी आने जाने वालो से पूछती है कि मेरा पति देखा है क्या जिस प्रकार सावन के महीने में लाल रंग का कीड़ा है घूमता है मानो नायिका के आंखो में रक्त गिर रहा है नायिका का विरह दुख से आंखो में

Date __/__/__

झलकता है। मानो आंखों के माध्यम से पीडा झलक रही है। सखियां अपने - अपने प्रियतम के साथ हिंडोला ले रही है। और प्रकृति हरी - भरी प्राकृतिक दिखाई देती है। इसको देखकर नागमति के हृदय में प्रियतम के प्रति प्रेम भाव जागृत होता है लेकिन प्रियतम न होने के कारण वह बहुत दुखी रहती है।
वह कल्पनाओं में खो जाती है। ऐसी स्थिति में प्रियतम द्वारा हिंडोला जोर से जाने से लगने पर अचानक जग जाती है लेकिन यह घटना नागमति को और भी ज्यादा दुखी कर देती है। क्योंकि वह प्रियतम दिखाई नहीं देते है। रानी नागमति बड़ी गंभीरता के साथ राजा रत्नसेन को राय देखती है। और जी न लगने पर इधर - उधर घूमती रहती है। वह कहते है की मेरी जीवन रूप में कहने वाले पति मेरे पास नहीं है। और ऐसा लगता है की समुद्र में चारों तरफ कोई पर्वत बीच में आ गया है वन में मेरे जीवन रूपी नाव को कहने वाले पति मेरे पास नहीं है। और ऐसा लगता है कि इस समुद्र में चारों तरफ कोई पर्वत बीच में आ गया है वन में मेरे जीवन रूपी नाव खो चुकी है। इसलिए मेरा पति किसी को भी मिले तो मुझे अवगत अवगत अवश्य कराया जाए। क्योंकि मेरे

Date ___/___/___

न तो पंख्त नही मेरे पांत काम करते है।

विशेष :→ उक्त पद्यांश में कवि ने सावन मास

(1) में पड़ने वाले प्रभात नायिका की विरह वेदना को दर्शाते है।

उपमा अलंकार, अनुप्रास अलंकार का प्रयोग

(2) किया गया है

ईश्वर को लौकिक व अलौकिक रूप बताया

(3) गया है।

सिंघलद्वीप वर्णन

(3)

सिंगलद्वीप कथा अब गावौ।
आसो पदमिनि बखानि सुनावौ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - -

एक द्वीप नाहि आतप सिंहलद्वीप समीप

प्रसंग :→ मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित पद्मावत महाकाव्य से अवतरित उक्त पंक्तियों में सिंघलद्वीप की राजकुमारी पद्मावत के सौदर्य वर्णन किया है

व्याख्या :→ सिंघल द्वीप की राजकुमारी के सौन्दर्य की कथा सुनना सभी को अच्छी लगती है। राजा रत्नसेन अपने गुरु तोते से ये बखान सुनते है और पदमिनि के सुन्दर वर्ण की बात सुनना चाहते है। जिस प्रकार एक निर्मल दर्पण अपने स्वरूप में कुछ भी नही छिपा जाता है पद्मावती की कथा कहते हुए रतनसेन के गुरु कुछ भी नही छुपा पा रहे है

Date ___/___/_____

अर्थात सिंहलद्विप की राजकुमारी के सम्मुख अपना रूप सरस्वती है तो उसके रूप सौन्दर्य के आगे दिपक भी मध्यम अपने लगता है। सात द्विपो में सिंहल द्विप ही एक ऐसा द्विप है जिसमें पद्मावती ऐसी जैसी राजकुमारी अपने रूप सौन्दय के लिए प्रसिद्ध है। ऐसे द्विप में हमेशा उजियारा बना रहता है। जहाँ प्रेम सौन्दर्य के साथ-साथ दया करुणा भी निवास करती है। ऐसे द्विप का कोई भी किनारा पद्मावती के सौन्दय से प्रभावित हुए बिना नहीं है। जम्बू द्विप के साथ-साथ लंका द्वीप भी इस प्रकार के प्रभाव से अभिप्रेरित है मनुष्य अपने द्विप की पहचान इसी सिंहल द्विप के आधार द्वीप ही सबसे उत्तम द्विप समझा जाता है। इसके सामने या द्वीप की बराबरी कोई भी द्वीप नहीं कर सकता है।

विशेष :→

(i) जायसी सिंहलद्वीप व पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है

(ii) पद्मावती के सौन्दर्य का दया, करुणा, प्रेम आदि संसार के द्विपो से अलग बनाती है।

(iii) उपमा, रूपक व बोध अलंकार का प्रयोग किया गया है।

प्र॰ जायसी के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए

अथवा

जायसी के काव्य कला स्रोत को स्पष्ट कीजिए

उत्तर परिचय :→ पद्मावत पर्वतखंड जायसी के पद्मावत महाकाव्य का अंश है। जायसी भक्तिकाल प्रेम मार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि है। उनके पद्मावत में पद्मावत सबसे प्रमुख महाकाव्य है। इसमें मसनवी शैली को अपनाया गया है। यह एक प्रबन्ध काव्य एवं महाकाव्य है जो राजा रत्नसेन पद्मावती की प्रसिद्ध लोकगाथा पर आधारित है। इसके द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना की जाती है पद्मावत में कथा वस्तु है व अध्यायों में सर्गों में विभक्त खण्डों के नाम ऋतु का घटना के आधार पर रखा गया है।

* जायसी के काव्य कला ⇒ जायसी की प्रमुख - चित्रलेखा, आखरी कलाम, अखरावट, मलिक मुहम्मद जायसी, कन्हैरा बावा आदि

कला स्त्रोत :→ जायसी का पद्मावत सखियों की मनसमनी पद्धति पर लिखा हुआ है। एक प्रेम प्रधान काव्य है जिसके आधार पर जायसी की काव्य कला को स्पष्ट रूप से हृदयगम किया जा सकता है पद्मावत महाकाव्य इति

Date ___/___/______

वस्तात्मक होते हुए भी रसात्मक होता है इसका प्रमाण है की नगर, राजे, भवन, दुर्ग, सरोवर, युद्ध, पुत्र जन्म, विवाह, क्रिडा, रूप सौन्दर्य और संयोग वियोग का विस्तृत विवरण मिलता है जायसी के प्रकृति सौन्दर्य की पलाकी चे। उन्होने पद्मावत मे स्थित सिंहल द्विप वर्णन खण्डो में सात द्विपो को एक मनोहारी रूप है
जायसी से मानव की चीर- सहचरी प्रकृति के क्रिडा- कलाप भाव- पूर्ण दृष्टि से देखा गया है तथा प्रकृति के व्यापारो के साथ साम्य स्थापित करते हुए मृदुयम भावो के सुन्दर चरषिका कलित किए है जायसी का प्रकृति अंकित मानव मनोभावो का आकर्षण चित्र है जायसी की रहस्यभावना ही उनके काव्य की उपलब्धि है।
पद्मावत श्रृंगार- रस प्रधान काव्य है इसमे रति नायक स्थायी भाव की पूर्ण व्यजना हुई है और करूणा रस की अवतरण दिखाई देती है जायसी ने श्रृंगार- रस के बडे मनोरम चित्र अंकित किए है संयोग वियोग मे से वियोग को प्रथम भूमिका पर प्रस्तुत किया है।
जायसी की भाषा अवधी है उनके का रूप में अवधी भाषा का स्वभाविक रू देखने को मिलता है उनकी भाषा में अवधी, फारसी, शब्दो का प्रयोग किय गया है।

Date __/__/__

उनकी शैली को मनस्वी माना जाता है जायसी का विरह वर्णन विशेषकर नागमति को हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।

भाव पक्ष की विशेषताएं :⇒

* प्रेम तत्वों का निरूपण

1. डॉक्टर जारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार
2. प्रेम का लौकिक व अलौकिक रूप
3. प्रकृति चित्रण
4. श्रृंगार रस प्रधान काव्य
5. भाषा शैली
6. छंद अलंकारों का प्रयोग
7. रस निरूपण
8. सौन्दर्य वर्णन
9. रहस्यवादी वर्णन
10. कला की पक्ष की विशेषता
11.

1. प्रेम तत्वों का निरूपण :⇒ जायसी प्रेम मार्गी सूफी धारा के कवि थे सूफी लोग मानते हैं की ईश्वर अत्यन्त सुन्दर है चारों ओर उनका ही सौन्दर्य फैला हुआ है और ईश्वर को प्राप्त करने का उपाय प्रेम और विरह है। विरह से प्रेम और प्रसार होता है जायसी ने अपने काव्य में लौकिक प्रेम वर्णन द्वारा अलौकिक प्रेम की भी व्यंजना की है इसी कारण उनको पद्मावत समासप काव्य भी कहा जाता है जायसी ने हिन्दु जीवन से रत्नसेन व

पद्मावती की कथा की रचना की गई है।

2। डॉक्टर जारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार :→ जायसी ने फ़ारसी प्रेम पद्धति से पद्मावत प्रेमव्याख्यान काव्य की रचना की है। इस कारण उन्होंने प्रेम की महिमा को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया है। विरह-वेदना व सौन्दर्य को भी अधिक बदला गया है। ईश्वर प्रेम सौन्दर्य युक्त है इसे प्राप्त करने का उपाय प्रेम है।

3। प्रेम का लौकिक व अलौकिक रूप :→ जायसी के काव्य में लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना के माध्यम से अलौकिक प्रेम को चित्रित किया गया है। रानी पद्मावती यहाँ परमात्मा के रूप में और रत्नसेन आत्मा के प्रति कामत्व के रूप में प्रस्तुत है। जायसी पद्मावत महाकाव्य में प्रतिकात्मक से पद्मावती व रतनसेन दोनो के प्रेम को वास्तविक जीवन के आधार पर वे निर्गुण भक्ति भावना ~~की~~ को स्वीकार करते है।

4। प्रकृति चित्रण :→ जायसी प्राकृतिक सौंदर्य के पारखी थे वे अपनी रचनाओं में प्रकृति के मनोरम दृश्यों को मानवीय संवेदना के साथ जोड़ते थे प्रकृति की अनजुल क्रीड़ाओं को देखकर सभी जीव हर्षित हो जाते है।

Date __ / __ / __

विभिन्न क्रियाकलापों और व्यापारों को मानवीय को सरस और सुन्दर रूप में चित्रित किया है पद्मावत का मानसरोवर खण्ड इसी का प्रतीक माना जाता है।

5| **श्रृंगार रस प्रधान काव्य** :-> जायसी ने पद्मावत महाकाव्य में श्रृंगार के दोनों रूपों को चित्रित किया है। वियोग श्रृंगार का चित्रण रानी नागमति के माध्यम से किया है। बारह मास खण्ड में एक नायिका पर (विरोधी) बारह महीने का भिन्न - भिन्न प्रभाव पड़ता है। और सबसे अधिक आषाढ़ और सावन मास में ही ज्यादा प्रभाव पड़ता है संयोग श्रृंगार में राजा रतनसेन पद्मावती से मिलता है और रानी पद्मावती के सौन्दर्य का नासिक वर्णन किया है। संयोग- श्रृंगार का प्रमुख रूप रहा है।

6| **भाषा शैली** :-> जायसी के काव्य में अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है अरबी, फारसी, भाषा के शब्दों के साथ जायसी की शैली मनसमर्नी दिखाई देती है।

7| **छन्द अलंकारों का प्रयोग** :-> जायसी ने अपने काव्य में अधिक हृदय मूलक अलंकारों का प्रयोग किया

Date ___/___/___

गया है अलंकारों के माध्यम से काव्य में अधिक द्वय मनोभावों का बड़ा रमणीय रूप दिखाया है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अलंकारों का प्रयोग किया है और इसी कारण इनके काव्य में अर्थ की गंभीरता भी दिखाई देती है दोहा चौपाई छंदों का अधिक हुआ है

रस निरूपण :→ पद्मावत में शृंगार, करुण, वीर, विभत्स, भयानक, वात्सल्य, शांत आदि सभी रसों का चित्रण हुआ है इसमें मुख्यत शांत रस है क्योंकि जायसी का लक्ष्य आत्मिक प्रेम- व्यंजना रहा है इनमें शृंगार रस का बड़ा सुन्दर वर्णन हुआ है शुक्ल के अनुसार नागमति के विरह वर्णन हिन्दी साह साहित्य की अनूठी निधि है।

सौन्दर्य वर्णन :→ जायसी ने पद्मावती के सौन्दर्य का बड़ा मनोरम चित्रण किया है यह वर्णन नखसिख वर्णन पद्धति के अंतर्गत आता है रत्नसेन उसके सौन्दर्य के प्रति आकर्षि होकर सब-कुछ छोड़ देता है पद्मावती के सौन्दर्य का रत्नसेन का गहरा प्रभाव पड़ता है।

रहस्यवादी वर्णन :→ पद्मावत में अनेक जगह रहस्यवादी वर्णन हुआ है कवि ने कहीं तो रवि, शशि, दीप, सत ज्योति यह कहकर उस अगोचर

Date ___/___/___

की ओर संकेत किया है और वही पर "सकल मन पुरी सो नामा जहाँ देखो वहाँ होय दूसरो नई कोइ यह कहकर उस सत्ता की सर्वत्र विद्यमान मान्यता का वर्णन किया है।
"कही चन्न जो देखा कमल भा पा हस्त जो देखा हस्त यह कहकर प्रत्येक पदार्थ में उस प्रेम सत्ता का प्रतिबिंब बताया गया है। और उसी जीव-जगत के साथ भाव दिखाई देता है।

* कला पक्ष की विशेषताएँ :-

जायसी का कला पक्ष अनेक विशेषताओं से खंडित है उनका भाषा सौष्ठव भावानुकूल है उनकी अवधी भाषा सीधी-सादी बोलचाल की मुहावरे दार है।

समस्त पदों का प्रयोग बहुत कम हुआ है भाषा में अभिधा, लक्षणा, व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग देखने से मिलता है भाषा में पुनरुक्ति दोष भी है।

जायसी की अवधी भाषा तुलसी की भाषा की तरह कुछ स्तर की साहित्यिक भाषा नहीं है भाषा में प्रतीकात्मक चित्रात्मकता की विशेषताएँ है। फारसी के काव्य के प्रभाव में पद्मावत में देखा जा सकता है कुत्सात्मक वीभत्स वर्णन प्रभाव का परिणाम है पद्मावत में रहस्य मूलक अलंकारों का प्रयोग हुआ है। पद्मावत का स्थानक रूपक व समासोक्ति पर

Date ___/___/___

आधारित है। व्यतिरेक अलंकार का भी प्रयोग हुआ है।

<u>निष्कर्ष</u> :- संक्षेप में जायसी का पद्मावत एवं महत्वपूर्ण प्रबंधात्मक महाकाव्य है। अवधी भाषा में रचे गए इसके काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से अपनी उल्लेखनीय विशेषता है इसमें कला पक्ष की अपेक्षा भाव पक्ष प्रबल है।

यूनिट - III

Date 4 / 11 / 2024

अध्याय - 3

[तुलसीदास]

जीवन परिचय -

जन्म :- 11 अगस्त 1568

स्थान :- उत्तरप्रदेश

मृत्यु : 30 जुलाई 1623

बचपन का नाम : रामबोला

गुरु का नाम : नरसिंहदास

पिता का नाम : आत्माराम दुबे

माता का नाम : तुलसी दुबे

रचनाएँ : रामचरितमानस, विनयपत्रिका, दोहावली, कवितावली, हनुमान चालीसा, वैराग्य, संदीपनी, जानकी मंगल, पार्वती मंगल आदि

प्र.1. तुलसीदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए

प्र.2. तुलसीदास की भाषा शैली पर विचार कीजिए

Ans. भूमिका ⇒

(i) तुलसीदास की भक्ति भावना

(ii) दास्य भाव की भक्ति

(iii) प्रभु की उदारता व महानता में विश्वास

(iv) सम्बंधों का केन्द्रीकरण

(v) आत्म प्रबोधन व आत्म परिस्कार

(vi) आत्म दोषों का प्रकाशन

(vii) आत्म निरक्षण

(viii) सात्विक जीवन की कामना

भूमिका ⇒

गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य में श्रेष्ठ भक्त कवि भक्त कवि के रूप मे सम्मानित

Date __/__/__

है उन्होंने कविता के उदय से भक्ति को विषय नहीं बनाया है फिर भी उनके काव्य में उनके भक्ति सम्बन्धी विचार व विश्वास स्पष्ट से दृष्टिगत होते है

रामचरितमानस सदाचरण का आदर्श ग्रन्थ है जिसे अनेक लोग पंचमवेद भी कहते है और उनका भावपूर्ण ग्रन्थ विनय पत्रिका को भक्ति का महासागर बताया गया है

II तुलसीदास की भक्ति भावना ⇒

तुलसीदास ने अपने विभिन्न काव्य मे आराध्यों को रिझाकर उन्हें अनुकूल बनाकर अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया है उनकी भक्ति भावना की विशेषता निम्न प्रकार से है

(i) दास्य भाव की भक्ति ⇒

तुलसीदास की भक्ति दास्य भाव की है व अनुचर की तरह राम के साथ अत्यंत मर्यादापूर्ण व्यवहार कहते है तथा दास बनकर अपने स्वामी को रिझाते है अपने दास्य भाव के आदर्श पवनपुत्र हनुमान है जो केवल सेवा के माध्यम से अपने को प्रसन्न करके के लिए तत्पर रहते है रामचरितमानस मे तुलसी ने इसी सेवा भाव को भक्ति व मुक्ति को स्वीकार किया है

" सेवक सेवा भाव बिन भव, न तरि पूरा गॉव "

(ii) प्रभु की उदारता व महानता ⇒

विनय पत्रिका मे तुलसी का भक्त

Date ___/___

अराध्य के चरणों में पाने का प्रयत्न करता है उन्हें अपने इष्ट देव की उदारता व महानता में है राम उदार है, विनयशील है, क्षमाशील है, विश्वास है उनके समान भक्तों पर दया करुणानिधान है और उनके समाजहित पापियों कर सकता है का उदार करने वाला कोई नहीं है अराध्य के शीलशक्ति के सौन्दर्य का भाव करते हुए तुलसीदास ने मन के भाव का विश्वास व्यक्त किया है।

(iii) सम्बंधों का केन्द्रीकरण ⇒

तुलसीदास की भक्ति की विशेषता यह है की राम मे ही समस्त सम्बंधों का केन्द्रीकरण कर देते है। अतः जिसका सम्बध राम से है वह तुलसीदास का भी निटकता व्याप्त हो जाता है। इस प्रकार राम के साथ-साथ बहुविद सम्बंधों की स्थापना करके उन्हें अपना बना लेते है व उसे परित्याग समझते है

(iv) आत्म प्रबोधन व आत्म परिस्कार ⇒

तुलसी की भक्ति भावना आत्म प्रबोधन व आत्म परिस्कार को विशेष रूप का गुण माना जाता है उन्होंने अनेक स्थलों पर आत्म परिचय की बात स्पष्ट कही है तथा स्वयं को समझने की कोशिश की है।

(v) आत्म दोषों का प्रकाशन ⇒

विनयपत्रिका मे पायों को तुलसीदास ने मात्र अराध्य का गुणवाद किया है। अपितु गिन-गिन कर अपने दोषों का गुणगान किया है

Date ___/___/___

दोषो की स्वीकृति प्राय: हृदय की स्वच्छता की परिचायक होती है।

(vi) आत्म निरक्षण ⇒

तुलसीदास भक्ति के लिए आत्म-निरक्षण और आत्म ज्ञान अवश्य ही मानते है उनके ही स्वमात समाप्त हो सकते है वह अपने मन की गति जानते है और मोह माया, ममता, कृष्णा। इन सभी के विरोध भगवान राम से पर्याग करते है

(vii) साध्य जीवन की कामना ⇒

सच्चा भक्त अपने कर्मो के साथ जीवन की अपने सांसो को सदाचार से रखना चाहता है तुलसीदास ने अपनी विनयपत्रिका मे स्थान-स्थान पर गुणो के प्रति उत्कर्ष लालसा व्यक्त की है सात्विक गुण ही भक्त का आधार हो सकता है अन्यथा केवल वाम्य ज्ञान मे निपुण रहकर स्तुतियाँ गा-गाकर ईश्वर भक्ति नही की जा सकती।

Date ___/___/___

प्र.2. तुलसीदास की भाषा शैली पर विचार कीजिए

Ans. तुलसीदास का परिचय

तुलसीदास की रचनाएँ

तुलसीदास के काव्य की विशेषताएँ

प्रकृति चित्रण	समाज मे आपसी भावनाएँ की स्थापना	भाषा शैली	समन्वय वाद	अलंकारों का प्रयोग	शैव व वैष्णव का समन्वय	छंदों का प्रयोग

परिचय→ तुलसीदास सगुण काव्य धारा के कवि माने जाते है इनके आराध्य का नाम था । इनकी भक्ति भावना ह्रदय में चित्रित हुई है । इनके काव्य उच्च आदर्शों की स्थापना हुई है। इनका जन्म 1554 में माना जाता है और उनका देहांत 1680 में माना जाता है।

तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ→ रामचरित्रमानस, कवितावली गीतावली, विनय पत्रिका, कृष्ण गीतावली, दोहावली, पार्वती मंगल आदि प्रमुख रचनाएँ है।

तुलसीदास के काव्य की विशेषता→

1| प्रकृति चित्रण→ तुलसीदास के काव्य में प्राकृतिक सौन्दर्य व प्रकृति की प्रत्येक वस्तु का आदि वन, पर्वत, नदी, सरोवर, ऋतुए

Date ___/___/___

का मनोहर चित्रण किया गया है। प्राकृतिक घटनाओं का वह प्रकृति से मानवीय स्वभाव को जोड़ना उनके काव्य में दिखाई देता है।

2। **भाषा शैली** ⇛ तुलसीदास की मुख्य भाषा अवधी है किंतु ब्रज के समावेश से इनके काव्य में और भी अधिक महत्ता दिखाई देती है भाषा, सरल, सहज, व्यवहारिक व मुहावरे दार है भावों के अनुसार तुलसीदास ने काव्य में भाषा का चिंतन किया है

3। **अलंकारों का प्रयोग** ⇛ तुलसीदास के काव्य में निम्न महत्वपूर्ण अलंकारों का प्रयोग अधिक दिखाई देता है उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा का प्रयोग भलीभाँति किया गया है साथ ही व्यक्तिपरक अलंकार अनुप्रास, यमक श्लेष अलंकार भी कई जगह देखने को मिलते है

4। **छंदों का प्रयोग** ⇛ इनके काव्य में मुख्य रूप से दोहा और चौपाई तो है और साथ में सवैया और कवित्त तथा वर्णित छंद का प्रयोग किया गया है।

5। **समाज में आपसी भाईचारे की स्थापना** ⇛ तुलसीदास किसी ना किसी सामाजिक भी संगतियों को दूर

Date __/__/__

करने का संदेश देते है। आपसी भाईचारा प्रेम, व्यवहार, मानवता सर्वोपरि का सिद्धांत अपनाया गया है

6। समन्वयवाद ⇒
तुलसीदास के काव्य मे सगुण व निर्गुण का समन्वय दिखाई देता है।
जैसे –
बिनुपद चले सिने बिनु काना।
कर बिनु कर्म, करे विधि नाना।

7। शैव व वैष्णव का समन्वय ⇒
इसी प्रकार तुलसीदास ने अपने काव्य मे धर्म-अधर्म का समन्वय, भोग और योग का समन्वय, ज्ञान व भक्ति का समन्वय स्थापित करने की कोशिश की है।

निष्कर्ष ⇒
संत तुलसीदास जिन्हें स्वामी के नाम से भी जाना जाता है एक प्रसिद्द व सम्मानित लेखक व कवि थे। उन्होंने कई किताबें लिखी जो सनातन धर्म, भारतीय विचारधारा की अभिव्यक्ति है संत तुलसीदास की से अधिक लोकप्रिय रचना है। जिनका उपयो लोग रोजमर्रा की जिंदगी अध्यापित, मार्गदर्शन और सलाह दोनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

Date 5/11/24

अध्याय - 3

तुलसीदास

निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(1)

मन पछितै है अवसर बीते
दुर्लभ काया आगिनि तुलसी कहुं।
विषय भोग बहुती ते ।।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित विनय पत्रिका से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒

भक्तिकाल के सगुण भावा के कवि तुलसीदास द्वारा गुप्त अवतरण में कवि विर कर रहे है और मानव जन्म की सार्थकता को भक्ति भावना के आधार पर स्वीकार करते थे कवि का कहना है की भक्ति मे उसका सार है

शब्दार्थ ⇒

पछितै है - पछतायगा
ही - हृदय
काल बली - बलवान
उद्धृत धाम - भवन
बहु रीते - खाली
सुत - तुनिपादि
नेह सबही - सबसे प्रेम
पामर - नीचे
दुराशा - मन से निराशा
काम अग्नि - कामाग्नि

व्याख्या → इसी क्रम में तुलसीदास जी कहते है की अवसर चले जाने के बाद मन में पछताना व्यर्थ है। समय रहते ईश्वर की भक्ति कर जीवन का उद्धार कर लेना चाहिए। इस मानव देह का प्राप्त होना बहुत मुश्किल होता है मन, वचन, कर्म से ईश्वर की साधना करें हमें जन्म-मरण के प्रस्ताव से छुटकारा कर लेना चाहिए। इससे छुटकारा तब ही सकती है जब हम पूर्ण रूप से ईश्वर की भक्ति करेंगे। आगे उदाहरण देते हुए कवि कहते है की जिनके हजारों भुजाएँ और दशमुख थे राजा बने हुए थे वो इस काल से भलीभाँति नही बच पाए हमें ईश्वर की भक्ति पर ध्यान लगाना चाहिए इस संसार मे लोग धन इकट्ठा कर लेते हैं। फिर भी उनको कोई नही रोक पाता है। बहुत सारे सेठ साहूकार स्वार्थ के कारण बेईमानी करती है तो किसी से प्रेम नही करते उनका भी अंत एक ईंट की भाँति हो जाता है तुलसीदास जी कहते है की जो व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करता है तो सभी प्रकार की बुराइयाँ त्याग देता है ऐसे लोगों का उद्धार प्रभु बिना किसी प्रयास से कर देते है। तुलसीदास जी कहते है की विषय वासना व्यक्ति की कमजोरी होती है और यह विषय वासना व्यक्ति के हितों को या ईश्वर की साधना में बहुत बड़ा बाधक तत्व मानी जाती है। जन्म-मरण के फेर में विषय भाव घी का काम करती है तथा व्यक्ति सच्चे मन में

Date ___/___/___

ईश्वर की साधना करते है तो ईश्वर उनका उद्धार जरूर करते है।

विशेष →
(i) ब्रज व अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।
(ii) अनुप्रास अलंकार के साथ उपमा, रूपक अलंकार का समावेश किया गया है।

अवतरण → 2

मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो।

डासत ही गयी बीति निसा सब, कबहुं न नाथ! नींद भरि सोयो ॥

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत अवतरण कवि तुलसीदास द्वारा रचित विनयपत्रिका से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒
कवि तुलसीदास ईश्वर से विरह करते है और अपने मन के प्रतितापों को दूर कर भक्ति में अपना सबकुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहते है

कठिन शब्दार्थ ⇒

बिगोयो	-	बरबाद किया
भ्राम	-	भ्रम
बिहाय	-	छोड़कर
वृथाहि	-	व्यर्थ ही
बरि बिलोयो	-	पानी का बिलोया

Date __/__/__

खोयो - छिपाया।
तृषावंत - प्यासा।
डासत - करवट बदलो
आकाश निचोयो - आकाश का निचोड़

व्याख्या ⇒ कवि का कहना है की मैं अज्ञानी हूँ मुझे किसी बात का ज्ञान नही है ईश्वर की भक्ति की भक्ति मे किसी भी प्रकार का मन नही लगता है। मन के वशीभूत होकर मैं मेरा जीवण बरबाद कर रहा हूँ। तुलसीदास जी कहते है की ईश्वर की भक्ति और दया का प्रभाव मैने सुन रखा है। लेकिन फिर भी मेरा मन ईश्वर की भक्ति की ओर आकर्षित नही हो रहा है। इस संसार मे जन्म-मरण के लिए मे रो रहा हूँ। अनेक व्यक्तियों के साथ जो मधुर सम्बंध होना चाहिए। उन मधुर सम्बंधो से भी दूर होता जा रहा हूँ। अच्छे सुखो की प्राप्ति की इच्छा के कारण मैने मेरे जीवन मे बहुत कुछ खो दिया है। इसी क्रम मे तुलसीदास जी कहते है की मोह के वशीभूत होकर कई प्रकार के कार्य किए लेकिन मे अज्ञानी या बुद्धि से कमजोर और व्यर्थ मे ही समय गंवाता रहा ईश्वर की भक्ति का मुझे कोई आभास नही हुआ। कुटिलता वश मैने ऐसे अधम किए है और मन मे प्रशंसा भी होती है इसी कारण जीवन मे मुझे वास्तविक सुख नही मिला और इसी कारण मेरा उद्धार हो पाया।

Date ___/___/___

कवि तुलसीदास जी कह रहे है की ईश्वर की भक्ति मे स्नान की नदियां नहाई जा रही है मैंने उसका लाभ उठाया नहीं और बार-बार आकाश की ओर पानी की ओर देखता रहा।
कवि तुलसीदास जी कह रहे है की हे प्रभु मेरे पर कृपा करे जिससे मेरे स्वयं के दोष दूर हो सके। और रात-दिन तुम्हारी भक्ति करता रहूँ। मैंने जीवन में कभी सुख को सोचा ही नहीं। इसलिए हे प्रभु आप मेरे सभी पापकर्म को भुलाकर भक्ति भाव अपनाता हूँ। और आप मेरा उद्धार करे और मुझे इस पाप से दूर निकाले।

विशेष →

(i) ईश्वर की गहन भक्ति का मार्मिकता से वर्णन किया गया है
(ii) सहज भाषा शैली का प्रयोग किया गया है।
(iii) अनुप्रास अलंकार का भली भाँति उपयोग किया गया है

Date 25 / 11 / 2024

अध्याय - 3
रसखान

रसखान का परिचय →

जन्म :→ 1548 ई में।

मृत्यु :→ 1628।

हिन्दी कृष्ण काव्य धारा में कृष्ण भक्त कवि रसखान का महत्वपूर्ण स्थान है। वह स्वछंद भाव धारा के कवि थे। उन्होंने वल्लभाचार्य के पुत्र स्वामी विट्ठलनाथ का शिष्यत्व ग्रहण कर एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया था। मुसलमान होते हुए भी उन पर सम्प्रदायिक संकीर्णता हावी न हो सकी। लौकिक व अलौकिक प्रेम ही रसखान के काव्य का मूल आधार है। ऐसा लगता है की रसखान के जीवन लौकिक प्रेम का सूत्रपात हुआ हो

प्रमुख रचनाएँ ⇒

सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दान लीला आदि

वह तीनों रचनाएँ प्रमाणिक मानी जाती है इनके अतिरिक्त रसखान के पद और दोहे भी मिलते है। रसखान के जो भी ग्रन्थ मिले प्रकाशित हुए उनमे कवित्त, सवैया, दोहे उपलब्ध है। आचार्य विश्वनाथ प्रकाश मिश्र ने 'रसखान ग्रंथावली' का सम्पादन किया है तो पंडित विद्यानिवास ने भी रसखान ग्रंथावली का सम्पादन किया है।

Date ___/___/___

निम्नलिखित सवैया अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

अवतरण - 1 ⇒

मानुष हौं तो रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
- -
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब क्रीडारन।।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत सवैया हिंदी साहित्य के रसखान के पदों द्वारा "सुजान रसखान" से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒ कवि ने श्रीकृष्ण के गाँव का गोकुल का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है।

कठिन शब्दार्थ ⇒

मानुष	-	प्राणी
बसौं	-	बसना
पाहन	-	पत्थर
ग्वारन	-	ग्वालों मे
लकुटी	-	लाठी
खग	-	पक्षी

व्याख्या ⇒

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रसखान ने श्रीकृष्ण ने उनके गाँव गोकुल ब्रज के प्रति वर्णन किया है रसखान मानते है की ब्रज

Page No. ____

Date __/__/__

कण-कण श्रीकृष्ण बसे हुए है इसी वजह से प्रत्येक बार जन्म लेना चाहिए। गोकुल की गायों के साथ घूमना-फिरना चाहते है अगर वो पत्थर भी बने तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनाना चाहते है जिससे श्रीकृष्ण ने इन्द्र के प्रकोप के लिए गोकुल वासियों को बचाने के लिए अपनी अंगुली पर उठाया अगर वो पक्षी भी बने तो यमुना के तट पर कदंब के पेड़ों पर रहने वाले पक्षियों के साथ रहना चाहते है। इस प्रकार कवि चाहे कोई भी जन्म ले वह श्रीकृष्ण के साथ रहना चाहते है।

विशेष ⇒ (i) ब्रज भाषा का सुन्दर चित्रण किया गया है।

(ii) अनुप्रास अलंकार का समावेश किया गया है।

26-11-2024

अवतरण = II ⇒

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूं पुर कोतजि डारौ।

कोटिक रो कलधौंत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौ।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत सवैया रसखान द्वारा रचित सुजान रसखान ~~इस~~ से उद्गत है

संदर्भ ⇒

कवि रसखान श्रीकृष्ण की वस्तुओं

Date __/__/__

से देखना चाहते है की वस्तुओ के मोह मे सब कुछ त्यागने के लिए तैयार है।

कठिन शब्दार्थ ⇒

लकुटी - छडी
कामरिया - लाटा छोटा
आठहुँ - पूरे आठ
कलधौत - सुनहरी
कॉटेदार - झाडी
घनत - गिनते है
गनिका - अप्सरा
सारद - शारदा

व्याख्या ⇒

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रसखान का भगवान श्रीकृष्ण एवं उनसे जुडी वस्तुओ के प्रति बडा गहरा लगाव देखने को मिलता है। रसखान ~~का लाठी और~~ कहते है की छडी या लाठी केवल तीनो लोको का सुख त्याग कर सकता है नंद बाबा की गाय चराने को मिले तो उस पर मैं आठो सिद्धियो और नौ निधियों का सुख त्याग कर सकता है अर्थात गाय चराने के सुख पर आठो सिद्धियों और नौ निधियो के सुख को भी भुला दूँगा।
जब मेरे नेत्रो को ब्रज के तालाब देखने को मिल जाए और करील के कुंजो में विचरण करने का अवसर सौभाग्य मिल जाए तो मैं उस सुख पर सोने के करोडो भवनो को भी न्योछावर कर सकता हूँ।

Date ___/___/___

रसखान यह कहना चाहता है की मुझे कृष्ण से सम्बंधित ब्रज की वस्तुए से सुख प्राप्त हो सकता है वह और किसी भी तरह नही मिल सकता।

विशेष ⇒
(i) नंद से रसखान की भक्ति व्यंजित हुई है।
(ii) भक्त को सर्वाधिक अराध्यो के सान्निध्य का सर्वाधिक महत्व होता है भौतिक किमती वस्तुओं का नही।

27-11-2024

अध्याय-3

प्र.1. रस की खान कवि रसखान का साहित्य परिचय देते हुए काव्य की विवेचना कीजिए

उत्तर हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्त तथा रीतिकाली कवियों मे रसखान का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। इनके काव्य मे भक्ति दोनो की प्रधानता मिलती है और प्रभु के सगुण और निर्गुण निराकार रूप में के प्रति सरदालु है।

जन्म स्थान ⇒ रसखान के जन्म स्थान के विषय मे अनेक विद्वानों मे अनेक मत प्रस्तुत किए है। रसखान का जन्म स्थान दिल्ली मे बताया है। दिल्ली शब्द का प्रयोग एक ही बार मिलता है।

Date

अन्य पुष्ट प्रमाणों के आधार पर रसखान का जन्म स्थान पिहानी जिला हरदोई माना जाता है

नाम व उपनाम :- जन्म स्थान तथा जन्म काल की तरह रसखान के नाम व उपनामों के सम्बंध मे भी अनेक मत प्रस्तुत किए गए है हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक मे रसखान के दो नाम लिखे है सुजान रसखान, सैयद इब्राहिम जबकि सुजान रसखान की एक रचना का नाम है। हालांकि उसका असली नाम सैय्यद इब्राहिम और खान तो उनकी उपाधि थी

नैन दलालनि चौहटे म मनिक पिय हाथ
रसखाँ ढोल बजाइ के बेचियो हिय जिय साथ

बाल्यकाल और शिक्षा :- रसखान एक जागीदार के पुत्र थे इसलिए उनका लालन पालन बडे प्यार से हुआ माना जाता है की उनके काव्य में किसी विशेष प्रकार की कट्टरता का सरासर अभाव पाया जाता है.. । एक सफल परिवार मे पैदा होने के कारण उनकी शिक्षा उच्च कोटि की मानी गयी है। उनकी यह विद्वता उनके काव्य की अभिव्यक्ति में जब जाहिर होते है। रसखान को फारसी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। फारसी मे उन्होंने श्रीकृष्ण भगवान का अनुवाद करके यह साबित कर दिया था

Date __/__/__

की उनकी शिक्षा प्रणाली उच्च कोटि की मानी गयी है। रसखान ने अपना बचपनकाल अपार सुख सुविधा में गुजारा है। उन्हें पढ़ने के लिए किसी मुक्तम्म जाने की आवश्यकता नही पड़ी थी।

रसखान और उनके काव्य का भाव विषय ⇒

रसखान के काव्य के आधार पर भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया गया है। उनके पूरे काव्य में भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति रचना की गई है। रसखान के श्रीकृष्ण के रूप को प्रकट किया है। इससे यह कहा जा सकता है कि वह सामाजिक एवं आपसी सौहार्द के कितने हिमायती थे। उनके द्वारा अपनाये गये काव्य को तीन भागों में बांटा गया है।

तीन खंड

(i) बाल लीला	(ii) कृष्ण लीला	(iii) गौचरलीला

(i) बाल लीला ⇒

रसखान ने कृष्ण के बाल लीला सम्बंधित कुछ पदों की रचना की है किन्तु उनके पद कृष्ण के भक्तजनों के कण्ठआहार बने हुए है अधिकतर कृष्ण भक्त इन पदों को गाया करते है

"काग के भाग बड़े सजनी हरि।
हाथ सौं ले गयो रसखान रोटि ।।

Date ___ / ___ / _____

कृष्ण के मानवीय स्वरूप में रसखान को अधिक प्रभावित किया। लेकिन रसखान ने अपने पदो में उनके ब्रह्मत्व को खास स्थान दिया है।

कृष्ण लीला →

कृष्ण लीला का सामान्य अर्थ खेल है इसी खेल सृष्टि माना जाता है कृष्ण लीला और आनंद राग एक-दूसरे से सम्बंधित है। जिसने लीला को पहचान लिया है उसने आनंददास को पहचान कर ही लीला के दर्शन कर लिये है। परन्तु उन्होंने आज तक भारतीय समाज को एक वेश कीमति तोफा दिया है।

गोचर लीला →

कृष्ण जी जब बड़े होते है तो वह ग्वालों के साथ गाय चराने वन जाने लगते है कृष्ण की गोचर तमाम अदाओं पर गोपियाँ दिवानी होने लगती है कृष्ण जी सभी कालिंदी के तीर खड़े हो गये तथा गाय घेरने के बहाने गोपियों से आकर अड़ जाते है।

ईकाई - IV

Date 14 / 11 / 2024

अध्याय - 2

मीरा

प्र.1 मीराबाई का साहित्यिक परिचय दिजिए

उत्तर परिचय →

जन्म - संवत 1555

मृत्यु - संवत 1620

मीरा का जन्म कुडकी नामक ग्राम में हुआ था बचपन में इनकी माता का देहांत हो जाने के कारण इनका लालन-पालन दादा जी के पास हुआ था। यह अपने पिता की इकलौती पुत्री थी दादा की भगवत भक्ति पर मीरा के बालक हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। और वह बचपन से ही प्रभु प्रेम में मग्न हो गई श्रीकृष्ण के प्रति बचपन का प्रेम धीरे-धीरे अटल अनुराग के रूप में परिवर्तित हो गया था

मीरा का विवाह चित्तौड़ के राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। वह इस व्यवहारिक सुख का उपभोग अधिक नहीं कर सकी। विवाह के कुछ वर्ष बाद वह वैधव्य कृष्ण के प्रेम में रंग गई और भक्ति ही उसके जीवन का संबल बन गई। कृष्ण को अपने पति के रूप में ग्रहण कर लिया। उसने अपना सर्वस्व कृष्ण पर ही न्यौछावर कर दिया। विष के प्याले को वह चरण मत समझकर पी गई।

Date ___/___/___

जब विष ही उस पर कुछ असर नहीं कर सका तो प्लारे में रखा विषधर शीलीग्राम की मूर्ति में परिवर्तित हो गया। तो वह फूलो की शैय्या बन गई।

मीरा ने नरसी जी मायरो, गीत गोविंद का टीका मीराबाई का मलार, राग, गोविंद, सोरठ के पद, मीरा के पद आदि सात रचना लिखी।

निम्नलिखित पद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

अवतरण = 1 ⇒

राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी ----------
मीरा को प्रभु राखि लई है, दासी आपणी जाणी॥

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पद मीराबाई के 'विरह वेदना' गीत काव्य से उद्धृत है

संदर्भ ⇒

मीराबाई ने राणा के द्वारा तरह-तरह के क्रियाकलापो द्वारा मीरा जी को मृत्यु दंड दिया गया है।

कठिन शब्दार्थ ⇒

दुहेलो	-	कठिन
बिण	-	बिना
मित	-	मित्र
जुग	-	युग
आणन्द	-	आनन्द

Date __/__/__

व्याख्या ⇒ कवयित्री मीराबाई जी कहती है की राणा जी तुमने मुझे जहर दिया है। मैं जान गई हूं जैसे सोना आग में तपकर सूरज की तरह चमक उठा है। हे राणा जी मैंने लोगो के खानदान की इज्जत को दुनिया में पानी की तरह बहाई है। हे राणा जी आप अपने घर पर पर्दा कर लो क्योंकि मै पागल औरत हूं साधु-संतो पर तनमन लगा दिया है। मैं उनके चरण कमलो से लिखती हूं। क्योंकि जो आपने मेरे साथ व्यवहार किया है। आपके तीर जो मेरे ह्रदय को लग चुके है जो बहुत गहरे है। मीरा को तो मीरा के प्रभु ने अपनी दासी समझकर अपनी शरण में ले लिया है

विशेष ⇒

(i) मीरा के इस पद में विरह वेदना व्यक्त की गई है

(ii) कृष्ण को मोहित करने के लिए मीरा को तरह-तरह की याचनाएँ दी गई है

(iii) इसकी भाषा सरल व सहज है

अवतरण ⇒ 2 ⇒ Important

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। ----------
दासी मीरा लाल गिरधर तारो अब मोहि ॥

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका मीरा द्वारा रचित पदावली से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒

मीरा स्वयं श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व घोषित कर रही है। संसार के सारे नाते तोड़कर, लोक लज्जा छोड़कर, केवल कृष्ण के प्रेम का आनंद ले रही है।

कठिन शब्दार्थ ⇒

कानि - मर्यादा, प्रतिष्ठा
ढ़िग - समीप
आणंद - आनन्द
रजी - प्रसन्न

व्याख्या ⇒

मीरा कहती है की अब तो मैं अपना नाता केवल श्रीकृष्ण से मानती हूँ। कोई भी मेरा इस संसार में अपना नहीं है। सिर पर मोर-मुकुट धारण करने वाले नटवर-नागर ही मेरे पति है। माता-पिता, भाई-बन्धु आदि से अब मेरा कोई नाता नहीं रहा। मैंने तो श्रीकृष्ण के प्रेम के लिए अपने कुल की प्रतिष्ठा को भी त्याग दिया है अब मेरा कोई क्या कर लेगा। सभी कहते है की मेरे संतो का सत्संग करके स्त्रीपोचित, लोक लज्जा को भी तिलांजली दे दी है पर मुझे इसकी कोई चिंता नहीं। मैंने अपनी कृष्ण प्रेम की लता को अपने आंसुओं से सिंचकर महान बनाया है अब तो यह प्रेम लता बहुत फैल चुकी है।

Date ___/___/___

अब तो इस पर आनन्द रूपी फल लगने वाले है। मुझे तो केवल अब श्रीकृष्ण की भक्ति में ही प्रियतम मिलता है। सांसारिक विषय को सुख मेरा मन दुखी होता है। मीराबाई देखकर रहे है की हे गिरधर गोपाल आप अपनी दासी मीरा का उद्धार कीजिए।

विशेष ⇒

(i) श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम भाव और भक्ति को मीरा ने हृदयस्पर्शी शब्दावली में साकार किया है।

(ii) इसकी भाषा ब्रज तथा सरल प्रयोग की गई है।

(iii) अनुप्रास अलंकार विद्यमान है।

अवतरण = 3 ⇒

निपट बंकट छवि नैना अटके।

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

मीरा प्रभु के रूप लुभानो, गिरधर नागर नटके॥

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत अवतरण शंभु सिंह मनोहर द्वारा संपादित मीरा पदावली से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒

इस पद में मीराबाई अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के मनोहर रूप और उनके अपने हाथ में बस जाने के बारे में बता रही है

Date ___/___/______

कठिन शब्दार्थ ⇒
बंकट - टेढी
छब - छवि
सकारे - प्रातःकाल
द्याम - जहाज
अटके - रूपराशि
पागल - पान का पिरा

व्याख्या ⇒
इस पद में मीरा श्रीकृष्ण बाके बिहारी वाले रूप की प्रशंसा करते है की उनकी बाकी छवि मीरा के नैनो में विराज गई है। मदन-मोहन कहते हुए मीरा श्रीकृष्ण को कामदेव से भी मनमोहक बता रही है। उनके श्रीकृष्ण का रूप इतना अनुपम है की उनके मीरा बाई की पलकों में समाने से नयन भी मटकने लगे है
इसका आशय यह भी हो सकता है की अमृत पान करके भी इंसान इतना अहोभाग्य नही मानता, जितना, प्रभु श्रीकृष्ण के रूप में रूप का पान करके मीरा की आखे मटक रही है श्रीकृष्ण की कोमल जैसे भाव है
श्रीकृष्ण जब बासुरी बजाते है तो टेढे खड़े होते है एक पैर दूसरी तरफ पैर ले जाकर कमर किंचित झुकाकर हाथों में बासुरी लेकर जब उसे बजाते है तो उस समय की उनकी मुद्रा त्रिभंगी मुद्रा कहलाती है। मीरा कहती है की बासुरी बजाने वाले

Date __/__/__

मुरलीधर की कमर टेढ़ी, बाँसुरी को पकड़ते हुए हाथ टेढ़े, पैर घुमे हुए और गले में लड़ी माला लटक रही है

विशेष ⇒

(i) कृष्ण के रूप लावण्य के बहाने पुरुष सौन्दर्य का आकर्षक चित्रण इस पद में देखा जा सकता है।

(ii) श्रीकृष्ण के अन्य नामों का प्रयोग हुआ है

(iii) संयोग शृंगार रस के साथ भक्ति रस मिश्रित है

(iv) "नैना निपट" तथा "नकट अटके" में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है

21-11-24

इकाई - IV

प्र.4. मीरा के काव्य सौन्दर्य की सउदाहरण सहित समीक्षा कीजिए

Ans. मीरा का काव्य सौन्दर्य ⇒

(i) नाम रूप महीमा	(ii) भक्ति भावना	(iii) विरह वियोग की वेदना
(iv) रहस्यात्मक अनुभूति	(v) प्रिय मिलन का आनंद	(vi) सरल भाषा विभक्ति
(vii) गेयता	(viii) मुक्तक काव्य	(ix) अलंकार
(x) गेयता		

Page No.

Date ___ /___ /______

(i) नाम रूप महीमा →

अन्य भक्त कवियों की तरह तथा सगुण भक्ति के कारण मीरा ने काव्य मे सानार्थ की निस्सरता एवं सामाजिक जीवन प्रचलित में अंध विश्वास से दूर रहने का संदेश का दिया है स्मरणीय नाम महिमा आदि को मानसिक विकारो को मिटाने वाला बताया है

"राम नाम रस पीजै, मनुआ राम नाम रस पीजै।
तज कुसंग सत्संग बैठि नित, हरि चर्चा सुन।

(ii) भक्ति भावना →

मीरा ने माधुर्य भाव एवं कांता भाव की भक्ति की है मीरा ने अपने अराध्य कृष्ण को अपना पति एवं प्रेम बताया है इस आधार पर अपने आराध्य की उपासना करने से मीरा के काव्य में शृंगार रस की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है जिससे उनकी भाव भक्ति मानी जाती है.

" मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥

वह अपने अराध्य प्रियतम की रूप माधुर्य पर मोहित होकर नाचती हुई उन्ही की भक्ति में निमग्न रहना चाहती है

" माई सावरे रंग- रांची,
साज सिंगार बांध पग, लोकलाज तज नाची ॥

(iii) विरह वियोग की वेदना →

मीरा ने अपने काव्य में प्रियतम को प्रवासी जोगी और अलगरियो कहकर

Date ___/___/___

उसके विरह वियोग में मार्मिक भावो की अभिव्यक्ति की है। उनके पदों में प्रेम वियोगनी की सभी दशाएं दर्शायी है।

" जोगिया निसदिन जोऊं बाट।
पांव न चलै पंथ दुहैलो, आडा औषध घाट ॥

(iv) प्रिय मिलन का सुख आनंद →

मीरा ने यद्यपि अधिकांश पदों में विरह वेदना की अभिव्यक्ति की है। तथापि उनके कुछ पदो में मिलन सुख के चरणों की कोमलता और आनन्दता की दशा भी भलीभाँति वर्णन किया गया है।

" मै तो गिरधर के घर जाऊँ।
मेरे साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ॥

(v) रहस्यात्मक अनुभूति :-

मीरा ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण को अभिव्यक्ति रूप में अपना प्रियतम एवं पति बताया गया है उन्होंने अपना प्रियतम को कही सगुण साकार तो, कही निर्गुण निराकार कहा है। इस कारण उनके काव्य में रहस्यावाद की अनुभूति व्यक्त हुई है

" चंदा जाएगा सूरज जाएगा धरणी अकाशी।
पवन पाणी दोनों जाएंगे अटल रहे अविनासी ॥

(vi) सरल भाव की विभक्ति →

मीरा के काव्य में अनुभूति की मार्मिकता है। परन्तु क्लिष्टता और जटिलता मात्रभार भी नही है। मीरा अपने हृदय के

Date ___/___/___

सरल के उद्गारों को सरल तरीको से व्यक्त करती है। उनके सभी पदों में विरह प्रेम, मिलन सुख तथा व्यवहार का चित्रण हुआ है। परन्तु कहीं भी भावों का उथलापन या उलझन नहीं है।

" माई री मैं तो लीयो गोविंदो मोल ॥

(vii) गेयता ⇒

मीरा के सभी गेय पद है और वह राग-रागनियों के आधार पर रचे गये दिखाई देते है। मीरा की मूल भाषा राजस्थानी, गुजराती, मिश्रित होने के कुछ राग लोक गीतों की तरह लगता है।

(viii) मुक्तक काव्य ⇒

मीरा का संपूर्ण काव्य मुक्तक शैली में रचित है। उनके काव्य में सभी गुणों का समावेश हुआ है। भावों का अविधा, तीव्रता एवं मार्मिकता की दृष्टि से मीरा के पदों में अनुभूतियों की सशक्त व्यंजना हुई है।

(ix) अलंकार ⇒

मीरा के काव्य में अलंकारो का अनायास ही हुआ है। संभवत उन्हे अलंकार शास्त्र का ज्ञान नहीं था। उन्होने अपना काव्य पाण्डित प्रदर्शन हेतु नहीं लिखा। उनका काव्य स्वार्थ हीन है

" मोहनी सूरत साँवरी सूरत, नैना बने बिसाल (अनुप्रास)

" भज चरण-कँवर अविनासी। (रूपक)

" ज्यूँ चातक घन क्यूँ रहे। मछली ज्यूँ पानी को। (उपमा)

Date __/__/__

(४) भाषा ⇒ मीरा के पदों में भाषा की कलात्मक का सवैया का अभाव है। उनके पदों की मूल भाषा राजस्थानी है। जिसमें ब्रज, गुजराती, के शब्दों का मिश्रण हुआ है।

मीरा की काव्यगत विशेषताएँ

(i) माधुर्य भाव
(ii) मीरा अपने अराध्य से अनन्य प्रेम
(iii) प्रकृति वरणा
(iv) बोलचाल की भाषा का अनूठा प्रयोग
(v) गेय शैली मे पद रचना
(vi) निर्गुण भक्ति का निरूपण
(vii) अलंकार एवं मुहावरे का प्रयोग

(i) माधुर्य भाव ⇒ मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। इन्होने श्रीकृष्ण को पति के रूप मे स्वीकार करते है और स्वयं उनकी पत्नी बनी रही। नारी होने के कारण उनके पदो मे अन्यथा और आत्मसमर्पण दुर्लभ रहा

"बसो मेरे नैनन मे नंदलाल
मोहनि मूरति साँवरि सूरति।
नैना बने विशाल"।

(ii) मीरा अपने अराध्य से अनन्य प्रेम ⇒ मीरा के पदों मे विनय भवना के पद भी है। परन्तु प्रमुखतत उनके विरह निवेदन के पदों की है। जो मीरा की भक्ति

Date ___ / ___ / ___

भावना के प्राण है। श्रीकृष्ण से उनका प्रेम अटल है।

" हरि मेरे जीवन प्राण आधार
और आसिरो नाहिन तुम बिन तीनु
लोक संसार ॥

(iii) प्रकृति वर्णन ⇒

प्रकृति को मीरा ने अपने भावो के अलम्बन रूप मे चित्रित किया है। घन-घराये, घोर, वर्षा, चमक पुकार आदि विरह मे चित्रकार बनकर कड़क उठी है।

" असुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेल बोई
अब तो बेल फैली गई, आणंद फल होई ॥

(iv) बोलचाल की भाषा का अनूठा प्रयोग ⇒

मीरा की भाषा व्यवहारिक है उसमें राजस्थानी, ब्रज, गुजराती, मिश्रित है। माधुर्य और प्रसाद दोनों गुणों से युक्त मीरा की भाषा प्रवाहपूर्ण है।

" दूध की मथनिया बड़े प्रेम से लाई।
दधि मथि घृत काढिलियो, डारि दयि छोई ॥

(v) गेय शैली मे पद रचना ⇒

मीरा के पद गेय है। उनका काव्य गीति काव्य है। उनके पदो में सरसता, गुणवत्ता, प्रवाह है। उनके पदो में लोकलाज भी पदो को बड़े लय के साथ गाते है और उसमे तन्मय हो जाते है।

" नैना लोभी रे बहुरि नाहि आये
रोम रोम नख सीख सब निरखत
ललच रहे ललचाय

Date __/__/____

(vi) अलंकार मुहावरे का प्रयोग →
मीरा के पदों में भावों के अनुरूप ही अलंकार, मुहावरों का प्रयोग सहस्वभाविक रूप में हो गया है। उसमें किसी भी प्रकार का आरोपण नहीं है।

अंसुवन जल सींचि-सींचि ...... (रूपक)
चंपल चंचल अटक नहीं मानत
पर हाथ गेय बिकाय (अनुप्रास)
गाइ माई के गुण निसादित
काल-व्याल लौ बाँची ।। (यमक)

(vii) निर्गुण भक्ति का निरूपण →
मीरा के पदों में संतोगय निर्गुण भक्ति का वर्णन ही प्रचुरता से किया गया है मीरा की भक्ति माधुय भाव में समावेश है। मीरा के प्रभु अविनाशी है। मीरा की पदावली में भक्ति युग की सरस भाव लहरिया स्पष्ट रूप से स्थिगत की गई है।

"आभि ठठी अरज करत है
अरज करत भयो भोर

निष्कर्ष →
मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। मीरा के पदों में विनय-भावना के पद भी है। परन्तु प्रमुखता उनके विरह निवेदन के पदों की है। जो की मीरा भक्ति भावना का प्राण है। मीरा की भाषा व्यवहारिक है, मीरा के पद गेय है उसका काव्य गीति काव्य है उसके पदों में सुगमता, सरसता और आदि का प्रभाव है।

आदिकाल के दो ... जयचंद्र प्रकाश

(i) पृथ्वीराज रासो (ii)

प्र.1. भक्तिकाल के तीन प्रमुख कवियों के नाम लिखिए

Ans. (i) कबीरदास (ii) तुलसीदास (iii) मलिक मुहम्मद जायसी

प्र.2. भक्तिकाल में भक्तिभावना के कौनसे रूप है

Ans. भक्तिकाल में भक्ति भावना साकार भक्तिभावना निर्गुण से

प्र.3. भक्तिभावना के रूप में व्याप्त हुई है।

Ans.

प्र. 4. भक्तिकाल की काव्य शाखाएँ लिखिए।

Ans. संत काव्य शाखा, सूफी काव्य, रस काव्य, कृष्ण काव्य

प्र.5. भक्तिकाल को स्वर्ण युग किस विद्वान ने कहा है?

Ans. डॉ श्यामसुन्दर दास ने लिखा है "जिस युग में कबीर, सूरदास व तुलसीदास जैसे सुप्रसिद्ध कवियों महात्माओं की दिव्यवाणी उनके अंतकरणों से निकलकर देश के "कोने-कोने" तक फैली थी उसे साहित्य के इतिहास में सामान्य शक्ति को युग कहते है निश्चित वह हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग था

प्र.6. भक्तिकाल की तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए

Ans. (i) आदर्शवादी एवं सुधारवादी मनोवृति

(ii) गुरु की महिमा

(iii) भक्ति का प्राचार्य

प्र.7 निर्गुण भक्ति की दो शाखाओ के नाम लिखिए है.

Ans. (i) ज्ञानमार्गी (ii) प्रेममार्गी

Date ___ /___ /______

प्र.8. सगुण भक्ति की कितनी शाखाएँ है?

Ans. (i) राम भक्ति शाखा
(ii) कृष्ण भक्ति शाखा

प्र.9. कृष्ण भक्ति शाखा के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए

Ans. (i) सूरदास (ii) मीराबाई

प्र.10. ज्ञानमार्गी शाखा की तीन विशेषताएँ बताइए।

Ans. (i) ईश्वर की निराकार रूप मे उपासना
(ii) आडम्बरों का विरोध
(iii) गुरु के भगवान समक्ष ठहराना

प्र.11 रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि का नाम लिखिए।

Ans. गोस्वामी तुलसीदास

प्र.12. कृष्ण भक्ति शाखा की चार प्रवृतियो का उल्लेख कीजिए।

Ans. (i) ईष्ट देव श्रीकृष्ण है
(ii) श्रृंगार के संयोग व वियोग का मार्मिक है
(iii) दाम्पत्य एवं सखा भाव की भक्ति
(iv) कृष्ण की बाल जीवन की सजीव झाँकी

प्र.13. हिंदी साहित्य मे रीति परम्परा का प्रचलन किस कवि ने किया है

Ans. आचार्य केशवदास ने हिंदी साहित्य मे रीति परंपरा का प्रचलन किया।

प्र.14. रीतिकाल के प्रमुख पाँच कवियो के नाम लिखिए।

Ans. (i) केशवदास (ii) भूषण
(iii) चिंतामणि (iv) देव
(v) बिहारी

Date ___/___/___

प्र.15. रीतिकाल के दो रीतिग्रन्थ कारो के नाम लिखिए।
Ans. (i) चिंतामणि
(ii) केशवदास

प्र.16. प्रेममार्गी शाखा की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए
Ans. चित्रवली, पद्मावत, मृगावती

प्र.17. ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवियो के नाम लिखिए।
Ans. कबीरदास, रैदास, नानकदेव, दादूदयाल, मलूकदास आदि

प्र.18. रीतिकाल की दो रचनाओं के नाम लिखिए
Ans. रामचन्द्रिका, बिहारी, सतसई।

प्र.19. रीति मुक्त धारा के दो कवियो के नाम लिखिए
Ans. (i) घनानंद (ii) ठाकुर

प्र.20. रीतिकाल के प्रतिनिधि का नाम लिखिए
Ans. बिहारी।

प्र.21. रीतिकाल काव्य की चार विशेषताएँ बताइए।
Ans. (i) श्रृंगार की प्रधानता
(ii) मुक्तक शैली
(iii) नारी प्रेयसी रूप में चित्रण
(iv) अलंकारिता

प्र.22. भारतीय सूफी के प्राय कितने सम्प्रदायों में विभक्त है।
Ans. (i) चिश्ती (ii) कादिरी
(iii) सुहरावर्दी (iv) नक्शबंदी
(v) शत्तारी

प्र.23. कृष्ण काव्य धारा का प्रवर्तक किसे माना जाता है।

Date ___/___/_____

Ans. स्वामी वल्लभाचार्य के कृष्ण काव्य शाखा का प्रवर्तक माना जाता है

प्र.24. कृष्ण भक्ति शाखा के काव्य में किस भाषा व छंद का प्रयोग है?

Ans. ब्रजभाषा व गेय पदों का प्रयोग

प्र.25. रीतिकाली कवियों का प्रमुख ध्येय क्या था?

Ans. रीतिकाली प्रमुख कवियों का ध्येय अपने आश्रयदाता को रिझाना व विद्वता का प्रदर्शन करना था।

प्र.26. रीतिकाल के नाम कारण पर प्रकाश डालिए।

Ans. इस युग के कवियों का प्रकृति रीतिसम्बंधी कविताओं को लिखने से होने के कारण इस युग को रीतिकाल के नाम से सम्बोधित किया जाता है

प्र.27. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य का अंतर स्पष्ट कीजिए

Ans. रीतिबद्ध काव्य की श्रेणी में वे रचनाएँ अलौकनीय है जिनमे काव्य तत्वों के लक्षण व उदाहरन विद्यमान है। रीतिमुक्त काव्य के अंतर्गत वे रचनाएँ अलौकनीय है जो साहित्यिक रूढ़ियों तथा पात्राओं से मुक्त स्वतंत्र रचना है।

प्र.28. मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म व मृत्यू बताइए

Ans. जन्म - 1550

मृत्यू - 1600

प्र.29. विद्यापति की प्रमुख रचनाएँ बताइए

Ans. कीर्तिकाम्त, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, पदावली, मुन्दिरकमा, वंशी माधुरी

Date ___/___/___

प्र.30. नरपति नाल्ह का जन्म व उनकी प्रमुख रचनाएँ बताइए।
Ans. जन्म - 1212 ई. मे
रचनाएँ - बीसलदेव रासो

प्र.31. कबीर की रचनाएँ लिखिए
Ans. साखी, सबद, रमैनी।

प्र.32. भारतेन्दु युग के दो कवियों के नाम लिखिए
Ans. (i) प्रताप नारायण
(ii) हरिश्चंद

प्र.33. भारतेन्दु युग की विशेषता क्या है?
Ans. भारतेन्दु युग मे भावात्मक कविता लिखी गई है कविता मे राष्ट्रीयता एवं समर्पण आदि निहित है।

प्र.34. मीराबाई का जन्म व मृत्यू कब हुई
Ans. जन्म - 1498 कुकडी ग्राम
मृत्यू - 1547

प्र.35. रामभक्ति शाखा की दो विशेषता बताइए
Ans. (i) लोकमंगल की कल्पना
(ii) महान आदर्श की कल्पना

प्र.36. कृष्ण श्रेणी शाखा के दो प्रमुख कवियो के नाम तथा उनकी एककृति का उल्लेख कीजिए
Ans. सूरदास - सूरसागर
नंददास - भँवरगीत

प्र.37. भक्तिकाल की प्रेममार्गी काव्यधारा की तीन विशेषता बताइए।

Date ___ /___ /______

Ans. (i) लौकिक प्रेम कथा के माध्यम से अलौकिक का चित्रण
(ii) संत कवि सूफी संत है
(iii) भाषा अवधी है।

प्र.38 सूरदास का परिचय लिखिए।

Ans. जन्म - 1475 (रुनकता)
मृत्यु - 1582 (पारसोली)
रचना - सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी
गुरु - आचार्य वल्लभाचार्य

प्र.39. तुलसीदास का परिचय लिखिए

Ans. जन्म : 1532 ई में
मृत्यु : 1582 ई में
रचना : रामचरितमानस, विनय पत्रिका, जानकी मंगल, कृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल

प्र.40. आधुनिक काल के प्रथम युग का क्या नाम है

Ans. भारतेन्दु।

प्र.41 निर्गुण व सगुण धारा की दो समानताओं का उल्लेख कीजिए

Ans. दोनो की भगवान के प्रति अत्यंत भक्ति है।
दोनो ही देशों व आडम्बरों शाखा के कवियों ने प्रबल विरोध किया है

प्र.42 कृष्ण भक्ति शाखा का प्रतिपाद्य विषय क्या है।

Ans. कृष्ण भक्ति शाखा का प्रतिपाद्य विषय कृष्ण की अत्यंत भक्ति, उनके बालपकाल, गोपी विरह तथा रास लीलाओं का वर्णन है

प्र.43. अष्टछाप कवियों के नाम लिखिए

Date __/__/__

Ans. आचार्य वल्लभ के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने वल्लभाचार्य के चार शिष्यों सूरदास, कृष्णदास, कुम्भनदास प्रयासवृद्धि
कुम्भनदास के चार शिष्य गोविंद स्वामी, नंददास, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास अष्टछाप के कवि माने गये है

प्र.44. रीतिमुक्त धारा के सर्वप्रथम कवि का नाम बताइए।
Ans. कवि घनानंद

प्र.45. आधुनिक कविता की तीन विशेषता बताइए।
Ans. (i) खड़ी बोली में काव्य रचना
(ii) राष्ट्र प्रेम
(iii) प्रतीकात्मकता

प्र.46. रीतिबद्ध धारा के प्रमुख कुछ कवियों के नाम लिखिए
Ans. केशवदास, सुरतिमिश्र, श्रीपति, चिंतामणि, भिखारीदास, सोमनाथ आदि

प्र.47. रसखान की किन्हीं तीन रचनाओं के नाम लिखिए
Ans. (i) प्रेमवाटिका (ii) दानलीला (iii) सुजान रसखान

प्र.48. ऐसा किस कवि ने कहा है- "मसि कागज छुयो नाहि कलम गह्यो नहीं हाथ,
Ans. संत कबीरदास ने

प्र.49. कबीर की भाषा कौनसी है?
Ans. सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी।

प्र.50. कबीर की वाणी डिक्टेटर किस आलोचक ने कहा है
Ans. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

Date ___ /___ /______

प्र.51. हिंदी साहित्य के चार काल कौन-कौनसे है

Ans: (i) आदिकाल (ii) भक्तिकाल
(iii) रीतिकाल (iv) आधुनिक काल

प्र.52. नाथ साहित्य के प्रवर्तक कौन है?

Ans: गोरखनाथ, अजयपाल, गोपीचंद, चरपटनाथ

प्र.53. भक्ति आंदोलन का प्रारंभ कहा से हुआ?

Ans: भक्ति आंदोलन का वास्तविक अर्थो में विकास 700 ई पूर्व में दक्षिण से उत्तर भारत तक भक्ति का स्वरूप मिलता है

प्र.54. आदिकाल की प्रमुख अंतधाराएँ प्रवृत्ति लिखिए

Ans: (i) वीररस की प्रधानता
(ii) श्रृंगार रस का पुट
(iii) आश्रदाताओ की प्रशंसा
(iv) राष्ट्रीयकता का भाव

प्र.54. जैन काव्य के प्रवर्तक कौन है

Ans: (i) सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयन
(ii) जगदीश गुप्त
(iii) रामस्वरूप चतुर्वेदी
(iv) विजयदेव नारायण शाही

प्र.56. कंवी माधुरी किसकी रचना है?

Ans: विद्यापति

Date 31/10/2024

अध्याय - 1

सूरदास

जीवन परिचय

जन्म : 1478 ईस्वी

जन्म स्थान : रुनकता, उत्तर प्रदेश

पिता का नाम : रामदास

माता का नाम : जमुनादास

भाषा : ब्रजभाषा, मुक्तक शैली

रस : वात्सल्य, शृंगार रस

उपाधि : वात्सल्य सम्राट सूरदास

मृत्यु : 1583 ई. में

रचना : सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी

पद 1

" ऊधौ अखियाँ अति अनुरागी
जैसे मिले सूर हमको सो
कुछ कहु उपर ।।"

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत अवतरण भक्त कवि 'सूरदास' द्वारा रचित भ्रमरगीत सार से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒
प्रस्तुत पद में गोपियाँ अपने प्रेम को अभिव्यक्त करती हुई ज्ञान छोड़ देने को कहती है।

व्याख्या ⇒
गोपियाँ कहती है की हे उद्धव हमारी आंखे श्रीकृष्ण के प्रति अनुराग से प्रेरित है आध्यात्मक

प्रेम व दर्शन की लालसा के कारण यह खुली रहती है। भूलकर भी पलक नहीं झपकती है। और एकटक होकर उनके आगमन मार्ग को निहारती है। लगातार आंसू की धारा के कारण यहाँ वर्षा ऋतु आ गई है। यह तुम प्रत्यक्ष देख रहे हो अब न जाने तुम यह कहना चाहते हो क्या तुम मेरे प्राण लेना चाहते यदि नहीं तो तुम चर्चा बंद कर दो। सूरदास कहते है की गोपियाँ उद्धव को कहती है की तुम श्यामसुंदर के प्रिय मित्र हो और इनके सभी प्रकार के स्वभाव से परिचित हो अतः उद्धव ऐसा उपाय करो जिससे श्री कृष्ण के दर्शन हो जाए और उनसे हमारा मिलन हो जाए।

विशेष :⇒

(i) गोपियाँ की प्रेम निष्ठता वेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है

(ii) अनुप्रास, अतिशयोक्ति, विभावना अलंकारों का प्रयोग हुआ है

(iii) भाषा भावानुकूल सरल एवं प्रभावपूर्ण है

2\. निरगुण कौन देश को वासी - - - - - - - - - -
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो, सूर सबै मति नासी॥

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पद भक्त कवि सूरदास द्वारा रचित गीत सार से उद्धृत है।

संदर्भ ⇒ उद्धव गोपियों को ज्ञान योग का उपदेश देते हुए निर्गुण निराकार परमात्मा की भक्ति को कहते है । तब गोपियाँ अपने अपने भोलेपन के साथ ही वाकचतुरी (बात करने की चतुरता) से निर्गुण ब्रम्ह की खिल्ली उड़ती है। उद्धव से पूछती है की तुम्हारा निर्गुण ब्रम्ह कौन से देश मे निवास करता है

व्याख्या ⇒ गोपियाँ कहने लगती है की हे उद्धव वह निर्गुण ब्रम्ह किस देश का निवासी है मधुकर हमें समझाकर कहो इसके लिए हम तुम्हे शपथ देती है, यह तुमसे सत्य भाव से पूछ रही है तुम्हारी बात की हँसी नही कर रही है । तुम्हारे द्वारा बताया गया उनके निर्गुण ब्रम्ह का पिता कौन है, इसकी माता कौन है कौन उसकी पत्नी है और कौन उसकी दासी है । उसका रंग केश कैसा है और वह किस रस का अभिलासी है यदि तुम इन प्रश्नों का उत्तर बताने में कोई असत्य बात कहोगे तो अपने किए का फल भोगना पड़ेगा ।

कवि सूरदास कहते है कि गोपियों के इस कथन को सुनकर उद्धव के मन में गए व्यक्ति के समान हो गए और कोई उत्तर नही दे सके इससे उसे ऐसा लगा की प्रेम की रेता में इन सभी गोपियाँ की बुद्धि नष्ट हो गई ।

Date ___/___/_____

विशेष ⇒
गोपियों के माध्यम के सूरदास ने कवि
(i) निर्गुण निराकार शक्ति का खंडन किया है
(ii) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है
(iii) ज्ञान योग का प्रेमभक्ति के लिए अनुप्रयोग किया गया है

3. हमारे हरि हारिल की लकड़ी
यह तो 'सूर' तिन्हें लै दीजै ——————
जिनके मन चकरी ।।

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत पंक्ति कवि सूरदास द्वारा अवतरित है।

संदर्भ ⇒
भक्तिकाल के कृष्ण भक्त कवियों में अच्छाइयों के महत्वपूर्ण कवियों में सूरदास का नाम लिया जाता है। सूरदास श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं से लेकर भ्रमरगीत जैसी रचनाओं में संस्कृति के लुभती है जब श्रीकृष्ण मथुरा चले जाते है तो वहां पर गोपियों की याद में व्यतीत रहते है तब उद्धव श्रीकृष्ण को आश्वस देते है की गोपियों के हृदय से लौकिक प्रेम को हर का आध्यात्मिक की ओर गोपियों का लक्ष्य परिवर्तित कर दूंगा। इस बात के आधार पर श्रीकृष्ण उद्धव को ब्रजप्रदेश भेज देते है ब्रज की गोपियों को उद्धव का आध्यात्मिक प्रेम का ज्ञान पसंद नही आया और इसी के विरोध में गोपियां कहती है।

Date __/__/__

व्याख्या ⇒ गोपियाँ कहती है की उद्धव हमारे लिए श्रीकृष्ण को हारिल पक्षी की लकड़ी की तरह बन चुके है। जिस प्रकार हारिल पक्षी लकड़ी के टुकड़े को नहीं छोड़ता है कैसी भी बाधा मे उसको पकड़े रहता है उसी तरह हमारे ह्रदय में श्रीकृष्ण समाये है श्रीकृष्ण के नाम व प्रेम को कभी भी नहीं छोड़ सकते है मन, वचन क्रम से श्रीकृष्ण को श्रीकृष्ण को ह्रदय मे उनकी तरह पकड़ रखा है। हमारी स्थिति जागते- सोते सपने मे भी कन्या- कन्या पुकारते है। आपकी ये योग की बाते कड़वी ककड़ी के समान लगती है इसलिए हम आपकी ये बाते नहीं मान सकते ऐसी आध्यात्मिकता की बातें न सुनी जा सके न ही देखी जा सके।

सूरदास जी कहते है उद्धव ऐसी बाते उन्ही को पसंद आएगी जो रात- दिन किसी न किसी रूप में स्वार्थ में डुबे रहते है हम तो इसी जीवन में श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और कोई वस्तु की लालसा नहीं है हमारे मन तो केवल श्रीकृष्ण के लौकिक प्रेम की ओर आकर्षित है।

विशेष ⇒

(i) भक्ति का लौकिक रूप प्रस्तुत किया गया है।

(ii) ब्रजभाषा के शब्दो का अधिक प्रयोग किया गया है।

(iii) रूपक, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

Date ___/___/___

उर में माखन चोर पड़े ----------
5. सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

प्रसंग ⇒
प्रस्तुत पद्यांश सूरदास द्वारा रचित है

संदर्भ ⇒
भक्तिकाल के श्रीकृष्ण भक्त कवि सूरदास श्रीकृष्ण की बाल- लीलाओं से लेकर भ्रमरगीत जैसी रचनाओं में संस्कृति को स्पष्ट किया है। जब श्रीकृष्ण मथुरा गए है तो वहाँ पर गोपियाँ की यादों में व्यतीत रहता है तब उद्धव को श्रीकृष्ण को आश्वासन देते है की वे हृदय से लौकिक प्रेम को दूर कर आध्यात्मिक और गोपियाँ का हृदय परिवर्तित कर दूँगा।

व्याख्या ⇒
गोपियाँ उद्धव को कहती है कि हमारे मन में तो माखन चोर श्री कृष्ण अच्छी तरह समाहित हमारे हृदय में श्री कृष्ण को बाहर निकालना असाध्यक है। उद्धव हमारे मन में श्रीकृष्ण अच्छे रूप से पकड़ चुके है हम रात- दिन श्री कृष्ण का जाप करे। आपके अनुसार बताए गए मार्ग का अनुसरण करे तो श्रीकृष्ण हमारे मन मे समाहित है। तुम्हारे यहाँ मथुरा में भी महाकुल है इस महाकुल के सहारे हमारा अस्तित्व बहुत तुच्छ है वसुदेव और उनकी को यहाँ कोई नही पहचानता। नंद बाबा

यशोदा के पुत्र के पहचाने जाते है। इसलिए उद्धव हमें जरासी बात का दुख नही है। श्रीकृष्ण हमारे से मिलने नही आते है। श्रीकृष्ण तो ह्रदय में बसे हुए है। सूरदास जी कहते है की गोपियो को भी श्रीकृष्ण की सुंदर छवि के बिना और कुछ भी दिखाई नही देता है।

विशेष :> (i) अनुप्रास अलंकारो का प्रयोग हुआ है
(ii) कृष्ण की बाल- लीलाओ का वर्णन किया गया है
(iii) ब्रजभाषा, व मुक्तक छंद विद्यमान है।

1. सूरदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के सगुण कवि माने जाते है सूरदास की भक्तिभावना का एक विस्तृत लेख लिखिए

अथवा

भक्ति भावना को समझाइए

अथवा

भ्रमरगीत काव्य परंपरा से आप क्या समझते है सूरदा भ्रमरगीत काव्य के बारे में विस्तृत विवेचना कीजिए

उ. सूरदास भक्तिकाल के सगुण काव्य के कृष्ण भक्ति के कवि है अष्टछाप कवियो में इनका प्रमुख स्थान था। वल्लभाचार्य को शिष्य परंपरा में इनका नाम अग्रणी आता है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ ⇒ सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी के नाम से प्रकाशित हुई थी

इनके प्रतिनिधि काव्य में भगवान श्रीकृष्ण की बाल- लीला, रूप माधुरी, संयोग, वियोग का समावेश और भक्ति में तथा भ्रमण गीत जैसे प्रयोगों को समाहित किया गया है

इनके काव्य में वात्सल्य और श्रृंगार की प्रमुखता दिखाई देती है सूरदास बालपकाल की लीलाओं को बने मनोरम ढंग से प्रकट करते थे। और गोपियों के यौवन काल के दशाओं का भी भिन्न - भिन्न प्रकार से चित्रित किया है।

इनकी रचनाएँ मुक्त काव्य की श्रेणी आती है गीति काव्य और सूरदास के पदों में गेयता दिखाई देती है। निर्गुण खण्डन करना व सगुण की स्थापना भी इनकी एक सकल काव्य धारा रही है हिंदी साहित्य में सूरदास सूर्य की भाँति माने जाते है जिस प्रकार सूर्य चारों तरफ प्रकाश फैला रहता है उसी प्रकार सूरदास के पदों ने हिंदी साहित्य में प्रकाश फैला हुआ है

सूरदास के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ चित्रित की जा सकती है-

1| संयोग वियोग का समन्वय
2| लीला परख सगुण भक्त में विश्वास
3| सरस व वात्सल्य श्रृंगार
4| श्रृंगार भाव का प्रमुख स्थान
5| प्रकृति चित्रण
6| गेय मुक्तक काव्य
7| सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब

Date ___/___/___

संयोग वियोग का समन्वय :→

1) वियोग भ्रमर गीत जैसी में कवि ने वियोग श्रृंगार का प्रयोग किया है जितना प्रभावशाली संयोग काल को बताया गया उससे अधिक वियोग कालीन काव्य प्रभाव दिखाई देता है। उनका बाल काल और माता यशोदा नंद बाबा का श्रीकृष्ण के प्रति लगाव, गोप ग्वालों का भी श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम था अनोखी प्रतिभा को परिलक्षित करता है।

लीला परख भक्त में विश्वास :⇒

2) कृष्ण भक्ति के कवि सूरदास नवभावों की अभिवेदना करते हैं माधुर्य भावना की उपासना अधिक की गई है। अपने आराध्य के साक्षात आत्म निवेदन किया गया है आप प्रकाशित सगुण कवियों में भी श्रीकृष्ण के अवतार को माना है उनके विभिन्न लीला कथों में विश्वास करते हैं भक्ति-भावना को चित्रित किया गया है।

3) सरस व वात्सल्य श्रृंगार :⇒

सूरदास के काव्य में राधा और संयोग और वियोग में कोई अन्य कवि दिखाई देता है। इनके काव्य में भक्ति रति दोनों ही भाव प्रमुखता से प्रकट हुआ है वैसे भी श्रीकृष्ण भक्त साहित्य का स्थाई भाव रति माना गया है

4) श्रृंगार भाव का प्रमुख स्थान →

सूरदास के काव्य में राधा और संयोग वियोग को श्रृंगारिक भाव के माध्यम

से सरल सहज अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। ऐसे भावो की जितनी अभिव्यक्ति कृष्ण भक्त कवियो ने की है और उतनी ही अन्य कवियो ने की है।

5। प्रकृति चित्रण ⇒

सूरदास के काव्य मे प्रेम के साथ प्रकृति प्रेम समावेश है। जिस प्रकार कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन प्रकृति से जुड़ा है। वैसे ही सूरदास अपनी रचनाओं मे प्राकृतिक सौंदर्य को महत्व देते है। प्रकृति का आलंबन और उद्दीपन रूप बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से चित्रण किया गया है।

6। गेयमुक्तक काव्य का रूप :→

श्रीकृष्ण के जितने भी भक्त कवि हुए है उनकी रचनाएँ गेयता प्रदान रही है। और काव्य का मुक्तक रूप भी श्रीकृष्ण के भक्त कवियों का प्रमुख विषय रहा है। सूरदास ने भी शैली को अपनाते हुए अपनी रचनाएँ की।

7। सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब ⇒

तत्कालीन काव्य मे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का स्वरूप दिखाई देता है ब्रज मथुरा वह श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बंधित सामाजिक व सांस्कृतिक रूप को कवि ने चित्रित किया है। और हमारे सोलह संस्कारो के तरह ही उस समय के संस्कारो को सूरदास ने चित्रित किया है